DRAFT

National Education Policy- 2020- 2024

Common Minimum Syllabus for Uttarakhand State Universities and Colleges

Four Year Undergraduate Programme-

FYUP/Honours Programme/Master in Arts

PROPOSED STRUCTURE FOR FYUP/MASTER'S SANSKRIT SYLLABUS

DEPARTMENT OF SANSKRIT

DRAFT
National Education
Policy-2020 & 2024
Common Minimum Syllabus for all Uttarakhand State Universities and Colleges for five Years of Higher Education
PROPOSED STRUCTURE OF UG &PG SANSKRIT SYLLABUS
2024

Syllabus Preparation, checked and modified by:

External Experts Name				
S.N.	**Name**	**Designation**	**Department**	**Affiliation**
1.	DR. SOMVEER SINGHAL Mob. 9910286703 Meeting- 18,19 December- 2024	ASSOCIATE PROFESSOR	SANSKRIT, UNIVERSITY OF DELHI	UNIVERSITY OF DELHI
2.	PROF. GIRISH CHANDRA PANT Mob- 9717652577 Meeting- 27 March- 2025	PROFESSOR	SANSKRIT, JAMIYA MILLIYA SLAMIYA UNIVERSITY, DELHI	JAMIYA MILLIYA SLAMIYA UNIVERSITY, DELHI
3.	PROF. C. UPENDER RAO Mob- 9818969756 Meeting- 25 April- 2025, 2,3 MAY-2025	PROFESSOR	SANSKRIT, J.N.U. NEW DELHI	J.N.U. NEW DELH
4.	PROF. RAJNISH MISHRA Mob- 9910066499 Meeting- 25 April- 2025, 2,3 MAY-2025	PROFESSOR	SANSKRIT, J.N.U. NEW DELHI	J.N.U. NEW DELH

S.N.	**Name**	**Designation**	**Department**	**Affiliation**
1.	PROF. JAYA TIWARI	PROFESSOR	CONVINER OF SANSKRIT	D.S.B. CAMPUS KUMAUN UNIVERSITY, NAINITAL
2.	PROF. SHALIMA TABASSUM	PROFESSOR	CONVINER OF SANSKRIT	SOBAN SINGH JEENA, ALMORA UNIVERSITY
3.	PROF. KAMALA PANT	PROFESSOR	H.O.D. SANSKRIT	MBPG COLLEGE HALDWANI
4.	PROF. POONAM PATHAK	PROFESSOR	CONVINER OF SANSKRIT	SHRIDEV SUMANA UNIVERSITY, RISHIKESH
5.	DR. MAYA SHUKLA	ASSOCIATE PROFESSOR	H.O.D. SANSKRIT	P.G. COLLEGE, RAMGARH
6.	DR. LAJJA BHATT	ASSOCIATE PROFESSOR	SANSKRIT	D.S.B. CAMPUS KUMAUN UNIVERSITY, NAINITAL
7.	DR. NEETA ARYA	ASSISTANT PROFESSOR	SANSKRIT	D.S.B. CAMPUS KUMAUN UNIVERSITY, NAINITAL
8.	DR. NEERAJ JOSHI	ASSISTANT PROFESSOR	SANSKRIT	UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY, HALDWANI
9.	DR. PRADEEP KUMAR	ASSISTANT PROFESSOR (CONTRECET)	SANSKRIT	D.S.B. CAMPUS KUMAUN UNIVERSITY, NAINITAL
10.	DR. SHUSHMA JOSHI	ASSISTANT PROFESSOR (CONTRECET)	SANSKRIT	D.S.B. CAMPUS KUMAUN UNIVERSITY, NAINITAL

Discipline Specific Course

(DSC)

DEPARTMENT OF SANSKRIT

बहुविषयक अध्ययन पाठ्यक्रमों हेतु स्नातक / स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की रूपरेखा एवं प्रारूप(संस्कृत विषयक पाठ्यक्रम)

Department of Sanskrit D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital

Flowchart Depicting the structure of UG&PG Multidisciplinary Program (with three Core Disciplines)

Under Graduate Certificates

Year	Semster	Course code	Paper Title in multi study –Sanskrit	credits
Undergraduate Certificate in Multidisciplinary Study-SANSKRIT				
First Year	I	DSC 1	संस्कृत नीतिसाहित्य एवं व्याकरण	**4**
	II	DSC 2	संस्कृतमहाकाव्य,छन्दोऽलंकार एवं नाटक	**4**
UndergraduateDiploma in Multidisciplinary Study-SANSKRIT				
Second Year	III	DSC 3	संस्कृतसाहित्य, भारतीयसंस्कृति एवं व्याकरण	**4**
	IV	DSC 4	संस्कृतसाहित्य,साहित्यकार परिचय एवं निबन्ध	**4**
Bachelor of in Multidisciplinary Study-SANSKRIT				
Third Year	V	DSC 5	काव्यशास्त्र, दर्शन एवं व्याकरण	**4**
	VI	DSC 6	वैदिकवाङ्मय का अध्ययन	**4**

PG in the core subject-Sanskrit

Post Graduate

Year	Semster	Course code	Paper Title in multi study –Sanskrit	Credits
PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT				
Fourth Year	VII	DSC 7	वैदिक साहित्य	**4**
	VIII	DSC 8	काव्य एवं भारतीयसंस्कृति	**4**
Year	**Semster**	**Course code**	**Paper Title in multi study–Sanskrit**	**credits**
Master's in Core Subject- SANSKRIT				
Fifth Year	IX	DSC 9	काव्यशास्त्र भाग– 01	**4**
	X	DSC 10	काव्यशास्त्र भाग– 02	**4**

Undergraduate Certificate in Multidisciplinary Study-SANSKRIT			
Programme: ***Certificate Course in Sanskrit***		**Year: I**	**Semester:I Paper-I**
Subject: Sanskrit			
Course Code: SAN-DSC101	**Course Title: संस्कृत नीतिसाहित्य एवं व्याकरण**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी संस्कृत नीतिसाहित्य से परिचित हो सकेंगे।
2. संस्कृत नीतिसाहित्य की सुगीतात्मकता का सौंदर्यबोध कर सकेंगे।
3. नीतिसाहित्य में प्रयुक्त नैतिकशिक्षा का बोध कर सकेंगे।
4. संस्कृत व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगे।
5. संस्कृत वर्णों के शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास होगा।
6. स्वर एवं व्यंजन के मूल भेद को समझ कर पृथक् अर्थावगमन की क्षमता उत्पन्न होगी।
7. स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग संधि का विशिष्ट ज्ञान एवं उनके अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा।

Credits: 4अनुशासन विशिष्ट कोर्स	**Core Compulsory- DSC1 Discipline Specific Course**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks: 09+25=34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 36

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	नीतिशतकम्– (प्रारम्भ की पाँच पद्धतियॉ)–संस्कृत नीतिसाहित्य का परिचय, भर्तृहरि का जीवनवृत्त एवं नीतिसाहित्य का योगदान, मूर्ख पद्धति, विद्वत्पद्धति, मान–शौर्य–पद्धति, अर्थपद्धति, दुर्जनपद्धति के प्रत्येक पांच–पांच श्लोकों का अर्थ एवं व्याकरणात्मक टिप्पणी।	15
Unit II	हितोपदेश–मित्रलाभ (प्रारम्भिक दो कथायें)–नीतिकथाओं का विकास एवं महत्त्व, श्रीनारायणपण्डित का जीवनवृत्त एवं कृतियों का परिचय, हितोपदेश की प्रथम दो कथाओं का सारांश (वृद्धव्याघ्रपथिकयोः कथा एवं मृगजम्बुकयोः कथा), अनुवाद एवं व्याकरणात्मक टिप्पणी।	15
Unit III	व्याकरण– संज्ञाप्रकरणम्–माहेश्वरसूत्राणि, लघुसिद्धान्तकौमुदी के संज्ञाप्रकरण से सूत्र संख्या– 1/3/3, 1/1/60, 1/3/9, 1/1/71, 1/2/27, 1/2/29, 1/2/30, 1/2/31, 1/1/8, 1/1/9, 1/1/69, 1/4/109, 1/1/7 एवं 1/4/14।	15
Unit IV	व्याकरण– शब्दरूप लेखन मात्र– राम, रमा, हरि, नदी, गुरु, अस्मद् एवं युष्मद्। धातुरूप– पठ्, गम्, भू, कृ, लिख्– पाँचों लकारों में लेखन मात्र– लट्, लृट्, लोट्, लङ् एवं विधिलिङ्।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 **Total- 60**

Suggested Reading:

1. नीतिशतकम्, जनार्दन शास्त्री पाण्डेय, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली।
2. नीतिशतकम्,मनोरमा हिन्दी व्याख्या सहित, ओमप्रकाश पाण्डेय, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

3. हितोपदेश– सम्पादक डॉ0 प्रभुनाथ द्विवेदी, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. हितोपदेश (मित्रलाभ)–डॉ0 कविता गौतम, युवराज प्रकाशन, आगरा।
5. हितोपदेश सं0 जीवानन्द विद्यासागर, कलकत्ता।
6. भर्तृहरिविरचितमनीतिशतकम्, व्याख्याता डॉ0 सुनीता जायसवाल, साहित्य सहचर वाराणसी।2002।
7. भर्तृहरिविरचितम् नीतिशतकम्, बाबूराम त्रिपाठी (सम्पादक), महालक्ष्मी प्रकाशन,आगरा।
8. लघुसिद्धान्तकौमुदी– श्री वरदराजाचार्यकृत–'ललिता'– संस्कृत– हिन्दी टीकोपेता– डॉ0 कौशलकिशोरपाण्डेय–चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
9. लघुसिद्धान्तकौमुदी– श्री वरदराजाचार्यकृत– व्याख्याकार श्री धरानन्दशास्त्री– चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

Undergraduate Certificate in Multidisciplinary Study-SANSKRIT

Programme: *Certificate Course in Sanskrit*	**Year: I**	**Semester:II Paper-I**

Subject: Sanskrit

Course Code: SAN-DSC102	**Course Title: संस्कृतमहाकाव्य, छन्दोऽलंकार एवं नाटक**

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे।
2. संस्कृत महाकाव्य के अध्ययन से उनमें निहित महान् चरित्रों का अध्ययन कर आत्मसात् करेंगे।
3. विद्यार्थी संस्कृत महाकाव्य मे प्रयुक्त रस, छन्द, अलंकारों को समझने की क्षमता प्राप्त करेंगे।
4. संस्कृत महाकाव्यों में निहित सूक्तिों एवं सुभाषित वाक्यों के माध्यम से विद्यार्थियों का नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन होंगा।
5. संस्कृत नाटक के अध्ययन से विद्यार्थी संस्कृत नाट्य साहित्य को सामान्य रूप से समझने में सक्षम होंगे।
6. नाटक की पारिभाषिक शब्दावली से सुपरिचित होंगे तथा संवाद एवं अभिनय कौशल में पारंगत होंगे।

Credits: 4	**अनुशासन विशिष्ट कोर्स**	**Core Compulsory- DSC2 Discipline Specific Course**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100		**Min. Passing Marks: 09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	रघुवंशम्–कालिदासकृत, द्वितीय सर्ग– 01 से 50 श्लोक पर्यन्त– सस्कृत महाकाव्य का सामान्य परिचय, महाकवि कालिदास का परिचय, रचनाएं, रघुवंशपरिचय, श्लोकों की व्याख्या, काव्यगत विशेषताएं एवं समीक्षात्मक प्रश्न।	15
Unit II	छन्द परिचय–लक्षण एवं उदाहरण–अनुष्टुप्, आर्या, इन्द्रवज्रा, वंशस्थ, बसन्ततिलका, शिखरिणी, शादूर्लविक्रीडित, मालिनी, भुजङ्गप्रयात एवं मन्दाक्रान्ता। अलंकार परिचय–लक्षण एवं उदाहरण–अनुप्रास, श्लेष, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक, विभावना, विशेषोक्ति, अतिशयोक्ति।	15
Unit III	अभिज्ञानशाकुन्तलम्–कालिदासकृत, चौथा अंक–श्लोकों की व्याख्या, टिप्पणी एवं समीक्षात्मक प्रश्न।	15
Unit IV	नाट्यसाहित्य का सामान्य परिचय एवं नाट्यशास्त्रीय पारिभाषिक शब्दावली (दशरूपक के आधार पर)– नान्दी, प्रस्तावना, सूत्रधार, आकाशभाषित, विष्कम्भक, प्रवेशक, जनान्तिक, अपवारित, स्वगतकथन, एवं भरतवाक्य।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 **Total- 60**

Suggested Reading:

1. रघुवंशम् महाकाव्यम्– सम्पा0 महावीर शास्त्री– प्रकाशन साहित्यभण्डार,सुभाष बाजार ,मेरठ–250002।
2– छन्दोऽलंकार ज्ञान– डॉ0 किरण टण्डन।
3– अलंकारशास्त्र का इतिहास– डॉ0 कृष्ण कुमार।
4– वृत्तरत्नाकर– पं0 केदारभट्ट– व्याख्या प0 बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
5– साहित्यदर्पण– नवम्–दशम परिच्छेद।

6– छन्दोऽलंकार परिचय– डॉ0 लज्जा भट्ट, लक्ष्मी प्रकाशन।
7–छन्द एवं अलंकार ज्ञान– डॉ0 शालिमा तबस्सुम, ज्ञानोदय प्रकाशन, नैनीताल।
8– अभिज्ञानशाकुन्तलम्– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, साहित्य संस्थान इलाहाबाद।
9– अभिज्ञानशाकुन्तल एक विश्लेषण– डॉ0 देवीदत्त शर्मा।
10– संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, ज्ञान प्रकाशन भदौही।
11– संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ0 बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
12– महाकवि कालिदास– रमाशंकर तिवारी।
13– संस्कृत नाटक– ए.बी. कीथ।
14– संस्कृत नाटक– रामजी उपाध्याय।

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

UndergraduateDiploma in Multidisciplinary Study-SANSKRIT

Programme: *Diploma Course in Sanskrit*	**Year: II**	**Semester:III Paper-I**

Subject: Sanskrit

Course Code: SAN-DSC103	**Course Title: संस्कृतसाहित्य, भारतीयसंस्कृति एवं व्याकरण**

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य रचनाओं से परिचित हो सकेंगे।
2. भारतीय संस्कृति के अध्ययन से विद्यार्थी संस्कृति की विशेषताओं से परिचित होंगे जिससे उनका नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष होंगा।
3. भारतीय सास्कृतिक तत्त्वों एवं मूल्यों को आत्मसात् कर भारतीयता के गर्व बोध से युक्त उत्तम नागरिक बनेगें।
4. संस्कृत व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगे।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट कोर्स	**Core Compulsory- DSC3 Discipline Specific Course**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks: 09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	किरातार्जुनीयम्– प्रथम सर्ग–01 से 50 श्लोक पर्यन्त– महाकाव्य का परिचय, कवि परिचय, श्लोकों की व्याख्या, टिप्पणी एवं समीक्षात्मक प्रश्न।	10
Unit II	शिवराजविजयम्– प्रथम विराम से प्रथम निःश्वास, ग्रन्थ परिचय, कवि परिचय, व्याख्या, टिप्पणी एवं समीक्षात्मक प्रश्न।	10
Unit III	भारतीय संस्कृति– भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ, पंच महायज्ञ, संस्कार, पुरुषार्थ चतुष्ट्य, वर्णाश्रम व्यवस्था एवं शिक्षा व्यवस्था।	10
Unit IV	सन्धि प्रकरणम्–(लघुसिद्धान्तकौमुदी से) अच् सन्धि (सूत्रव्याख्या एवं सूत्र निर्देशपूर्वक सन्धि एवं सन्धि विग्रह)। हल् सन्धि (सूत्रव्याख्या एवं सूत्र निर्देशपूर्वक सन्धि एवं सन्धि विग्रह)। विसर्ग सन्धि (सूत्रव्याख्या एवं सूत्र निर्देशपूर्वक सन्धि एवं सन्धि विग्रह)।	15
Unit V	कारक प्रकरण, लघुसिद्धान्तकौमुदी से– सूत्रसंख्या– 2/3/46, 2/3/47, 1/4/49, 2/3/2, 1/4/51, 1/4/54, 1/4/42, 2/3/18, 1/4/32, 2/3/13, 2/3/16, 1/4/24, 2/3/28, 2/3/50, 1/4/45 एवं 2/3/36 सूत्रों की व्याख्या एवं उदाहरण।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 **Total- 60**

Suggested Reading:

1–किरातार्जुनीयम् (भारविकृत्)– जनार्दन शास्त्री पाण्डेय, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिकेशन, दिल्ली।
2– शिवराजविजयः (अम्बिकादत्त व्यास) प्रथम विराम – डॉ0 रमाशंकर मिश्र।
3– भारतीय संस्कृति– डॉ0 किरन टण्डन, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, नई दिल्ली।
4– भारतीय संस्कृति का इतिहास– डॉ0 नरेन्द्र देव सिंह शास्त्री।

5– भारतीय संस्कृति–	डॉ0 इन्दुमती मिश्र।
6– आधुनिक गद्यसाहित्य का इतिहास–	कलानाथ शास्त्री।
7– लघुसिद्धान्तकौमुदी (समास प्रकरण)–	डॉ0 सुरेन्द्र देव शास्त्री।
8– लघुसिद्धान्तकौमदी (समास प्रकरण)–	श्री धरानन्द शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती, बनारस।
9– शिवराजविजय–	डॉ0 बाबूरामत्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा।
10– लघुसिद्धान्तकौमुदी–	महेश सिंह कुशवाहा।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

UndergraduateDiploma in Multidisciplinary Study-SANSKRIT			
Programme: ***Diploma Course in Sanskrit***		**Year: II**	**Semester:IV Paper-I**
	Subject: Sanskrit		
Course Code:SAN- DSC104	**Course Title: संस्कृतसाहित्य, साहित्यकार परिचय एवं निबन्ध**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर पद्यसाहित्य एवं गद्यसाहित्य से सुपरिचित हो सकेंगे।
2. सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से पद्यसाहित्य की सुगीतात्मकता का सौन्दर्य बोध कर सकेंगे।
3. सम्बन्धित साहित्य के माध्यम से उनका नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष होगा।
4. प्राचीन एवं अर्वाचीन संस्कृत साहित्यकारों के अध्ययन से प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे।
5. विद्यार्थियों में निबन्ध एवं अनुच्छेद लेखन क्षमता को विकास होगा।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट कोर्स	**Core Compulsory- DSC 4 Discipline Specific Course**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks:09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	शिशुपालवधम्–प्रथम सर्ग–01 से 50 श्लोक पर्यन्त– संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त परिचय, महाकाव्य का संक्षिप्त परिचय, शिशुपालवधम् के सर्गों का संक्षिप्त परिचय, कृतिकार का परिचय, श्लोकों की व्याख्या, टिप्पणी एवं समीक्षात्मक प्रश्न।	15
Unit II	शुकनासोपदेश– गद्यसाहित्य का परिचय, कादम्बरी का संक्षिप्त परिचय, गद्यकार परिचय, शुकनासोपदेश के अनुच्छेदों की व्याख्या, टिप्पणी एवं समीक्षात्मक प्रश्न।	10
Unit III	प्राचीन सस्कृत साहित्यकारों का परिचय एवं संस्कृत साहित्य में उनका योगदान यथा– वाल्मीकि, व्यास, भास, कालिदास, भवभूति, शूद्रक, बाणभट्ट, दण्डी, हर्षदेव, श्रीहर्ष।	10
Unit IV	अर्वाचीन संस्कृत साहित्यकारों का परिचय एवं संस्कृत साहित्य में उनका योगदान यथा–पण्डित अम्बिकादत्त व्यास, पण्डिता क्षमाराव, आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय, विद्याभूषण श्रीकृष्ण चन्द्र जोशी, लोकरत्न पन्त– गुमानी।	10
Unit V	निबन्ध लेखन : संस्कृत भाषा में – संस्कृतभाषा, विद्या, उद्योगः, परोपकारः, स्त्रीशिक्षा, अहिंसा, सत्संगतिः, पर्यावरणम् , उत्तराखण्ड।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1– शिशुपालवधम्– डॉ0 बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा।
2– कादम्बरी : शुकनासोपदेश

3– संस्कृत साहित्य का इतिहास– कपिलदेव द्विवेदी, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी।
4– संस्कृत साहित्य का इतिहास– आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
5– आधुनिक संस्कृत साहित्य– डॉ0 हीरालाल शुक्ल।
6– संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास– राधाबल्लभ त्रिपाठी विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
7– आधुनिक संस्कृत साहित्य सन्दर्भ सूची– राधावल्लभ त्रिपाठी राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली।
8– आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा– मंजू लता शर्मा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली।
9– संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास– सप्तम खण्ड आधुनिक खण्ड, उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, उत्तर प्रदेश।
10. संस्कृतनिबन्धसुधा– डॉ0 राधेश्याम गंगवार, वैदिक पुस्तकालय समिति, देहरादून –2013।

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

Bachelor of in Multidisciplinary Study-Sanskrit			
Programme: Bachelor*Course inSanskrit*		**Year: III**	**Semester:V Paper-I**
	Subject: Sanskrit		
Course Code: SAN-DSC105	**Course Title: काव्यशास्त्र, दर्शन एवं व्याकरण**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी काव्यशास्त्र के उद्भव और विकास से सुपरिचित होकर काव्यशास्त्रीय तत्त्वों को समझने में सक्षम होंगे।
2. भारतीय दार्शनिक तत्त्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।
3. दार्शनिक तत्त्वों के प्रति विश्लेषणात्मक एवं तार्किक क्षमता का विकास होगा।
4. व्याकरणशास्त्र के ज्ञान के माध्यम से शुद्ध वाक्य विन्यास कौशल का विकास हो सकेंगा।

Credits: 4अनुशासन विशिष्ट कोर्स	**Core Compulsory- DSC 5 Discipline Specific Course**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks: 09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	साहित्यदर्पण का संक्षिप्त परिचय, आचार्य विश्वनाथ का परिचय, षष्ठः परिच्छेदः– काव्य के अन्यनिमित्तक भेद : दृश्य काव्य, कारिका 1 से 19 कारिका पर्यन्त–कारिकाओं का अर्थ एवं टिप्पणी।	15
Unit II	साहित्यदर्पणः– षष्ठः परिच्छेदः– श्रव्य काव्य, कारिका 313 से 337 कारिका पर्यन्त– कारिकाओं का अर्थ, टिप्पणी एवं समीक्षात्मक प्रश्न।	12
Unit III	तर्कसंग्रह, अन्नंभट्ट, प्रारम्भ से प्रत्यक्ष प्रमाण पर्यन्त– ग्रन्थ का परिचय, रचनाकार का परिचय, व्याख्या, टिप्पणी एवं समीक्षात्मक प्रश्न।	14
Unit IV	तर्कसंग्रह, अन्नंभट्ट, अनुमान प्रमाण से समाप्ति पर्यन्त– व्याख्या, टिप्पणी एवं समीक्षात्मक प्रश्न।	12
Unit V	व्याकरण– प्रत्यय (कृदन्त) तव्यत्, अनीयर्, ण्वुल्, तृच्, क्त्, क्तवतु, क्तिन्, तुमुन् एवं घञ्। (लघुसिद्धान्तकौमुदी)– प्रत्यय परिचय, सूत्रों की व्याख्या, एवं उदाहरण।	12
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	65 10 Total- 75

Suggested Reading:

1. काव्यालंकार– शिवनारायण शास्त्री, परिमल प्रकाशन।
2. साहित्यदर्पण– प्रो0 सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
3. तर्कसंग्रह (अन्नम् भट्ट)– डॉ0 चन्द्रशेखर द्विवेदी।
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी– कृदन्त प्रकरण– महेश सिंह कुशवाहा।
5. लघुसिद्धान्तकौमुदी– श्री धरानन्द शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती, बनारस।
6. लघुसिद्धान्तकौमुदी– डॉ0 सुरेन्द्र देव शास्त्री।

7. लघुसिद्धान्तकौमुदी– वरदराज, भैमी व्याख्या, भीमसेन शास्त्री (1–6 भाग)।
8. लघुसिद्धान्तकौमुदी– गोविंद प्रसाद शर्मा एवं आचार्य रघुनाथ शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
9. लघुसिद्धान्तकौमुदी– डॉ0 उमेश चन्द्र पाण्डे, चौखम्बा प्रकाशन।
10. कृदन्त प्रकरणम्– डॉ0 लज्जा भट्ट– राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
11. काव्यदीपिका– कान्ति चन्द्र भाट्टाचार्य– मोती लाल बनारसी दास।

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

Bachelor of in Multidisciplinary Study –SANSKRIT			
Programme: Bachelor of *in Arts- Sanskrit*		**Year: III**	**Semester:VI Paper-I**
Subject: Sanskrit			
Course Code: SAN-DSC106	**Course Title:वैदिकवाङ्मय का अध्ययन**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. वैदिकवाङ्मयसंस्कृत की समृद्ध परम्परा को समझनेमें पर्याप्त सहायक होगा।
2. वेदोक्त संदेशों एवं मूल्यों के माध्यम से आचरण का उदात्तीकरण होगा।
3. वैदिक सूक्तों के माध्यम से विद्यार्थी को तत्कालीन अध्यात्म, समाज एवं राष्ट्र का दिग्दर्शन होगा।
4. वेदाङ्ग के सम्यक्बोधसे सर्वकल्याणार्थ उनका उपयोग करेगें।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट कोर्स	**Core Compulsory- DSC 6 Discipline Specific Course**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks: 09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	वेद– ऋग्वेद– अग्निसूक्त– 1/1, विष्णुसूक्त– 1/154, पुरुषसूक्त– 10/90, वैदिकसाहित्य का संक्षिप्त परिचय, महत्त्व, सूक्तों का संक्षिप्त परिचय, व्याख्या एवं टिप्पणी।	15
Unit II	यजुर्वेद– शिवसंकल्पसूक्त– सूक्त का संक्षिप्त परिचय, व्याख्या एवं टिप्पणी।	12
Unit III	अथर्ववेद– पृथिवीसूक्त (द्वादशकाण्ड) 1 से 10 मन्त्र पर्यन्त– सूक्त का संक्षिप्त परिचय, व्याख्या एवं टिप्पणी।	12
Unit IV	वेद, ब्राह्मण एवं आरण्यक ग्रन्थ परिचय– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का सामान्य परिचय, ब्राह्मण एवं आरण्यक का सामान्य परिचय एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इनकी प्रासङ्गिकता।	14
Unit V	वेदाङ्ग–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द एवं निरुक्त का सामान्य परिचय एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इनकी प्रासङ्गिकता।	12
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	65 10 Total- 75

Suggested Reading:

1– वैदिक सूक्त चयनिका– डॉ0 किरण टण्डन, डॉ0 जया तिवारी, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी ।
2–ऋक्सूक्त मञ्जूषा– प्रो0 महावीर अग्रवाल, सत्यप्रकाशन, नई दिल्ली।
3– वैदिक सूक्त संकलन– विजय शंकर पाण्डे।
4– वैदिक सूक्त संग्रह– अयोध्या प्रसाद सिंह।
5– वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ0 कर्णसिंह,साहित्य भण्डार मेरठ–2013।
6– वैदिक साहित्य और संस्कृति – डॉ0 ओम प्रकाश पाण्डे।

7– शिवसंकल्पसूत्रम्– संस्कृत हिन्दी टीका सहित–	डॉ0 त्रिलोकी नाथ द्विवेदी, चौखम्बा साहित्य प्रकाशन, वाराणसी।
8–न्यूवैदिक सलेक्शन–	भाग–1, 2 सम्पादक–ब्रजविहारी चौबे (तैलंग एवं चौबे)

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT			
Programme: *PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit*		**Year: IV**	**Semester: VII Paper-I**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSC107	**Course Title: वैदिक साहित्य**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. वेद, वैदिकसंहिता, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यकग्रन्थ, उपनिषद्,वेदाङ्ग एवं वैदिकसाहित्य की पृष्ठभूमि में रचित ग्रन्थों से सुपरिचित होंगे।
2. वैदिक सूक्तों के महत्त्व से सुपरिचित होंगे।
3. वैदिक साहित्य के माध्यम से नैतिक एवं राष्ट्रिय भावना से अभिभूत होंगे।
4. वैदिक वाङ्गमय एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट कोर्स	**Core Compulsory- DSC 7- Discipline Specific Course**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks: 09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic- वेद से निम्नलिखित सूक्त–	No. of Lectures
Unit I	इन्द्र–2/12, सूर्य– 1/115, अग्नि– 1/143	10
Unit II	उषस्– 3/61, पुरुष सूक्त– 10/90	10
Unit III	नासदीय– 10/129, हिरण्यगर्भ– 10/121 विश्वामित्र–नदी संवाद–3/33	10
Unit IV	यजुर्वेद– योगक्षेम–22/22, अथर्ववेद–राष्ट्राभिवर्धन–1/29	10
Unit V	वैदिक साहित्य का इतिहास	15
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	05
		Total- 60

Suggested Reading:

1. द न्यू वैदिक सलेक्शनभाग– 01 तथा भाग–02– सम्पादक– ब्रजबिहारी चौबे (तैलंग एवं चौबे)
2. ऋक्सूक्त संग्रह– डॉ0 हरिदत्त शास्त्री एवं डॉ0 कृष्णकुमार–प्रकाशन– साहित्य भण्डार सुभाष बाजार मेरठ– 250002
3. Hymns of the Rigvdea- Peterson
4. वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ0 कृष्णकुमार ,साहित्य भण्डार मेरठ।
5. वैदिक साहित्य का इतिहास– गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर एवं पं0 राजेश्वर (राजू) केशवशास्त्री मुसलगाँवकर प्रकाशन– चौखम्बा संस्कृत, वाराणसी
6. वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ0कर्णसिंह,साहित्य भण्डार मेरठ।
7. वैदिक साहित्य का इतिहास– वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान,दिल्ली।
8. ऋक् सूक्त मंजूषा– प्रो0 महावीर अग्रवाल, सत्यं प्रकाशन, नई दिल्ली

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester:VIII Paper-I**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSC108	**Course Title: काव्य एवं भारतीय संस्कृति**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. कालिदासकृत मेघदूत में प्रकृति चित्रण से सुपरिचित होंगे।
2. कवि परम्परा में कालिदास के महत्त्व से सुपरिचित हो सकेंगे।
3. श्रीहर्ष के जीवनवृत्त एवं परिचय को जान सकेंगे।
4. नल एवं दमयन्ती का एक दूसरे के गुणों से सुपरिचित होंगे।
5. भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषताओं से सुपरिचित होंगे।

Credits: 4	**अनुशासन विशिष्ट कोर्स**	**Core Compulsory- DSC 8 Discipline Specific Course**
Max. Marks:25 (Internel)+ 75 (External)=100		**Min. Passing Marks:09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	मेघदूतम्–कालिदासकृत (पूर्वमेघ)	13
Unit II	मेघदूतम्–कालिदासकृत (उत्तरमेघ)	10
Unit III	नैषधीयचरितम्– श्रीहर्षप्रणीत, (प्रथम सर्ग) 1–35 श्लोक	12
Unit IV	नैषधीयचरितम्– श्रीहर्षप्रणीत, (प्रथम सर्ग) 100–145 श्लोक	10
Unit V	भारतीय संस्कृति– सभ्यता एवं संस्कृति की परिभाषा एवं स्वरूप, भारतीयसंस्कृति की मुख्य विशेषताएँ, वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, संस्कार, प्राचीन भारत में नारी, प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली एवं शिक्षण संस्थान।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. मेघदूतम्– संसार चन्द्र
2. मेघदूतम्– डॉ0 शिवराज शास्त्री
3. मेघदूतम् में प्रकृति एवं श्रृङ्गार– प्रो0 शालिमा तबस्सुम, अभिषेक, प्रकाशन, दिल्ली।
4. नैषधीयमहाकाव्यम्– हरगोविन्द शास्त्री
5. नैषधमहाकाव्य– डॉ0 शिवराज शास्त्री
6. नैषधपरिशीलन– चण्डिका प्रसाद शुक्ल
7. भारतीय संस्कृति का इतिहास– डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार
8. भारतीय संस्कृति– नरेन्द्रदेव शास्त्री
9. भारतीय संस्कृति के आधारतत्व– कृष्णकुमार

10. हमारी प्राचीन संस्कृति– डॉ0 सत्यप्रकाश शास्त्री
11. नैषधीयचरितम्– सुरेन्द्र देव शास्त्री, गोकुल दास संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme: Master In*Sanskrit*	**Year: V**	**Semester:IX Paper-I**
Subject: Sanskrit		
CourseCode: SAN-DSC109	**Course Title: काव्यशास्त्र– भाग–01**	

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. काव्यशास्त्र के स्वरूप एवं लक्षण से सुपरिचित होंगे।
2. काव्यशास्त्र की अवधारणा का ज्ञान हो सकेगा।
3. काव्यशास्त्र में काव्यसौन्दर्य के आधायक जिन गुण, रीति, अलंकार, ध्वनि आदि तत्त्वों से सुपरिचित होंगे।
4. काव्यशास्त्र की परम्परा से अवगत हो सकेंगे।
5. विद्यार्थी काव्यशास्त्र के उद्‌भव और विकास से सुपरिचित होकर काव्यशास्त्रीय तत्त्वों को समझने में सक्षम होंगे।

Credits: 4	अनुशासन विशिष्ट कोर्स	**Core Compulsory- DSC 9 Discipline Specific Course**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन/ 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30=40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	काव्यशास्त्र का प्रादुर्भाव, काव्यशास्त्र के आचार्य एवं सम्प्रदाय परिचय।	10
Unit II	ध्वन्यालोक– प्रथम उद्योत 1–8 कारिका पर्यन्त (लोचन सम्मत व्याख्यान)।	13
Unit III	ध्वन्यालोक– प्रथम उद्योत 9–19 कारिका पर्यन्त (लोचन सम्मत व्याख्यान)।	10
Unit IV	वक्रोक्तिजीवितम्– प्रथमोन्मेष– प्रारम्भ से पदपदार्थवक्रता पर्यन्त।	12
Unit V	वक्रोक्तिजीवितम्– प्रथमोन्मेष– वाक्य वक्रता से समाप्ति पर्यन्त।	10
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	05
		Total- 60

Suggested Reading:

1. काव्यप्रकाश– आचार्य विश्वेश्वर,ज्ञानमण्डल वाराणसी।
2. काव्यप्रकाश– वामन झलकीकर, चौखम्बा संस्कृत पगतिष्ठान,दिल्ली।
3. काव्यप्रकाश– श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार मेरठ।
4. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास– पी0 वी0 काणे,मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी।
5. ध्वन्यालोक– व्याख्याकार– आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।
6. काव्यशास्त्रीय सिद्धान्त– डॉ0 लज्जा भट्ट, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
7. आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र– डॉ0 आनन्द श्रीवास्तव, ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली।
8. ध्वन्यालोक (लोचन टीका सहित)– व्याख्याकार– जगन्नाथ पाठक, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
9. वक्रोक्तिजीवितम्– डॉ0 वेदप्रकाश डिंडोरिया, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली।
10. ध्वन्यालोक– व्याख्याकार– रमासागर त्रिपाठी, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली।

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme: Master In *Sanskrit*	**Year: V**	**Semester: X Paper-I**
Subject: Sanskrit		
Course Code: SAN-DSC110	**Course Title:काव्यशास्त्र– भाग– 02**	

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. काव्यशास्त्र के स्वरूप एवं लक्षण से सुपरिचित होंगे।
2. काव्यशास्त्र की अवधारणा का ज्ञान हो सकेगा।
3. काव्यशास्त्र में काव्यसौन्दर्य के आधायक जिन गुण, रीति, अलंकार, ध्वनि आदि तत्त्वों से सुपरिचित होंगे।
4. काव्यशास्त्र की परम्परा से अवगत हो सकेंगे।
5. विद्यार्थी काव्यशास्त्र के उद्भव और विकास से सुपरिचित होकर काव्यशास्त्रीय तत्त्वों को समझने में सक्षम होंगे।

Credits:4 अनुशासन विशिष्ट कोर्स	**Core Compulsory- DSC 10 Discipline Specific Course**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन/ 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	काव्यप्रकाश–आचार्य मम्मट, प्रथम तथा द्वितीय उल्लास।	10
Unit II	काव्यप्रकाश–आचार्य मम्मट, तृतीय एवं चतुर्थ उल्लास रस पर्यन्त।	10
Unit III	काव्यप्रकाश– आचार्य मम्मट, अष्टम उल्लास।	10
Unit IV	काव्यप्रकाश– आचार्य मम्मट, नवम उल्लास– वक्रोक्ति, अनुप्रास, श्लेष, यमक, दशम उल्लास– उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक।	10
Unit V	काव्यप्रकाश– आचार्य मम्मट, दशम उल्लास– निदर्शना, अपह्नुति, विभावना, विशेषोक्ति ,व्यतिरेक, दृष्टान्त और तुल्ययोगिता।	15
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55
		Total- 60

Suggested Reading:

1. काव्यप्रकाश– आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल वाराणसी।
2. काव्यप्रकाश– वामन झलकीकर, चौखम्बा संस्कृत पगतिष्ठान, दिल्ली।
3. काव्यप्रकाश– श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार मेरठ।
4. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास– पी0 वी0 काणे, मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी।
5. भारतीय काव्यशास्त्रीय सिद्धान्त– प्रो0 हरिनारायण दीक्षित एवं प्रो0 किरण टण्डन, ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली।
6. काव्यशास्त्रीय सिद्धान्त– डॉ0 लज्जा भट्ट।
7. आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र– डॉ0 आनन्द श्रीवास्तव, ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects

----------0----------

Discipline Specific Electives

(DSE)

DEPARTMENT OF SANSKRIT

बहुविषयक अध्ययन पाठ्यक्रमों हेतु स्नातक / स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की रूपरेखा एवं प्रारूप(संस्कृत विषयक पाठ्यक्रम)				
Department of Sanskrit D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital Flowchart Depicting the structure of UG&PG Multidisciplinary Program (with three Core Disciplines) **Under Graduate Certificates**				
Year	**Semster**	**Course code**	**Paper Title in multi study –Sanskrit**	**credits**
UndergraduateDiploma in Multidisciplinary Study-SANSKRIT				
Second Year	III	DSE 1	उपनिषद् एवं पुराण	**4**
	IV	DSE-2	स्मृति एवं स्तोत्रकाव्य	**4**
Bachelor of in Multidisciplinary Study-SANSKRIT				
Third Year	V	DSE 3	भारतीय दर्शन	**4**
	VI	DSE 4	उपनिषद् साहित्य	**4**

PG in the core subject-Sanskrit **Post Graduate**					
Year	**Semster**	**Course code**		**Paper Title in multi study –Sanskrit**	**Credits**
PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT					
Fourth Year	VII	Group I	DSE 5	संस्कृतरूपक	**4**
			DSE 6	सांख्य एवं न्यायदर्शन	**4**
			DSE7	व्याकरण, पालि एवं प्राकृत **अथवा** संस्कृत शोधप्रविधि	**4**
		अथवा			
		Group II	DSE 5	संस्कृतरूपक	**4**
			DSE 6	सांख्य एवं न्यायदर्शन	**4**
		अथवा			
		Group III	DSE 5	संस्कृतरूपक	**4**
	VIII	Group I	DSE 8	वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)	**4**
			DSE 9	व्याकरणदर्शन एवं भाषाविज्ञान	**4**
			DSE10	मीमांसा एवंवेदान्त	**4**
		अथवा			
		Group II	DSE 8	वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)	**4**
			DSC 9	व्याकरणदर्शन एवं भाषाविज्ञान	**4**
		अथवा			
		Group III	DSE 8	वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)	**4**

Year	Semster	Course code		Paper Title in multi study–Sanskrit	credits
Master's in Core Subject- SANSKRIT					
Fifth Year	IX	Group I	DSE 11	साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र भाग–01	**4**
			DSE 12	व्याकरण–महाभाष्य, सिद्धिप्रक्रिया एवं सूत्र व्याख्या	**4**
			DSE13	गद्य एवं ऐतिहासिक काव्य	**4**
		अथवा			
		Group II	DSE 11	साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र भाग–01	**4**
			DSE 12	व्याकरण–महाभाष्य, सिद्धिप्रक्रिया एवं सूत्र व्याख्या	**4**
		अथवा			
		Group III	DSE 11	साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र भाग–01	**4**
	X	Group I	DSE 14	साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र भाग– 02	**4**
			DSE 15	संस्कृत प्रकरण, चम्पूकाव्य एवं निबन्ध	**4**
			DSE16	अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्य एवं साहित्यकार	**4**
		अथवा			
		Group II	DSE 14	साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र भाग– 02	**4**
			DSE 15	संस्कृत प्रकरण, चम्पूकाव्य एवं निबन्ध	**4**
		अथवा			
		Group III	DSE 14	साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र भाग– 02	**4**

UndergraduateDiploma in Multidisciplinary Study-SANSKRIT			
Programme: ***Diploma Course in Sanskrit***		**Year: II**	**Semester: III Paper-II**
	Subject: Sanskrit		
Course Code: SAN-DSE101	**Course Title: उपनिषद् एवं पुराण**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. उपनिषद् का सामान्य परिचय एवं संख्या का अवबोध होगा।
2. उपनिषद् में वर्णित ज्ञान, कर्म एवं उपासना को समझ सकेगें।
3. पुराणों के परिचय से सृष्टि,सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना से परिचित होंगे।
3. पुराणों के अण्ययन से के परिचय से कल्याण परक तथ्यों से परिचित होकर आत्मोत्कर्ष की अभिप्रेरणा प्राप्त होगी।
4. स्तोत्रकाव्य के रहस्य द्वारा सृष्टि कल्याणार्थ भाव विकसित होंगे।

Credits: 4अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 1 Discipline Specific Electives**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks: 10+30=40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	उपनिषदों का सामान्य परिचय– उपनिषद् का अर्थ, उपनिषदों की संख्या, उपनिषदों का प्रतिपाद्य विषय एवं महत्त्व।	10
Unit II	कठोपनिषद् : प्रथम अध्याय– प्रथमवल्ली – कठोपनिषद् का संक्षिप्त परिचय, महत्त्व, मन्त्रों की व्याख्या, टिप्पणी एवं समीक्षात्मक प्रश्न।	15
Unit III	कठोपनिषद् : प्रथम अध्याय– द्वितीयवल्ली– मन्त्रों की व्याख्या, टिप्पणी एवं समीक्षात्मक प्रश्न।	10
Unit IV	प्रमुख पुराणों का सामान्य परिचय– ब्रह्म पुराण, पद्म पुराण एवं महत्त्व।	10
Unit V	विष्णु पुराण, अग्नि पुराण, श्रीमद्भागवद् पुराण परिचय एवं महत्त्व।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1– कठोपनिषद्– सुरेन्द्र देव शास्त्री, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी।
2– पुराण विमर्श– पण्डित बलदेव उपाध्याय, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।
3– श्रीमद्भागवद् पुराण– गीता प्रेस, गोरखपुर।
4– वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ0 कर्णसिंह।,, साहित्य भण्डार मेरठ।
5– पुराण तत्त्व मीमांसा– डॉ0 श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा साहित्य, वाराणसी।
6– श्रीमद्भागवतम्– सम्पा0 रामतेज पाण्डेय शास्त्री, चौखम्बा साहित्य, वाराणसी।
7– विष्णु पुराण– व्यासकृत, सम्पादक– डॉ0 राजेन्द्र लाल, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली।
8– भागवतपुराण का सांस्कृतिक अध्ययन– लक्ष्मीशंकर उपाध्याय–साहित्य सहचर वाराणसी।

9– पुराणपर्यालोचन– समीक्षात्मक भाग, कृष्णमणि त्रिपठी, वाराणसी चौखम्बा, सुरभारतीय प्रकाशन 1975।

10– पुराणपर्यालोचन– गवेषणात्मक भाग, कृष्णमणि त्रिपाठी, वाराणसी चौखम्बा, सुरभारतीय प्रकाशन 1975।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

UndergraduateDiploma in Multidisciplinary Study-SANSKRIT			
Programme: ***Diploma Course in Sanskrit***		**Year: II**	**Semester: IV Paper-II**
	Subject: Sanskrit		
Course Code: SAN-DSE102	**Course Title: स्मृति एवं स्तोत्रकाव्य**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी संस्कृत साहित्य की निधि से परिचित होंगे।
2. स्मृतिकाव्य का परिचय प्राप्त कर वेद में निहित ज्ञान को सहजता से समझ सकेंगे।
3. स्मृतिकाव्य के प्रतिपाद्यों से अवगत हो कर अपने जीवन को संस्कारित करने में सक्षम होंगे।
4. स्मृतिकाव्य के अध्ययन से आश्रम व्यवस्था, राजनीति एवं दायभाग के महत्व को समझ सकेंगे।
5. स्तोत्रकाव्य के अध्ययन से ज्ञानप्रद एवं आध्यात्मिक भावनाओं का विकास होगा।

Credits: 4	**अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक**	**DSE 2 Discipline Specific Electives**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100		**Min. Passing Marks: 10+30=40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	स्मृति का अर्थ, स्मृतिकाव्य का उद्भव एवं विकास, प्रमुखस्मृतिकार एवं स्मृतिग्रन्थ प्रतिपाद्य।	10
Unit II	मनुस्मृति– सप्तम अध्याय वर्ण्यविषय एवं महत्त्व।	15
Unit III	याज्ञवल्क्य स्मृति व्यवहाराध्याय वर्ण्यविषय एवं महत्त्व।	15
Unit IV	स्तोत्र का अर्थ एवं स्तोत्रकाव्य का परिचयएवं द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रम् का अर्थ एवं महत्त्व।	10
Unit V	गङ्गाष्टकम् (श्रीमहर्षि–वाल्मीकिविरचित) स्तोत्र का अर्थ एवं महत्त्व।	05
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास–वाचस्पति गौरोला– चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी।
2. स्तोत्ररत्नावली– गीताप्रेस गोरखपुर।
3. मनुस्मृति–कुल्लुकभट्टकृत– हिन्दी अनुवाद सहित सम्पादक– राजवीर शास्त्री दिल्ली, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट 1985 वाराणसी चौखम्बा विद्याभवन।
4. याज्ञवल्क्यस्मृति– विज्ञानेश्वर प्रणीत मिताक्षर टीका, उमेश चन्द्र कृत हिन्दी व्याख्या सहित, वाराणसी चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
5. मनुस्मृति– श्री गणेश दत्त पाठक– श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, वारणसी।
6. मनुस्मृति– उर्मिला रस्तोगी– जे0पी0 पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
7. संस्कृत वाङमय का बृहद् इतिहास– तृतीय खण्ड, पद्मविभूषण बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
8. प्राचीन भारतीय संस्कृति के मूलतत्व– डॉ0 श्रीभगवान शर्मा, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा।
9. बृहत्–स्तोत्र–रत्नोकरः – सम्पादकः पण्डित पुनीत मिश्र,प्रकाशक रुपेश ठाकुर प्रसादप्रकाशन, कचौडी गली,वाराणसी–221001।

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

Bachelor of in Multidisciplinary Study-SANSKRIT			
Programme: Bachelor *Course inSanskrit*		**Year: III**	**Semester: V** **Paper-II**
	Subject: Sanskrit		
Course Code: SAN-DSE103	**Course Title: भारतीय दर्शन**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी दर्शन का अर्थ भारतीय परिपेक्ष्य में समझ सकेंगे।
2. आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों की परिभाषा एवं ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी दर्शन के मौलिक सिद्धान्तों से सुपरिचित हो सकेंगे।
4. विद्यार्थी दर्शन के माध्यम से संपूर्ण ब्रह्माण्ड एवं मानव जीवन के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

Credits: 4	अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 3 Discipline Specific Electives**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100		**Min. Passing Marks: 09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	आस्तिक दर्शनों का सामान्य परिचय।	10
Unit II	आस्तिक दर्शनों में आत्मा एवं परमात्मा (ईश्वर), कार्यकारणवाद।	10
Unit III	आस्तिक दर्शनों में मोक्ष, कर्म एवं पुर्नजन्म, प्रमाण।	12
Unit IV	नास्तिक दर्शनों का सामान्य परिचय।	10
Unit V	बौद्ध– (आर्यसत्य, अष्टांगिंक मार्ग, प्रतिसमुत्पादवाद,) जैन– (स्याद्वाद एवं अनेकान्तवाद)।	13
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. भारतीय दर्शन– आचार्य बलदेव उपाध्याय, वाराणसी शारदा मन्दिर 1971।
2. दर्शन और जीवन– सम्पूर्णानन्द, परिपूर्णानन्द वर्मा कानपुर– 1941।
3. दर्शन का प्रयोजन– डॉ0 भगवान दास, बनारस ज्ञान मण्डल लिमिटेड द्वितीय संस्करण।
4. दर्शन दिग्दर्शन– राहुल सांकृत्यायन, किताब महल इलाहाबाद।
5. भारतीय दर्शन का अनुमान– डॉ0 ब्रजनारायण शर्मा।
6. भारतीय दर्शन : विशद विवेचन– डॉ0 गीता शुक्ला– युवराज पब्लिकेशन, आगरा।
7. भारतीय दर्शन का इतिहास– एस0के0 दास।
8. भारतीय दर्शन– डॉ0 उमेश मिश्र, लखनऊ हिन्दी समीति ग्रन्थमाला।
9. भारतीय दर्शन– चन्द्रधर शर्मा, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।

10. भारतीय दर्शन की रूपरेखा– हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।
11.बौद्धधर्म दर्शन– आचार्य नरेन्द्र देव, पटना बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् 1971।
12. चार्वाक दर्शन– आचार्य आनन्द झा, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ 1969।
13.जैन धर्मदर्शन–एक अनुशीलन– डॉ0 राजेन्द्र मुनि, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
14. भारतीय दर्शन में भाषा तत्त्व– डॉ0 सोमवीर, परिमल प्रकाशन, दिल्ली।

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:
अन्य सभी विभाग एवं संकाय

Bachelor of in Multidisciplinary Study-SANSKRIT			
Programme: Bachelor of *in Arts- Sanskrit*		**Year: III**	**Semester: VI Paper-II**
	Subject: Sanskrit		
Course Code: SAN-DSE104	**Course Title: उपनिषद् साहित्य**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी उपनिषद् का अर्थ समझ सकेंगे।
2. उपनिषदों की दार्शनिक पृष्ठभूमि से परिचित हो सकेंगे।
3. उपनिषदों में प्राप्त होने वाली नैतिक शिक्षा से अवगत होंगे।
4. विद्यार्थी उपनिषद् ज्ञान के माध्यम से संपूर्ण ब्रह्माण्ड एवं मानव जीवन के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

Credits: 4	अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 4 Discipline Specific Electives**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100		**Min. Passing Marks: 09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	प्रमुख ग्यारह उपनिषदों का सामान्य परिचय।	10
Unit II	ईशोपनिषद्।	13
Unit III	तैत्तिरीयोपनिषद् (शिक्षावल्ली)।	10
Unit IV	तैत्तिरीयोपनिषद् (भृगुवल्ली)।	10
Unit V	केन उपनिषद्।	12
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. उपनिषदों का सामान्य परिचय– डॉ0 वेदवती वैदिक।
2. तैत्तिरीयोपनिषद्– गीता प्रेस गोरखपुर।
3. केन उपनिषद्– गीता प्रेस गोरखपुर।

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:
अन्य सभी विभाग एवं संकाय

Group- I

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VII** **Paper-II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE105	**Course Title: संस्कृतरूपक**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. सस्कृत रूपक एवं साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर रूपकों के भेदों से सुपरिचित हो सकेंगे।
2. रूपक साहित्य एवं साहित्यकारों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष को समझ पायेंगे।
3. रूपक साहित्य के ज्ञान से कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होगा।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 5 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30=40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	उत्तररामचरितम्– भवभूति– प्रथम से तृतीय अंक पर्यन्त।	10
Unit II	उत्तररामचरितम्– भवभूति– चतुर्थ से समाप्ति पर्यन्त।	10
Unit III	रत्नावली– हर्षदेवकृत– सम्पूर्ण।	10
Unit VI	सम्बन्धित ग्रन्थों का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन।	10
Unit V	संस्कृत रूपककार परिचय–निम्नांकित के संदर्भ में–भास, कालिदास, हर्ष, भवभूति, शूद्रक, विशाखदत्त, भट्ट नारायण।	15
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. उत्तररामचरितम्– पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
2. उत्तररामचरितम्– कृष्णकान्त शुक्ल एवं ब्रह्मानन्द शुक्ल।
3. उत्तररामचरितम् की शास्त्रीय समीक्षा– डॉ0 सत्यनारायण चौधरी।
4. भवभूति एवं उनकी नाट्यकला– डॉ0 अयोध्याप्रसाद सिंह।
5. संस्कृतकविसमीक्षा– अमर नाथ पाण्डेय, चौखम्बा ओरिएन्टल, वाराणसी।
6. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य संस्थान, 37 कचेहरी मार्ग इलाहाबाद।
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास– पद्मविभूषण डॉ0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
8. संस्कृत काव्यकार– डॉ0 हरिदत्त शास्त्री।
9. रत्नावली– हर्षदेवकृत–व्याख्याकार एवं सम्पादक डॉ0 शिवप्रसाद शास्त्री, मेरठ साहित्य भण्डार 1994।

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VII** **Paper-III**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE106	**Course Title:सांख्य एवं न्यायदर्शन**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. भारतीय दार्शनिक तत्त्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।
2. सांख्य दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों को जानकर प्रमेय पदार्थो से परिचित होंगे।
3. न्यायशास्त्र के प्राचीन एवं वैज्ञानिक ज्ञान से लाभान्वित होंगे।
4. न्यायदर्शन से प्राचीन एवं आधुनिक न्याय व्यवस्था से परिचित होंगे।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 6 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30=40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	सांख्य एवं न्यायदर्शन परम्परा एवं सांख्यकारिका–ईश्वर कृष्ण कृत (01–35 वीं कारिका पर्यन्त)	10
Unit II	सांख्यकारिका–ईश्वर कृष्ण कृत (36–72वीं कारिका पर्यन्त)	10
Unit III	तर्कभाषा–प्रारम्भ से प्रत्यक्ष पर्यन्त।	10
Unit IV	तर्कभाषा–अनुमान से प्रामाण्यवाद पर्यन्त।	10
Unit V	तर्कभाषा–प्रमेय निरूपण।	15
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. सांख्यकारिका– ढुण्ढिराज शास्त्री।
2. सांख्यकारिका– डॉ0 रमाशंकर तिवारी।
3. सांख्यकारिका– जगन्नाथ शास्त्री।
4. सांख्यकारिका– डॉ0 रामकृष्ण आचार्य।
5. तर्कभाषा– आचार्य विश्वेश्वर पाण्डे, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
6. तर्कभाषा– श्रीनिवास शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी।
7. तर्कभाषा– आचार्य बद्रीनाथ शुक्ल।
8. भारतीय दर्शन– उमेश मिश्र, लखनऊ हिन्दी समिति ग्रन्थमाला।
9. Indian Philosophy– S.Das Gupta।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VII** **Paper-IV**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE107	**Course Title: व्याकरण, पालि एवं प्राकृत**		
Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि 1. व्याकरण अध्ययन से विद्यार्थी उच्चारण कौशल में निपुण होंगे। 2. संस्कृत व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित होंगे। 3. कारक एवं समास का विशिष्ट ज्ञान एवं उनके अनुपयोग का कौशल विकसित होगा।			
Credits: 4	**अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक**	**DSE 7 Discipline Specific Electives**	
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30=40**	
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी–कारक प्रकरण–कर्त्ता, कर्म एवं करण।	10
Unit II	वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी–कारक प्रकरण–सम्प्रदान, अपादान, एवं अधिकरण।	10
Unit III	समास प्रकरण–लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर।	10
Unit VI	पालीभाषा परिचय एवं धम्मपद–दशवग्गपर्यन्त (व्याख्या–टिप्पणी)।	15
Unit V	प्राकृत भाषा उद्गम–विकास एवं ग्रन्थपरिचय।	10
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	05
		Total- 60

Suggested Reading:

1. सिद्धान्त कौमुदी– भट्टोजिदीक्षित, व्याख्याकार– श्री गोपालदत्त पाण्डेय।
2. एम0 ए0 संस्कृत व्याकरण– श्रीनिवास शास्त्री।
3. धम्मपद– सम्पादक, कन्छेदीलाल गुप्त।
4. पालि साहित्य का इतिहास– डॉ0 भरतसिंह उपाध्याय।
5. लघुसिद्धान्तकौमुदी– श्रीधरानन्द शास्त्री,चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी।
6. तिङन्त प्रकरणम्– डॉ0 लज्जा भट्ट
7. अभिनव प्राकृत प्रकाश– नेमिचन्द्र शास्त्री
8. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी,विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VII** **Paper-IV**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE107	**Course Title: संस्कृत शोधप्रविधि**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1– विद्यार्थी शोधप्रविधि के अध्ययन से शोध के क्षेत्र में प्रवेश करेगें।

2– विद्यार्थी किसी भी विषय को लेकर शोधकार्य कर सकेगें।

3– शोधकार्य में किसी भी प्रविधि के माध्यम से शोधकायग को पूर्ण करने में सफल होगें।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 7 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30=40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	शोध का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप।	10
Unit II	शोध के प्रकार एवं शोध के मुख्यतत्त्व एवं महत्त्व।	10
Unit III	शोधप्रविधि की परिभाषा, प्रकार एवं महत्त्व।	10
Unit VI	शोधप्रविधि का निर्धारण एवं विशेषाताऐं	10
Unit V	साहित्यिक शोधः अर्थ स्वरूप, तत्त्व,पद्धतियॉ एवं उद्देश्य।	15
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1– रिसर्च मैथ्योलॉजी– डॉ0 आर0एन0 त्रिवेदी, डॉ0 डी0पी0 शुक्ला।

2– रिसर्च मैथ्योलॉजी– डॉ0 बी0 एम0 जैन।

3– शोधप्रविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।

4– अनुसन्धान का स्वरूप सम्पादिका– डॉ0 सावित्री सिन्हा,हिन्दी अनुसन्धान परिषद्,दिल्ली वि0वि0 आत्माराम एंड संस प्रकाशन।

5– अनुसन्धान की प्रक्रिया– डॉ0 सावित्री सिन्हा,डॉ0 विजयेन्द्र स्नातक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस ,दिल्ली।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

Group- II

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VII** **Paper-II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE105	**Course Title:संस्कृतरूपक**		
Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि 1. सस्कृत रूपक एवं साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर रूपकों के भेदों से सुपरिचित हो सकेंगे। 2. रूपक साहित्य एवं साहित्यकारों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष को समझ पायेंगे। 3. रूपक साहित्य के ज्ञान से कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होगा।			
Credits: 4	**अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक**		**DSE 5 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)			**Min. Passing Marks: 10+30=40**
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	उत्तररामचरितम्– भवभूति– प्रथम से तृतीय अंक पर्यन्त।	10
Unit II	उत्तररामचरितम्– भवभूति– चतुर्थ से समाप्ति पर्यन्त।	10
Unit III	रत्नावली– हर्षदेवकृत– सम्पूर्ण।	10
Unit VI	सम्बन्धित ग्रन्थों का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन।	10
Unit V	संस्कृत रूपककार परिचय–निम्नांकित के संदर्भ में–भास, कालिदास, हर्ष, भवभूति, शूद्रक, विशाखदत्त, भट्ट नारायण।	15
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. उत्तररामचरितम्– पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
2. उत्तररामचरितम्– कृष्णकान्त शुक्ल एवं ब्रह्मानन्द शुक्ल।
3. उत्तररामचरितम् की शास्त्रीय समीक्षा– डॉ0 सत्यनारायण चौधरी।
4. भवभूति एवं उनकी नाट्यकला– डॉ0 अयोध्याप्रसाद सिंह।
5. संस्कृतकविसमीक्षा– अमर नाथ पाण्डेय, चौखम्बा ओरिएन्टल, वाराणसी।
6. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य संस्थान, 37 कचेहरी मार्ग इलाहाबाद।
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास– पद्मविभूषण डॉ0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
8. संस्कृत काव्यकार– डॉ0 हरिदत्त शास्त्री।
9. रत्नावली– हर्षदेवकृत–व्याख्याकार एवं सम्पादक डॉ0 शिवप्रसाद शास्त्री, मेरठ साहित्य भण्डार 1994।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VII** **Paper-III**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE106	**Course Title: सांख्य एवं न्यायदर्शन**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. भारतीय दार्शनिक तत्त्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।
2. सांख्य दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों को जानकर प्रमेय पदार्थो से परिचित होंगे।
3. न्यायशास्त्र के प्राचीन एवं वैज्ञानिक ज्ञान से लाभान्वित होंगे।
4. न्यायदर्शन से प्राचीन एवं आधुनिक न्याय व्यवस्था से परिचित होंगे।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 6 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30=40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	सांख्यकारिका–ईश्वर कृष्ण कृत (01–35 वीं कारिका पर्यन्त)	13
Unit II	सांख्यकारिका–ईश्वर कृष्ण कृत (36–72 वीं कारिका पर्यन्त)	10
Unit III	तर्कभाषा–प्रारम्भ से प्रत्यक्ष पर्यन्त।	12
Unit IV	तर्कभाषा–अनुमान से प्रामाण्यवाद पर्यनत।	10
Unit V	तर्कभाषा–प्रमेय निरूपण, सांख्य एवं न्यायदर्शन का इतिहास।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

Suggested Reading:

1. सांख्यकारिका– ढुण्ढिराज शास्त्री।
2. सांख्यकारिका– डॉ0 रमाशंकर तिवारी।
3. सांख्यकारिका– जगन्नाथ शास्त्री।
4. सांख्यकारिका– डॉ0 रामकृष्ण आचार्य।
5. तर्कभाषा– आचार्य विश्वेश्वर पाण्डे, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
6. तर्कभाषा– श्रीनिवास शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी।
7. तर्कभाषा– आचार्य बद्रीनाथ शुक्ल।
8. भारतीय दर्शन– उमेश मिश्र, लखनऊ हिन्दी समिति ग्रन्थमाला।
9. Indian Philosophy– S.Das Gupta ।

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

Group- III

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VII** **Paper-II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE105	**Course Title:संस्कृतरूपक**		
Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि 1. सस्कृत रूपक एवं साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर रूपकों के भेदों से सुपरिचित हो सकेंगे। 2. रूपक साहित्य एवं साहित्यकारों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष को समझ पायेंगे। 3. रूपक साहित्य के ज्ञान से कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होगा।			
Credits: 4	**अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक**		**DSE 5 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)			**Min. Passing Marks: 10+30=40**
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	उत्तररामचरितम्– भवभूति– प्रथम से तृतीय अंक पर्यन्त।	10
Unit II	उत्तररामचरितम्– भवभूति– चतुर्थ से समाप्ति पर्यन्त।	10
Unit III	रत्नावली– हर्षदेवकृत– सम्पूर्ण।	10
Unit VI	सम्बन्धित ग्रन्थों का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन।	10
Unit V	संस्कृत रूपककार परिचय–निम्नांकित के संदर्भ में–भास, कालिदास, हर्ष, भवभूति, शूद्रक, विशाखदत्त, भट्ट नारायण।	15
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. उत्तररामचरितम्– पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
2. उत्तररामचरितम्– कृष्णकान्त शुक्ल एवं ब्रह्मानन्द शुक्ल।
3. उत्तररामचरितम् की शास्त्रीय समीक्षा– डॉ0 सत्यनारायण चौधरी।
4. भवभूति एवं उनकी नाट्यकला– डॉ0 अयोध्याप्रसाद सिंह।
5. संस्कृतकविसमीक्षा– अमर नाथ पाण्डेय, चौखम्बा ओरिएन्टल, वाराणसी।
6. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य संस्थान, 37 कचेहरी मार्ग इलाहाबाद।
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास– पद्मविभूषण डॉ0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
8. संस्कृत काव्यकार– डॉ0 हरिदत्त शास्त्री।
9. रत्नावली– हर्षदेवकृत–व्याख्याकार एवं सम्पादक डॉ0 शिवप्रसाद शास्त्री, मेरठ साहित्य भण्डार 1994।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

Group- I

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme: *PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit*	**Year: IV**	**Semester:VIII Paper-II**
Subject: Sanskrit		
CourseCode: SAN-DSE108	**Course Title: वेदाङ्ग (निरुक्त, ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)**	
Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि 1. शिक्षा एवं व्याकरण शास्त्रों के पारिभाषिक पदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। 2. व्याकरण ग्रन्थों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे। 3. शिक्षा का वेदाड्.ग में स्थान एवं वेदों में उपयोगिता को जान सकेंगे। 4. पाणिनीय–शिक्षा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे। 5. ऋक्प्रातिशाख्य से परिचय एवं महत्त्व से अवगत होगें।		
Credits: 4	**अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक**	**DSE 8 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक–4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30=40**	
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0		

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	निरुक्त– अध्याय 1–2, पदों का चतुर्विध विभाजन एवं लक्षण, षड्भाव विकार, शब्द नित्यत्वानित्यत्वविचार, उपसर्गों के द्योतकत्व, वाचकत्व का सिद्धान्त, निपात की कोटियॉ, निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन, मन्त्रों की अर्थवत्ता, निर्वचन के सिद्धान्त एवं अधिकारी निरूपण।	15
Unit II	निर्ववचन– निघण्टु , आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक् , रात्रि, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर। अध्याय सात– त्रिविधा ऋचः, अनादिष्टदैवत मन्त्र, छन्दांसि, पृथिवी स्थानीय देवता वर्णन।	10
Unit III	पाणिनीय शिक्षा– 1–30 कारिकाऍ।	10
Unit IV	पाणिनीय शिक्षा– 31 से अन्त तक कारिकाऍ।	10
Unit V	ऋक्प्रातिशाख्यः परिभाषाएँ– समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. न्यू वैदिक सलेक्शन–भाग 1 एवं 2–वाराणसी भारतीय विद्या प्रकाशन।
2. हिन्दी निरुक्त–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
3. प्रातिशाख्यों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ0 इन्द्रा ,वाराणसी।
4. पाणिनीय शिक्षा–रुद्रप्रसाद अवस्थी।
5. पाणिनीय शिक्षा–प्रो0 श्रीनारायण मिश्र।
6. वैदिक साहित्य का इतिहास–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।

7. यास्ककृत निरुक्त– सम्पादक–उमाशंकर ऋषि।
8. ऋक्प्रातिशाख्य–एक परिशीलन–डॉ0 वीरेन्द्र कुमार वर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शोध संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VIII** **Paper- III**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE109	**Course Title:वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. वाक्यपदीय में भर्तृहरि के भाषा (वाच्) की प्रकृति और उसका वाह्य जगत से सम्बन्ध की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. वाक्यपदीय में दार्शनिक रीतियों के विषयों जैसे–जाति, द्रव्य, काल आदि से सुपरिचित होंगे।
3. भाषाविज्ञान के स्वरूप, उद्गम एवं विकास से सुपरिचित होगे।
4. ध्वनि विज्ञान, वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 9 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	वाक्यपदीयम्– भर्तृहरि, 1–75 कारिकाएँ।	10
Unit II	वाक्यपदीयम्– भर्तृहरि, 76–156 कारिकाएँ।	10
Unit III	भाषाविज्ञान का परिचय, भाषा वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं परिवारमूलक) अवेस्ता, वैदिक एवं लौकिक संस्कृत।	15
Unit IV	ध्वनि विज्ञान (नियम, दिशाएँ एवं कारण) पद विज्ञान।	10
Unit V	वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान (दिशाएँ एवं कारण)।	10
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	05
		Total- 60

Suggested Reading:

1. वाक्यपदीयम्– भर्तृहरि
2. अभिनव प्राकृत प्रकाश– नेमिचन्द्र शास्त्री
3. संस्कृत भाषा विज्ञान– राजकिशोर सिंह
4. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी , विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. भाषा विज्ञान– डॉ0 भोलानाथ तिवारी– इलाहाबाद किताब महल
6. भाषा विज्ञान– डॉ0 कर्णसिंह– साहित्य भण्डार सुभाष बाजार मेरठ

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VIII** **Paper- IV**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE110	**Course Title: मीमांसा एवंवेदान्त**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी वेद–वेदांग आदि सभी शास्त्रों से सुपरिचित होगे।
2. वेदान्त दर्शन का ऐतिहासिक स्वरूप से सुपरिचित होंगे।
3. दर्शनशास्त्र के इतिहास के माध्यम से सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदान्त से सुपरिचित होंगे।
4. दर्शनशास्त्र के आधार पर आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन से सुपरिचित होंगे।

Credits: 4	**अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक**	**DSE 10 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	अर्थसंग्रह– धर्म, भावना, विधि (गुण, विशिष्ट, उत्पत्ति, विनियोग, प्रयोग एवं अधिकार) ।	13
Unit II	अर्थसंग्रह– मन्त्र, नामधेय, निषेद, अर्थवाद (अपूर्व, नियम एवं परिसंख्या विधि)।	10
Unit III	वेदान्तसार– प्रारम्भ से सृष्टि प्रक्रिया।	12
Unit IV	वेदान्तसार– विशिष्ट अध्यारोप से समाप्ति पर्यनत।	10
Unit V	मीमांसा दर्शन एवं वेदान्त दर्शन का इतिहास।	10
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	05
		Total- 60

Suggested Reading:

1. वेदान्तसार– रामशरण त्रिपाठी।
2. वेदान्तसार– राममूर्ति शर्मा।
3. वेदान्तसार– महेशचन्द्र भारतीय।
4. भारतीय दर्शन– बलदेव उपाध्याय।
5. भारतीय दर्शन– उमेश मिश्र।
6. भारतीय दर्शन– दत्त एवं चटर्जी।
7. Indian Philosophy- Das Gupta

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

Group- II

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***	**Year: IV**	**Semester:VIII** **Paper-II**
Subject: Sanskrit		
CourseCode: SAN-DSE108	**Course Title: वेदाङ्ग (निरुक्त, ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)**	

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. शिक्षा एवं व्याकरण शास्त्रों के पारिभाषिक पदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. व्याकरण ग्रन्थों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
3. शिक्षा का वेदाङ्ग में स्थान एवं वेदों में उपयोगिता को जान सकेंगे।
4. पाणिनीय–शिक्षा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
5. ऋक्प्रातिशाख्य से परिचय एवं महत्त्व से अवगत होगें।

Credits: 4	अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 8 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक–4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30=40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	निरुक्त– अध्याय 1–2, पदों का चतुर्विध विभाजन एवं लक्षण, षड्भाव विकार, शब्द नित्यत्वानित्यत्वविचार, उपसर्गों के द्योतकत्व, वाचकत्व का सिद्धान्त, निपात की कोटियॉ, निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन, मन्त्रों की अर्थवत्ता, निर्वचन के सिद्धान्त एवं अधिकारी निरूपण।	15
Unit II	निर्ववचन– निघण्टु , आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक् , रात्रि, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर। अध्याय सात– त्रिविधा ऋचः, अनादिष्टदैवत मन्त्र, छन्दांसि, पृथिवी स्थानीय देवता वर्णन।	10
Unit III	पाणिनीय शिक्षा– 1–30 कारिकाएँ।	10
Unit IV	पाणिनीय शिक्षा– 31 से अन्त तक कारिकाएँ।	10
Unit V	ऋक्प्रातिशाख्यः परिभाषाएँ– समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. न्यू वैदिक सलेक्शन– भाग 1 एवं 2–वाराणसी भारतीय विद्या प्रकाशन।
2. हिन्दी निरुक्त– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
3. प्रातिशाख्यों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ0 इन्द्रा ,वाराणसी।
4. पाणिनीय शिक्षा–रुद्रप्रसाद अवस्थी।
5. पाणिनीय शिक्षा–प्रो0 श्रीनारायण मिश्र।
6. वैदिक साहित्य का इतिहास–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।

7. यास्ककृत निरुक्त– सम्पादक–उमाशंकर ऋषि, वाराणसी, चौखम्बाविद्याा भवन।
8. ऋक्प्रातिशाख्य–एक परिशीलन–डॉ0 वीरेन्द्र कुमार वर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शोध संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VIII** **Paper- III**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE109	**Course Title:** वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. वाक्यपदीय में भर्तृहरि के भाषा (वाच्) की प्रकृति और उसका वाह्य जगत से सम्बन्ध की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. वाक्यपदीय में दार्शनिक रीतियों के विषयों जैसे–जाति, द्रव्य, काल आदि से सुपरिचित होंगे।
3. भाषाविज्ञान के स्वरूप, उद्‌गम एवं विकास से सुपरिचित होगे।
4. ध्वनि विज्ञान, वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 9 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	वाक्यपदीयम्– भर्तृहरि, 1–75 कारिकाएँ।	10
Unit II	वाक्यपदीयम्– भर्तृहरि, 76–156 कारिकाएँ।	10
Unit III	भाषाविज्ञान का परिचय, भाषा वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं परिवारमूलक) अवेस्ता वैदिक एवं लौकिक संस्कृत।	15
Unit IV	ध्वनि विज्ञान (नियम, दिशाएँ एवं कारण) पद विज्ञान।	10
Unit V	वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान (दिशाएँ एवं कारण)।	10
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	05
		Total- 60

Suggested Reading:

1. वाक्यपदीयम्– भर्तृहरि
2. अभिनव प्राकृत प्रकाश– नेमिचन्द्र शास्त्री
3. संस्कृत भाषा विज्ञान– राजकिशोर सिंह
4. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी
5. भाषा विज्ञान– डॉ0 भोलानाथ तिवारी– इलाहाबाद किताब महल
6. भाषा विज्ञान– डॉ0 कर्णसिंह– साहित्य भण्डार सुभाष बाजार मेरठ

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

Group- III

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***	**Year: IV**	**Semester:VIII Paper-II**
Subject: Sanskrit		
CourseCode: SAN-DSE108	**Course Title: वेदाङ्ग (निरुक्त, ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)**	

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. शिक्षा एवं व्याकरण शास्त्रों के पारिभाषिक पदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. व्याकरण ग्रन्थों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
3. शिक्षा का वेदाङ्ग में स्थान एवं वेदों में उपयोगिता को जान सकेंगे।
4. पाणिनीय–शिक्षा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
5. ऋक्प्रातिशाख्य से परिचय एवं महत्त्व से अवगत होगें।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 8 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक–4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30=40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	निरुक्त– अध्याय 1–2, पदों का चतुर्विध विभाजन एवं लक्षण, षड्भाव विकार, शब्द नित्यत्वानित्यत्वविचार, उपसर्गों के द्योतकत्व, वाचकत्व का सिद्धान्त, निपात की कोटियॉ, निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन, मन्त्रों की अर्थवत्ता, निर्वचन के सिद्धान्त एवं अधिकारी निरूपण।	15
Unit II	निर्वचन– निघण्टु , आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक् , रात्रि, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर। अध्याय सात– त्रिविधा ऋचः, अनादिष्टदैवत मन्त्र, छन्दांसि, पृथिवी स्थानीय देवता वर्णन।	10
Unit III	पाणिनीय शिक्षा–01–30 कारिकाएँ।	10
Unit IV	पाणिनीय शिक्षा– 31 से अन्त तक कारिकाएँ।	10
Unit V	ऋक्प्रातिशाख्यः परिभाषाएँ– समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. न्यू वैदिक सलेक्शन–भाग 1 एवं 2–वाराणसी भारतीय विद्या प्रकाशन।
2. हिन्दी निरुक्त–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
3. प्रातिशाख्यों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ0 इन्द्रा ,वाराणसी।
4. पाणिनीय शिक्षा–रुद्रप्रसाद अवस्थी।
5. पाणिनीय शिक्षा–प्रो0 श्रीनारायण मिश्रं
6. वैदिक साहित्य का इतिहास–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
7. यास्ककृत निरुक्त– सम्पादक–उमाशंकर ऋषि।

8. ऋक्प्रातिशाख्य–एक परिशीलन–डॉ0 वीरेन्द्र कुमार वर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शोध संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

Group- I

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***Master InSanskrit***		**Year: V**	**Semester: IX** **Paper- II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE111	**Course Title:साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र– भाग–01**		
Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि 1. नाट्यशास्त्र के उद्भव से सुपरिचित होंगे। 2. साहित्यशास्त्र के सिद्धान्तों से अवगत होंगे। 3. दशरूपक ग्रन्थ के प्रयोजनों से परिचित हो सकेंगे। 4. नाट्य विषय ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे। 5. रूपकों के भेदक– तत्वों से परिचित हो सकेंगें 6. कथावस्तु के स्वरूप को समझ सकेंगे।			
Credits: 4	अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 11 Discipline Specific Electives**	
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**	
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	काव्यमीमांसा– राजशेखरकृत प्रथमअधिकरण के प्रथम अध्याय से पंचम अध्याय तक।	15
Unit II	काव्यमीमांसा– राजशेखरकृत प्रथमअधिकरण के षष्ठ अध्याय से दशम अध्याय तक।	10
Unit III	नाट्यशास्त्र– भरतप्रणीत– प्रथम अध्याय।	10
Unit IV	नाट्यशास्त्र– भरतप्रणीत– द्वितीय अध्याय।	10
Unit V	धनंजय विरचित दशरूपकम्– प्रथम प्रकाश।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. नाट्यशास्त्र– डॉ0 सत्यार्थ प्रकाश शर्मा।
2. नाट्यशास्त्र– बाबूलाल शुक्ल, चौखम्बा संस्कृत संस्थान,वाराणसी।
3. नाट्यशास्त्र– डॉ0 सुधाकर मालवीय।
4. संस्कृत नाट्य सिद्धान्त– डॉ0 रमाकान्त त्रिपाठी।
5. दशरूपकम्– भोलाशंकर व्यास,चौखम्बा विद्याभवन,वाराणसी।
6. दशरूपकम्– श्रीनिवास शास्त्री,साहित्य भण्डार, मेरठ।
7. राजशेखरकृत– काव्यमीमांसा व्याख्याकार–डॉ0 गंगासागर राय।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: Master In *Sanskrit*		**Year: V**	**Semester:IX** **Paper- II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE112	**Course Title:व्याकरण– महाभाष्य, सिद्धिप्रक्रिया एवं सूत्र व्याख्या**		
Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि 1. महाभाष्य व्याकरणिक अवधारणा को जान पायेंगे। 2. लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर धातु प्रकिया के विषय से परिचित होंगे। 3. लघुसिद्धान्तकौमुदी के माध्यम से आत्मनेपद एवं परस्मैपद से सुपरिचित होंगे।			
Credits: 4	**अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक**	**DSE 12 Discipline Specific Electives**	
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**	
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	महाभाष्य– प्रथमाह्निक व्याकरणप्रयोजन तक।	15
Unit II	महाभाष्य– समाप्ति पर्यन्त।	10
Unit III	लघुसिद्धान्तकौमुदी– भू धातु प्रक्रिया (लट्, लिङ्, लृट्, लोट् और लङ्)।	10
Unit IV	लघुसिद्धान्तकौमुदी– एध् धातु प्रक्रिया (लट्, लिङ्, लृट्, लोट् और लङ्)।	10
Unit V	लघुसिद्धान्तकौमुदी– आत्मनेपद एवं परस्मैपद सूत्र व्याख्या।	10
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	05
		Total- 60

Suggested Reading:

1. महाभाष्य– पं0 चारुदेव शास्त्री,
2. महाभाष्य–प्रदीपोद्योतटीका सहित– वेदव्रत
3. सिद्धान्तकौमुदी–तत्त्वबोधिनी– पं0 गिरधर शर्मा चतुर्वेदी
4. तिङन्त प्रकरणम्– डॉ0 लज्जा भट्ट
5. लघुसिद्धान्तकौमुदी– श्रीवरदराजकृत, व्याख्याकार श्रीधरानन्दशास्त्री।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme: Master In*Sanskrit*	**Year: V**	**Semester:IX** **Paper- II**
Subject: Sanskrit		
CourseCode: SAN-DSE113	**Course Title:गद्य एवं ऐतिहासिक काव्य**	

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. संस्कृत गद्यकाव्य की परम्परा से सुपरिचित होंगे।
2. गद्यकाव्य के भेद एवं प्रकार के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।
3. गद्यकाव्य का उद्भव एवं उत्कर्ष के विषय से सुपरिचित होंगे।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 13 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	गद्यकाव्य एवं ऐतिहासिककाव्य परम्परा एवं विकास।	07
Unit II	कादम्बरी–उज्जयिनी वर्णन से **(सूतिकागृह को छोड़कर)** कुमारवर्णन पर्यन्त।	12
Unit III	कादम्बरी– इन्द्रायुध वर्णन से राजकुल वर्णन पर्यन्त।	12
Unit IV	विक्रमांकदेवचरितम्–प्रथम सर्ग प्रारम्भ से 50 श्लोक तक।	12
Unit V	विक्रमांकदेवचरितम्– प्रथम सर्ग 51 श्लोक से सर्गान्त पर्यन्त।	12
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	05
		Total- 60

Suggested Reading:

1. कादम्बरी– श्रीनिवास मिश्र
2. कादम्बरी– कृष्णमोहन शास्त्री
3. कादम्बरी एक सांस्कृतिक अध्ययन– वासुदेवशरण अग्रवाल
4. विक्रमांकदेवचरितम्– बी0एस0 मुरारीलाल नागर
5. विक्रमांकदेवचरितम्– विश्वनाथशास्त्री भारद्वाज
6. विक्रमांकदेवचरितम्– हरगोविन्द शास्त्री

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

Group- II

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***Master InSanskrit***		**Year: V**	**Semester: IX** **Paper- II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE111	**Course Title:साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र– भाग–01**		
Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि 1. नाट्यशास्त्र के उद्भव से सुपरिचित होंगे। 2. साहित्यशास्त्र के सिद्धान्तों से अवगत होंगे। 3. दशरूपक ग्रन्थ के प्रयोजनों से परिचित हो सकेंगे। 4. नाट्य विषय ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे। 5. रूपकों के भेदक– तत्वों से परिचित हो सकेंगें			
Credits: 4	अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 11 Discipline Specific Electives**	
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**	
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	काव्यमीमांसा– प्रथमअधिकरण के प्रथम अध्याय से पंचम अध्याय तक।	15
Unit II	काव्यमीमांसा– प्रथमअधिकरण के षष्ठ अध्याय से दशम अध्याय तक।	10
Unit III	नाट्यशास्त्र– प्रथम अध्याय।	10
Unit IV	नाट्यशास्त्र– द्वितीय अध्याय।	10
Unit V	दशरूपकम्– प्रथम प्रकाश।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. नाट्यशास्त्र– डॉ0 सत्यार्थ प्रकाश शर्मा।
2. नाट्यशास्त्र– बाबूलाल शुक्ल, चौखम्बा संस्कृत संस्थान,वाराणसी।
3. नाट्यशास्त्र– डॉ0 सुधाकर मालवीय।
4. संस्कृत नाट्य सिद्धान्त– डॉ0 रमाकान्त त्रिपाठी।
5. दशरूपकम्– भोलाशंकर व्यास,चौखम्बा विद्याभवन,वाराणसी।
6. दशरूपकम्– श्रीनिवास शास्त्री,साहित्य भण्डार, मेरठ।
7. राजशेखरकृत– काव्यमीमांसा व्याख्याकार–डॉ0 गंगासागर राय।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: Master In *Sanskrit*		**Year: V**	**Semester:IX** **Paper- II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE112	**Course Title:व्याकरण– महाभाष्य, सिद्धिप्रक्रिया एवं सूत्र व्याख्या**		
Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि 1. महाभाष्य व्याकरणिक अवधारणा को जान पायेंगे। 2. लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर धातु प्रक्रिया के विषय से परिचित होंगे। 3. लघुसिद्धान्तकौमुदी के माध्यम से आत्मनेपद एवं परस्मैपद से सुपरिचित होंगे।			
Credits: 4	**अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक**	**DSE 12 Discipline Specific Electives**	
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**	
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	महाभाष्य– प्रथमाह्निक व्याकरणप्रयोजन तक।	15
Unit II	महाभाष्य– महाभाष्य– समाप्ति पर्यन्त।	10
Unit III	लघुसिद्धान्तकौमुदी– भू धातु प्रक्रिया (लट्, लिङ्, लृट्, लोट् और लङ्)।	10
Unit IV	लघुसिद्धान्तकौमुदी– एध् धातु प्रक्रिया (लट्, लिङ्, लृट्, लोट् और लङ्)।	10
Unit V	लघुसिद्धान्तकौमुदी– आत्मनेपद एवं परस्मैपद सूत्र व्याख्या।	10
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	05
		Total- 60

Suggested Reading:

1. महाभाष्य– पं0 चारुदेव शास्त्री,
2. महाभाष्य–प्रदीपोद्योतटीका सहित– वेदव्रत
3. सिद्धान्तकौमुदी–तत्त्वबोधिनी– पं0 गिरधर शर्मा चतुर्वेदी
4. तिङन्त प्रकरणम्– डॉ0 लज्जा भट्ट
5. लघुसिद्धान्तकौमुदी– श्रीवरदराजकृत, व्याख्याकार श्रीधरानन्दशास्त्री।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

Group- III

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***Master InSanskrit***		**Year: V**	**Semester: IX** **Paper- II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DSE111	**Course Title:साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र– भाग–01**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. नाट्यशास्त्र के उद्भव से सुपरिचित होंगे।
2. साहित्यशास्त्र के सिद्धान्तों से अवगत होंगे।
3. दशरूपक ग्रन्थ के प्रयोजनों से परिचित हो सकेंगे।
4. नाट्य विषय ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे।
5. रूपकों के भेदक– तत्वों से परिचित हो सकेंगें

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 11 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन/ 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	काव्यमीमांसा–प्रथम अधिकरण के प्रथम अध्याय से पंचम अध्याय तक।	15
Unit II	काव्यमीमांसा–प्रथम अधिकरण के षष्ठ अध्याय से दशम अध्याय तक।	10
Unit III	नाट्यशास्त्र– प्रथम अध्याय।	10
Unit IV	नाट्यशास्त्र– द्वितीय अध्याय।	10
Unit V	दशरूपकम्– प्रथम प्रकाश।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. नाट्यशास्त्र– डॉ0 सत्यार्थ प्रकाश शर्मा।
2. नाट्यशास्त्र– बाबूलाल शुक्ल, चौखम्बा संस्कृत संस्थान,वाराणसी।
3. नाट्यशास्त्र– डॉ0 सुधाकर मालवीय।
4. संस्कृत नाट्य सिद्धान्त– डॉ0 रमाकान्त त्रिपाठी।
5. दशरूपकम्– भोलाशंकर व्यास,चौखम्बा विद्याभवन,वाराणसी।
6. दशरूपकम्– श्रीनिवास शास्त्री,साहित्य भण्डार, मेरठ।
7. राजशेखरकृत– काव्यमीमांसा व्याख्याकार–डॉ0 गंगासागर राय।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

Group- I

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: Master In*Sanskrit*		**Year: V**	**Semester: X** **Paper- II**
Subject: Sanskrit			
Course Code: SAN-DSE114	**Course Title:साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र– भाग– 02**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. नाट्यशास्त्र के उद्भव से सुपरिचित होंगे।
2. साहित्यशास्त्र के काव्य–दृश्यकाव्य, श्रव्यकाव्य से अवगत होंगे।
3. दशरूपक ग्रन्थ के प्रयोजनों से परिचित हो सकेंगे।
4. नाट्य विषय ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे।
5. रूपकों के भेदक–तत्वों से परिचित हो सकेंगें
6. कथावस्तु के स्वरूप को समझ सकेंगे।

Credits: 4	अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 14 Discipline Specific Electives**
Max. Marks: श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	साहित्यदर्पण– प्रथम परिच्छेद	11
Unit II	साहित्यदर्पण– द्वितीय परिच्छेद	11
Unit III	दशरूपकम्– द्वितीय प्रकाश	11
Unit IV	दशरूपकम्– तृतीय प्रकाश	11
Unit V	दशरूपकम्– चतुर्थ प्रकाश	11
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55
		Total- 60

Suggested Reading:

1. राजशेखरकृत– काव्यमीमांसा.व्याख्याकार– डॉ0 गंगासागर राय।
2. दशरूपकम्– आचार्य धनंजय सम्पादक भोलाशंकर।
3. संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास– पंचम खण्ड।
4. अभिनव भारती– अभिनवगुप्त रचित टीका।
5. साहित्य दर्पण– विश्वनाथकविराजकृत. लक्ष्मीटीका युक्त. टीकाकार श्रीकृष्णमोहन शास्त्री,वाराणसी।
6. साहित्य दर्पण– शालिग्रामशास्त्री कृत विमला टीका।
7. साहित्य दर्पण– गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme: ***Master In Sanskrit***	**Year: V**	**Semester: X** **Paper- II**

Subject: Sanskrit

Course Code: SAN-DSE115	**Course Title:संस्कृतप्रकरण, चम्पूकाव्य एवं निबन्ध**

tcomes:अधिगम उपलब्धि

1. गद्य एवं चम्पूकाव्य की उत्पत्ति और विकास से सुपरिचित होंगे।
2. प्रमुख गद्य एवं चम्पू काव्यों के प्रणेताओं, उनकी कथावस्तु तथा काव्यगत वैशिष्टय के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. संस्कृत काव्य की सुदीर्घ एवं वैविध्यमयी परम्परा से अवगत होंगे।
4. गद्य एवं चम्पू की विधाओं के विशिष्ट भाषिक प्रयोगों से अवगत होंगे।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 15 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	मृच्छकटिकम्– प्रथम अंक, तृतीय अंक एवं षष्ठ अंक।	10
Unit II	मुद्राराक्षस– प्रथम एवं द्वितीय अंक।	10
Unit III	नलचम्पू– प्रथम उच्छ्वास– प्रारम्भ से वर्षावर्णन पर्यन्त।	10
Unit IV	काव्यशास्त्रीय एवं साहित्यिक संस्कृतनिबन्ध– वेदानां महत्त्वम्, काव्यलक्षणम्, गीता सुगीता कर्तव्या, रम्या रामायणी कथा, उपमा कालिदासस्य।	10
Unit V	प्रकीर्ण संस्कृतनिबन्ध– जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी, उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः, कर्मण्येवाधिकारस्ते, विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्, सत्संगतिः, परोपकारः।	15
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 55 Total- 60

Suggested Reading:

1.	मृच्छकटिकम्–	डॉ0 रमाकान्त द्विवेदी।
2.	महाकवि शूद्रक–	डॉ0 रमाशंकर तिवारी।
3.	नलचम्पू–	प्रो0 कैलाशपति त्रिपाठी।
4.	चम्पूकाव्य का आलोचनात्मक अध्ययन–	प्रो0 छविनाथ– त्रिपाठी।
5.	संस्कृतनिबन्धशतकम्–	डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
6.	संस्कृतनिबन्धरत्नाकर–	डॉ0 शिवप्रसाद भारद्वाज, दिल्ली नई सड़क अशोकप्रकाशन।
7.	संस्कृतनिबन्धसुधा–	डॉ0 राधेश्याम गंगवार।
8.	मुद्राराक्षस–	सम्पादक–पण्डित हरप्रसाद शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत सीरिज।
9.	मुद्राराक्षस–	विशाखदत्त, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, दिल्ली।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT

Programme: Master In *Sanskrit*	**Year: V**	**Semester: X Paper-II**

Subject: Sanskrit

Course Code: SAN-DSE116	**Course Title: अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवं साहित्यकार**

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे।
2. आधुनिक संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे।
3. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे।
4. अर्वाचीन पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे।
5. उत्तराखण्ड के प्रमुख संस्कृत साहित्य एवं साहित्यकार परिचित होंगे।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 16 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य का इतिहास– अठारहवीं शताब्दी से लेकर अद्यतन।	10
Unit II	अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य के विविध आयाम।	10
Unit III	अर्वाचीन प्रमुख संस्कृतसाहित्यकार एवं रचनाएँ– पं0 अम्बिकादत्त व्यास, आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय, पण्डिता क्षमाराव, कविवर सत्यव्रत शास्त्री, डॉ0 ब्रह्मानन्द शुक्ल, श्रीधर भास्कर वर्णेकर, मथुरा प्रसाद दीक्षित, प्रो0 रमाकान्त शुक्ल, आचार्य कपिलदेव द्विवेदी, प्रो0 रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्रो0 हरिनारायण दीक्षित, प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, प्रो0 हरिदत्त शर्मा, प्रो0 ब्रजेश कुमार शुक्ला।	10
Unit IV	अर्वाचीन प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं का परिचय– दूर्वा, सागरिका, अजस्रा, अर्वाचीनसंस्कृतम्, संस्कृतमञ्जरी, शोधभारती, शोधप्रभा, वैदिक वाग्ज्योति, गाण्डीवम्, वाक्।	15
Unit V	उत्तराखण्ड के प्रमुख संस्कृत साहित्य एवं साहित्यकार परिचय।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास– पद्मभूषण पं0 बलदेव उपाध्याय, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास– सप्तम खण्ड– सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
3. आधुनिक संस्कृत नाटक– रामजी उपाध्याय, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
4. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
5. काव्यालंकारकारिका– प्रोफेसर रेवाप्रसाद द्विवेदी, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
6. साहित्यविमर्श– प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
7. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास– प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

8. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
9. अभिराजयशोभूषण्म्– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

Group- II

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: Master In *Sanskrit*		**Year: V**	**Semester: X** **Paper- II**
Subject: Sanskrit			
Course Code: SAN-DSE114	**Course Title: साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र– भाग– 02**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. नाट्यशास्त्र के उद्भव से सुपरिचित होंगे।
2. साहित्यशास्त्र के काव्य–दृश्यकाव्य, श्रव्यकाव्य से अवगत होंगे।
3. दशरूपक ग्रन्थ के प्रयोजनों से परिचित हो सकेंगे।
4. नाट्य विषय ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे।
5. रूपकों के भेदक–तत्वों से परिचित हो सकेंगें

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 14 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	साहित्यशास्त्र परम्परा एवं नाट्यशास्त्र परम्परा।	11
Unit II	साहित्यदर्पण– प्रथम परिच्छेद।	11
Unit III	साहित्यदर्पण– द्वितीयपरिच्छेद।	11
Unit IV	दशरूपकम्– द्वितीय प्रकाश।	11
Unit V	दशरूपकम्– तृतीय प्रकाश।	11
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 55 Total- 60

Suggested Reading:

1. राजशेखरकृत– काव्यमीमांसा.व्याख्याकार– डॉ0 गंगासागर राय।
2. दशरूपकम्– आचार्य धनंजय सम्पादक भोलाशंकर, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
3. संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास– पंचम खण्ड, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
4. अभिनव भारती– अभिनवगुप्त रचित टीका।
5. साहित्य दर्पण– विश्वनाथकविराजकृत. लक्ष्मीटीका युक्त, टीकाकार श्रीकृष्णमोहन शास्त्री, वाराणसी।
6. साहित्य दर्पण– शालिग्रामशास्त्री कृत विमला टीका।
7. साहित्य दर्पण– गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme: ***Master In Sanskrit***	**Year: V**	**Semester: X** **Paper- II**

Subject: Sanskrit

Course Code: SAN-DSE115	**Course Title: संस्कृतप्रकरण, चम्पूकाव्य एवं निबन्ध**

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. गद्य एवं चम्पूकाव्य की उत्पत्ति और विकास से सुपरिचित होंगे।
2. प्रमुख गद्य एवं चम्पू काव्यों के प्रणेताओं, उनकी कथावस्तु तथा काव्यगत वैशिष्टय के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. संस्कृत काव्य की सुदीर्घ एवं वैविध्यमयी परम्परा से अवगत होंगे।
4. गद्य एवं चम्पू की विधाओं के विशिष्ट भाषिक प्रयोगों से अवगत होंगे।

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 15 Discipline Specific Electives**
Max.A:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन/ 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	संस्कृतप्रकरण का परिचय एवं मृच्छकटिकम्–के प्रथम अंक, षष्ठ अंक तथा दशम अंक।	15
Unit II	मुद्राराक्षस– प्रथम एवं द्वितीय अंक।	10
Unit III	चम्पूकाव्य का परिचय एवं नलचम्पू– त्रिविक्रमभट्ट प्रथमउच्छ्वास	10
Unit IV	काव्यशास्त्रीय एवं साहित्यिक संस्कृतनिबन्ध– वेदानां महत्त्वम्, काव्यलक्षणम्, गीता सुगीता कर्तव्या, रम्या रामायणी कथा, उपमा कालिदासस्य।	10
Unit V	प्रकीर्ण संस्कृतनिबन्ध–जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी, उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः,कर्मण्येवाधिकारस्ते, विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्, सत्संगतिः, परोपकारः।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 55 Total- 60

Suggested Reading:

1. मृच्छकटिकम्– डॉ0 रमाकान्त द्विवेदी।
2. महाकवि शूद्रक– डॉ0 रमाशंकर तिवारी।
3. नलचम्पू– प्रो0 कैलाशपति त्रिपाठी।
4. चम्पूकाव्य का आलोचनात्मक अध्ययन– प्रो0 छविनाथ– त्रिपाठी।
5. संस्कृतनिबन्धशतकम्– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्, ज्ञानपुर।
6. संस्कृतनिबन्धरत्नाकर– डॉ0 शिवप्रसाद भारद्वाज, दिल्ली नई सड़क अशोकप्रकाशन।
7. संस्कृतनिबन्धसुधा– डॉ0 राधेश्याम गंगवार, देहरादून।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

Group- III

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: Master In *Sanskrit*		**Year: V**	**Semester: X** **Paper- II**
Subject: Sanskrit			
Course Code: SAN-DSE114	**Course Title: साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र– भाग– 02**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. नाट्यशास्त्र के उद्भव से सुपरिचित होंगे।
2. साहित्यशास्त्र के काव्य–दृश्यकाव्य, श्रव्यकाव्य से अवगत होंगे।
3. दशरूपक ग्रन्थ के प्रयोजनों से परिचित हो सकेंगे।
4. नाट्य विषय ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे।
5. रूपकों के भेदक–तत्वों से परिचित हो सकेंगें

Credits: 4 अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक	**DSE 14 Discipline Specific Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र परम्परा।	10
Unit II	साहित्यदर्पण– प्रथम परिच्छेद।	10
Unit III	साहित्यदर्पण– द्वितीय परिच्छेद।	10
Unit IV	दशरूपकम्–द्वितीय प्रकाश।	10
Unit V	दशरूपकम्– तृतीय प्रकाश।	15
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55
		Total- 60

Suggested Reading:

1. राजशेखरकृत– काव्यमीमांसा.व्याख्याकार–डॉ0 गंगासागर राय।
2. दशरूपकम्– आचार्य धनंजय सम्पादक भोलाशंकर।
3. संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास– पंचम खण्ड।
4. अभिनव भारती– अभिनवगुप्त रचित टीका।
5. साहित्य दर्पण– विश्वनाथकविराजकृत. लक्ष्मीटीका युक्त. टीकाकार श्रीकृष्णमोहन शास्त्री.वाराणसी।
6. साहित्य दर्पण– शालिग्रामशास्त्री कृत विमला टीका।
7. साहित्य दर्पण– गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

General Electives

(GE)

DEPARTMENT OF SANSKRIT

बहुविषयक अध्ययन पाठ्यक्रमों हेतु स्नातक / स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की रूपरेखा एवं प्रारूप(संस्कृत विषयक पाठ्यक्रम)				
Department of Sanskrit D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital Flowchart Depicting the structure of UG&PG Multidisciplinary Program (with three Core Disciplines) **Under Graduate Certificates**				
Year	**Semster**	**Course code**	**Paper Title in multi study –Sanskrit**	**credits**
Undergraduate Certificate in Multidisciplinary Study-SANSKRIT				
First Year	I	GE 1	श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मप्रबन्धन	**4**
	II	GE 2	श्रीमद्भगवद्गीता में कर्मयोग	**4**
UndergraduateDiploma in Multidisciplinary Study-SANSKRIT				
Second Year	III	GE 3	संस्कृतसाहित्य में मानवीयमूल्य	**4**
	IV	GE 4	संस्कृत साहित्य में बोधिचित्त	**4**
Bachelor of in Multidisciplinary Study-SANSKRIT				
Third Year	V	GE 5	संस्कृतसाहित्य में राष्ट्रीय चेतना	**4**
	VI	GE 6	स्वास्थ्य विज्ञान	**4**

PG in the core subject-Sanskrit

Post Graduate

Year	Semster	Course code		Paper Title in multi study –Sanskrit	Credits
PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT					
Fourth Year	VII	Group II	GE 7	अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवं साहित्यकार	**4**
		अथवा			
		Group III	GE 7	अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवं साहित्यकार	**4**
			GE 8	आर्षकाव्य रामायण	**4**
	VIII	Group II	GE 9	उत्तराखण्ड़ के संस्कृतसाहित्यकार	**4**
		अथवा			
		Group III	GE 9	उत्तराखण्ड़ के संस्कृतसाहित्यकार	**4**
			GE 10	आर्षकाव्य महाभारत	**4**

Year	Semster	Course code		Paper Title in multi study–Sanskrit	credits
Master's in Core Subject- SANSKRIT					
Fifth Year	IX	Group II	GE 11	धर्मशास्त्र– सामाजिक एवं विधिसम्बद्ध	**4**
		अथवा			
		Group III	GE 11	धर्मशास्त्र– सामाजिक एवं विधिसम्बद्ध	**4**
			GE 12	नीतिशास्त्र– राजनीतिसम्बद्ध	**4**
	X	Group II	GE 13	कौटिलीयं– अर्थशास्त्रम् (विनयाधिकरणम्)	**4**
		अथवा			
		Group III	GE 13	कौटिलीयं– अर्थशास्त्रम् (विनयाधिकरणम्)	**4**
			GE 14	पातञ्जलयोगसूत्र	**4**

Undergraduate Certificate in Multidisciplinary Study-SANSKRIT			
Programme: ***Certificate Course in Sanskrit***		**Year: I**	**Semester:I** **Paper-II**
	Subject: Sanskrit		
Course Code: SAN-GE101	**Course Title: श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मप्रबन्धन**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी श्रीमद्भगवद्गीता के अन्तर्गत प्रतिपाद्य विषय से अवगत हो सकेंगे।
2. श्रीमद्भगवद्गीता के माध्यम से आत्मप्रबन्धनसे अवगत होंगे।
3. मानवजीवन में आत्मप्रबन्धन को आत्मसात् करने में सक्षम होंगे।
4. विद्यार्थीआत्मप्रबन्ध के ज्ञान से प्रत्येक कार्य को सम्यक् रूप से पूर्ण कर लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

Credits: 4 सामान्य ऐच्छिक	**GE 1 General Electives**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks:09+25=34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 36

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	महाभारत का संक्षिप्त परिचय, महर्षि वेदव्यास का परिचय, श्रीमद्भगवद्गीता का परिचय एवं प्रतिपाद्य विषय।	15
Unit II	श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित इन्द्रिय, मन, बुद्धि, आत्मा का स्वरूप तथा कार्य।	15
Unit III	आत्मा एवं मन की भूमिका एवं त्रिगुणों का स्वरूप एवं कार्य तथा आत्मप्रबन्धन अर्थ एवं स्वरूप।	15
Unit IV	आत्मप्रबन्धन अर्थ एवं स्वरूप, इन्द्रियनिग्रह अर्थ एवं स्वरूप तथा आत्मप्रबन्धन की प्रासङ्गिकता।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 **Total- 60**

Suggested Reading:

1. श्रीमद्भगवद्गीता– गीता प्रेस गोरखपुर।
2. श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दी टीकाकार– डॉ0 श्रीकृष्ण त्रिपाठी।
3. श्रीमद्भगवद्गीता (मधुसूदनी संस्कृत टीका)– श्री सनातन देव।
4. श्रीमद्भगवद्गीता– डॉ0 बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा।
5. गीताविज्ञानभाष्यम्– डॉ0 रामप्रकाश सारस्वत, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा।
6. गीता रहस्य भूमिका– बालगंगाधर तिलक, आनन्दाश्रम पूना। प्रथम संस्करण।1919

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अन्य सभी विभाग एवं संकाय

Undergraduate Certificate in Multidisciplinary Study-SANSKRIT			
Programme: ***Certificate Course in Sanskrit***		**Year: I**	**Semester:II** **Paper-II**
	Subject: Sanskrit		
Course Code: SAN-GE102	**Course Title: श्रीमद्भगवद्गीता में कर्मयोग**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी श्रीमद्भगवद्गीता के अन्तर्गत प्रतिपाद्य विषय से अवगत हो सकेंगे।
2. श्रीमद्भगवद्गीता के माध्यम से कर्मसिद्धान्त एवं अध्यात्मज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. मानवजीवन में ज्ञान के महत्त्व को आत्मसात करने में सक्षम होंगे।
4. विद्यार्थी कर्मयोग में दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।

Credits: 4 सामान्य ऐच्छिक	**GE 2 General Electives**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks: 09+25=34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	महाभारत का संक्षिप्त परिचय, महर्षि वेदव्यास का परिचय।	05
Unit II	श्रीमद्भगवद्गीता के अध्यायों का संक्षिप्त परिचय।	10
Unit III	कर्मयोग का परिचय– तृतीय अध्याय के अन्तर्गत कर्मयोग ।	10
Unit IV	श्रीमद्भगवद्गीता के चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत कर्मयोग एवं प्रासङ्गिकता।	15
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	40 20 Total- 60

Suggested Reading:

1. श्रीमद्भगवद्गीता– गीता प्रेस गोरखपुर।
2. श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दी टीकाकार– डॉ0 श्रीकृष्ण त्रिपाठी।
3. श्रीमद्भगवद्गीता (मधुसूदनी संस्कृत टीका)– श्री सनातन देव।
4. श्रीमद्भगवद्गीता– डॉ0 बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा।
5. गीताविज्ञानभाष्यम्– डॉ0 रामप्रकाश सारस्वत, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा।
6. गीतारहस्य भूमिका– पं0 बालगंगाधर तिलक, आनन्दाश्रम पूना।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects: (अन्य सभी विभाग एवं संकाय)

UndergraduateDiploma in Multidisciplinary Study-SANSKRIT			
Programme: ***Diploma Course in Sanskrit***		**Year: II**	**Semester:III Paper-II**
	Subject: Sanskrit		
Course Code: SAN-GE103	**Course Title: संस्कृतसाहित्य में मानवीयमूल्य**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी अपने प्राचीन नैतिक मूल्यों से सुपरिचित होंगे।
2. विद्यार्थी नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन करेंगे।
3. नैतिक मूल्यों के माध्यम से विद्यार्थी अपने कर्त्तव्यों एवं आचरणों से परिचित होंगे।
4. नैतिक मूल्यों को जानने के पश्चात् विद्यार्थी समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने में सक्षम होंगे।
5. विद्यार्थी नैतिक मूल्यों के ज्ञान से आत्मविकास करने में सक्षम होंगे।

Credits: 4 सामान्य ऐच्छिक	**GE 3 General Electives**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks:09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	संस्कृत साहित्य का परिचय , मानवीय मूल्य का अर्थ	15
Unit II	मानवीय मूल्यों का विश्लेषण– सत्य, अहिंसा, अस्तेय , इन्द्रियसंयम, श्रद्धाभव, तप, तितिक्षा,समभाव, सद्गुण,	15
Unit III	मानवीय मूल्यों का विश्लेषण– आत्मज्ञान,, आत्मभाव, आदर्शभाव,सदाचार, शुद्ध–आहारसद्कर्म, कर्तव्यनिष्ठा,।	15
Unit IV	मानवीय मूल्यों का विश्लेषण–ब्रह्मचर्य, वर्णाश्रम, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष एवं मानवीय मूल्यों की प्रासङ्गिता।	10
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	05
		Total- 60

Suggested Reading:

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास– आचार्य बलदेव उपाध्याय, वाराणसी चौक विश्वविद्यालय प्रकाशन दिल्ली।
2. वैदिक वाङमय का इतिहास– भगवद्दत्त, नई दिल्ली प्रणव प्रकाशन।
3. संस्कार प्रकाश, भवानी शंकर त्रिवेदी, लाल बहादुर शास्त्री केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली।
4. महर्षि वाल्मीकिकृत– श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण– गोरखपुर गीता प्रेस।
5. महर्षि व्यासकृत– महाभारत– सम्पादक मण्डल वी0एस0 सूकथङकर, एडगर्टन, रघुवीर आदि पुणे, भाण्डाकर प्राच्य विद्यामंदिर 1933–1959।
6. धर्म शास्त्र का इतिहास, पांडुरंग वामन काणे, (अनु0) अर्जुन चौबे कश्यप, प्रथम भाग, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, 1973।
7. वेदामृतम् आचार शिक्षा–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।
8. ऋग्वेद में आचार सामग्री–सत्यप्रिय शास्त्री– श्री घूडमल प्रहलादकमार आर्य धमार्थ ट्रस्ट ब्यानिया पाडा,हिण्डौन सिटी राजस्थान।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

UndergraduateDiploma in Multidisciplinary Study-SANSKRIT		
Programme: *Diploma Course in Sanskrit*	**Year: II**	**Semester:IV Paper-II**

	Subject: Sanskrit
Course Code: SAN-GE104	**Course Title: संस्कृत साहित्य में बोधिचित्त**

Course Outcomes:

उद्देश्य–

1. विद्यार्थियों को बौद्धसाहित्य से परिचित कराना।
2. बौद्ध ग्रन्थों में निहित शिक्षाओं का अवबोध कराना।

अधिगम–

1. विद्यार्थी बौद्धसाहित्य के अध्ययन से भारतीय दर्शन की विविधताओं से परिचित होगें।
2. बौद्धसाहित्य में निहित नैतिक, सामाजिक, व्यावहारिक शिक्षा से भली भॉति परिचित होकर स्वयं को संयमित रखेगे। चारित्रिक उन्नति को प्राप्त करेगें।

Credits: 4 सामान्य ऐच्छिक	**GE 4 General Electives**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks:09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	पालि साहित्य का विकास, परिचय एवं परम्परा।	15
Unit II	बौद्धग्रन्थ परिचय–धम्मपद, बुद्धस्तुति, त्रिपिटक, सद्धर्म–पुण्डरीक, नामसंगीति, बौद्धधर्म।	15
Unit III	बोधिसत्व एवं बोधचित्त परिचय एवं परिभाषाएँ।	15
Unit IV	महायान एवं हीनयान शाखाओं का परिचय।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. सर्वदर्शनसंग्रह– माधवाचार्य, पं0 मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।
2. त्रिपिटक– गौतमबुद्ध, पालिटेक्स सोसायटी, लन्दन तथा सारनाथ स्थित महाबोधि सोसायटी एवं संस्कृत वि0वि0 द्वारा प्रकाशित। ईस्टर्न बुक प्रकाशन। नई दिल्ली।
3. धम्मपद– गौतम बुद्ध, ईस्टर्न बुक प्रकाशन। नई दिल्ली।
4. बुद्धस्तुति– (संस्कृत कविता) प्रो0 सी0 उपेन्द्र राय, प्रकाशन–फ्नोम पेन्ह, कम्बोडिया 2016।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:(अन्य सभी विभाग एवं संकाय)

Bachelor of in Multidisciplinary Study-SANSKRIT			
Programme: Bachelor *Course inSanskrit*		**Year: III**	**Semester:V Paper-II**
	Subject: Sanskrit		
Course Code: SAN-GE105	**Course Title: संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय चेतना**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी संस्कृतसाहित्य में वर्णित राष्ट्रीय चेतना से सुपरिचित होंगे।
2. संस्कृतसाहित्य एवं राष्ट्रीय एकता के महत्त्व को जान सकेंगे।
3. विद्यार्थी प्रत्येक कार्य को राष्ट्रीयभाव से सम्पन्न करेंगें जिससे स्वयं की और देश की उन्नति होगी।

Credits: 4 सामान्य ऐच्छिक	**GE 5 General Electives**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks:09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	वैदिक–साहित्य में राष्ट्र की अवधारणा, राष्ट्र का संस्कृतपरक अर्थ। सप्तांग सिद्धान्त–कौटिल्य अर्थशास्त्र अध्याय 6	15
Unit II	राष्ट्रीयता के कारक तत्त्व, राष्ट्रीय प्रतीक राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रीय चिह्न। भूमिसूक्त–अथर्ववेद 12/11–12। शुक्लयजुर्वेद–राष्ट्रीयता के तत्त्व 22/22। शतपथब्राह्म–राष्ट्रबोधन का महत्त्व।	15
Unit III	वाल्मीकि रामायण में राष्ट्र की भौगोलिक एकता किष्किन्धा काण्ड अध्याय 46–48, रघुवंश में सांस्कृतिक एकता (सर्ग–4), महाभारत में जनांकिकीय एकीकरण (शान्ति पर्व 65/13–22)।	15
Unit IV	आधुनिकसंस्कृतग्रन्थों में राष्ट्रीयचेतना –भारतविजयम् नाटक, दीक्षित प्रसाद मथुरा, सत्याग्रहगीता (पण्डिता क्षमराव), गाँधीचरितम् –चारुदेव शास्त्री, शिवराजविजय– अम्बिकादत्त व्यास। देशोऽयं कुरुते प्रोन्नतिम्– प्रो0 हरिनारायण दीक्षित, राष्ट्रंभवति सर्वस्वम्–डॉ0 कीर्ति वल्लभ शक्टा, चन्द्रगुप्तचरितम् – प्रो0 राधेश्याम गंगवार।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. भारतीय संस्कृत के आधार– अदिति कार्यालय श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डीचेरी।
2. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना– प्रो0 हरिनारायण दीक्षित– ईस्टर्न बुक लिंक, दिल्ली।
3. ऋग्वेद 3.53.123.3.53.24.7.33.6), भूमि सूक्त अथर्व 12.1.1–12
4. शुक्ल यजुर्वेद में राष्ट्रीयता के तत्त्व –22.22
5. शतपथ ब्राह्मण 9.4.1.1–5
6. वाल्मीकि रामायण में–किष्किन्धा काण्ड अध्याय 46–48),
7. रघुवंश –सर्ग–4
8. महाभारत शान्ति पर्व 65/13–22।

9. वेद में राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता की अवधारणा– प्रो0 ब्रज विहारी चौबे, संज्ञान वैदिक अध्ययन एवं शोधकेन्द्र होशियारपर।
10. संस्कृत और राष्ट्र की एकता–सम्पादक राधावल्लभ त्रिपाठी,अक्षयवट प्रकाशन,इलाहाबाद।
11. पुराणों में राष्ट्रीय एकता– पुष्पेन्दु कुमार दिल्ली नाग पब्लिशर्स
12. संस्कृतवाङ्मय में राष्ट्रीय चेतना–डॉ0 विजय कुमार कर्ण, हिन्दुस्तान एकेडमी प्रयागराज।
13. राष्ट्रगीताञ्जलि–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोई उ0प्र0।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अन्य सभी विभाग एवं संकाय

Programme: Bachelor of *in Arts- Sanskrit*	Year: III	Semester:VI Paper-II

Subject: Sanskrit

Course Code: SAN-GE106 | **Course Title: स्वास्थ्य विज्ञान**

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. भारतीय प्राच्य ज्ञान की अद्भूत देन आयुर्वेद का सामान्य ज्ञान प्राप्त करेंगे।
2. मानव स्वास्थ्य एवं रोग निवारण हेतु आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धान्तों से सुपरिचित होंगे।
3. वर्तमान समय में आयुर्वेद की आवश्यकता एवं महत्त्व से अवगत होते हुए मानव कल्याणार्थ अनुप्रयोग हेतु प्रेरित होंगे।
4. अष्टांग आयुर्वेद के ज्ञान द्वारा स्वस्थ जीवन शैली से सुपरिचित होंगे।

Credits: 4कौशल विकास	**GE 6 General Electives**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks:09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	आयुर्वेद का सामान्य परिचय, उद्भव, विकास एवं मूलभूत सिद्धान्त, आयुर्वेद के प्रमुख आचार्य– चरक, सुश्रुत, वाग्भट एवं माधव।	15
Unit II	चरक संहिता एवं अष्टांग आयुर्वेद की उपादेयता।	15
Unit III	संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद, आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास।	15
Unit IV	आयुर्वेद की वर्तमान काल में उपयोगिता एवं महत्त्व।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. चरक संहिता– ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2005।
2. अष्टांग हृदयम–, वाग्भट, ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्टान दिल्ली, 2014।
3. आयुर्वेद का बृहद् इतिहास– अत्रिदेव विद्यालंकार, हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, द्वितीय संस्करण, 1976।
4. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास– बलदेव उपाध्याय, (सप्तदश खण्ड),उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ, 2006।
5. आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास– आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखम्बा वाराणसी।
6. आयुर्वेद इतिहास एवं परिचय– विद्याधर शुक्ल एवं रवि दत्त त्रिपाठी,चौखम्बा वाराणसी।
7. संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद– अत्रिदेव विद्यालंकार, भारतीय ज्ञानपीठ काशी, प्रथम संस्करण, 1956।
8. वेदों में आयुर्वेद – डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही, 1993।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अन्य सभी विभाग एवं संकाय

Group II

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VII** **Paper-II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-GE107	**Course Title: अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवं साहित्यकार**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे।
2. आधुनिक संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे।
3. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे।
4. अर्वाचीन पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे।
5. उत्तराखण्ड के प्रमुख संस्कृत साहित्य एवं साहित्यकार परिचित होंगे।

Credits: 4	**सामान्य ऐच्छिक**	**GE 7 General Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30=40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य का इतिहास–उन्नीसवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी तक।	15
Unit II	अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य के विविध आयाम एवं अर्वाचीन काव्यलक्षण–ग्रन्थ परिचय।	10
Unit III	अर्वाचीन प्रमुख संस्कृतसाहित्यकार एवं रचनाएँ– पं0 अम्बिकादत्त व्यास, आचार्यविश्वेश्वर पाण्डेय, पण्डिता क्षमाराव, कविवरसत्यव्रत शास्त्री, डा0ब्रह्मानन्द शुक्ल, श्रीधर भास्कर वर्णेकर, प्रो0 हरिनारायण दीक्षित, मथुरा प्रसाद दीक्षित ।	15
Unit IV	अर्वाचीन प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं का परिचय– दूर्वा, सागरिका, अजस्रा, अर्वाचीनसंस्कृतम्, संस्कृतमञ्जरी, शोधभारती, सारस्वतीसुषमा, वैदिक वाग्ज्योति, वाक्, हरिप्रभा।	15
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास– पद्मभूषणपं0 बलदेव उपाध्याय,उ0 प्र0 सं0 सं0 लखनऊ।
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास– सप्तम खण्ड–सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
3. आधुनिक संस्कृत नाटक– रामजी उपाध्याय।
4. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. काव्यालंकारकारिका– प्रोफेसर रेवाप्रसाद द्विवेदी,
6. साहित्यविमर्श– प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी,शिवेश प्रकाशन इलाहाबाद।
7. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास– प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी,सम्पूर्णानन्द संस्कृतविश्वविद्यालय,वाराणसी।
8. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
9. अभिराजयशोभूषणम्– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

Group- III

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VII Paper-II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-GE107	**Course Title: अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य का इतिहास**		
Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि 1. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे। 2. आधुनिक संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे। 3. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे। 4. अर्वाचीन पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे। 5. उत्तराखण्ड के प्रमुख संस्कृत साहित्य एवं साहित्यकार परिचित होंगे।			
Credits: 4	**सामान्य ऐच्छिक**	**GE 7 General Electives**	
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30=40**	
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य का इतिहास–उन्नीसवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी तक।	15
Unit II	प्रमुख आधुनिक संस्कृत महाकाव्य, आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रमुख नवीन विधाएँ।	10
Unit III	अर्वाचीन प्रमुख संस्कृतसाहित्यकार– पं0 अम्बिकादत्त व्यास, आचार्यविश्वेश्वर पाण्डेय, पण्डिता क्षमाराव, कविवरसत्यव्रत शास्त्री, डा0ब्रह्मानन्द शुक्ल, श्रीधर भास्कर वर्णेकर, प्रो0 हरिनारायण दीक्षित, मथुरा प्रसाद दीक्षित, अभिराज राजेन्द्र मिश्र, राधेश्याम गंगवार। । ।	15
Unit IV	अर्वाचीन प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं का परिचय– दूर्वा, सागरिका, अजस्रा, अर्वाचीनसंस्कृतम्, संस्कृतमञ्जरी, शोधभारती, सारस्वतीसुषमा, वैदिक वाग्ज्योति, वाक्, हरिप्रभा।	15
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास– पद्मभूषणपं0 बलदेव उपाध्याय।
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास– सप्तम खण्ड–सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
3. आधुनिक संस्कृत नाटक– रामजी उपाध्याय।
4. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. काव्यालंकारकारिका– प्रोफेसर रेवाप्रसाद द्विवेदी।
6. साहित्यविमर्श– प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी।
7. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास– प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी, सागर विश्वविद्यालय,सागर।
8. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester:VII Paper-II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-GE108	**Course Title: आर्षकाव्य– रामायण**		
Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि 1. रामायण का सामान्य परिचय, नैतिक शिक्षा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। 2. रामायण में निहित सामाजिक चेतना की शिक्षा से सुपरिचित हो सकेंगे।			
Credits: 4	**सामान्य ऐच्छिक**	**GE 8 General Electives**	
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 50–35 अंक बाह्य मूल्यांकन / 15 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30=40**	
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	महर्षिवाल्मीकि एवं वाल्मीकिप्रणीतरामायण का परिचय।	15
Unit II	काण्डों का प्रतिपाद्य विषय।	15
Unit III	रामायण का माहात्म्य एवं प्रमुखपात्रों के चरित्र से प्राप्त शिक्षा।	15
Unit IV	रामायण के आदित्यहृदयस्तोत्र का अर्थ एवं महत्त्व।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम्– सम्पादकमण्डल– जी0ए0 भट्ट, पी0एल0 वैद्य, डी0आर0 मनकण्ड आदि।
2. रामकथा उत्पत्ति और विकास– कामिलबुल्केकृता।
3. श्रीमद्वाल्मीकीय कृत रामायणम्– गीता प्रेस गोरखपुर।
4. वाल्मीकि रामायण में मूल्य चेतना– डॉ0 बृजेश, नाग प्रकाशन।
5. मूल रामायण– डॉ0 राम प्रकाश सारस्वत, महालक्ष्मी प्रकाशन।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VIII** **Paper-II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-GE109	**Course Title:उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. उत्तराखण्ड संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे।
2. उत्तराखण्ड संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे।
3. उत्तराखण्ड संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे।
4. उत्तराखण्ड पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे।
5. उत्तराखण्ड के प्रमुख संस्कृत साहित्य एवं साहित्यकार परिचित होंगे।

Credits: 4 सामान्य ऐच्छिक	**GE 9 General Electives**
Max. Marks:श्रेयांक–4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30=40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	उत्तराखण्ड के 19 वीं शताब्दी के संस्कृतसाहित्यकार–परिचय।	15
Unit II	उत्तराखण्ड के 20वीं शताब्दी से लेकर अद्यतन के संस्कृतसाहित्यकार–परिचय।	15
Unit III	उत्तराखण्ड में प्रकाशित संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का महत्त्व।	15
Unit IV	उत्तराखण्ड–संस्कृतसाहित्य की विधाओं का परिचय।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. आधुनिक संस्कृतसाहित्य का इतिहास– पद्मभूषणपं0 बलदेव उपाध्याय।
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास– सप्तम खण्ड–सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
3. आधुनिक संस्कृत नाटक– रामजी उपाध्याय।
4. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
5. संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– पद्मश्री कपिल देव द्विवेदी,संस्कृतसाहित्य संस्थान,37 कचेहरि मार्ग ।इलाहाबाद।
6. साहित्यविमर्श– प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी।
7. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास– प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी। सागर विश्वविद्याालय प्रकाशन।
8. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
9. अभिराजयशोभूषण्म्– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
10. उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार अतीत से वर्तमान– प्रो0 शालिमा तबस्सुम, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

Group- III

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VIII** **Paper-III**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-GE109	**Course Title: उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. उत्तराखण्ड संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे।
2. उत्तराखण्ड संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे।
3. उत्तराखण्ड संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे।
4. उत्तराखण्ड पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे।
5. उत्तराखण्ड के प्रमुख संस्कृत साहित्य एवं साहित्यकार परिचित होंगे।

Credits: 4	सामान्य ऐच्छिक	**GE 9 General Electives**
Max. Marks:श्रेयांक–4 (पूर्णांकः 100–75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30=40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	उत्तराखण्ड के 19 वीं शताब्दी के संस्कृतसाहित्यकार–परिचय।	15
Unit II	उत्तराखण्ड के 20वीं शताब्दी से लेकर अद्यतन के संस्कृतसाहित्यकार–परिचय।	15
Unit III	उत्तराखण्ड–संस्कृतसाहित्य की विधाओं का परिचय।	15
Unit IV	उत्तराखण्ड में प्रकाशित संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का परिचय एवं महत्त्व ।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास– पद्मभूषणपं0 बलदेव उपाध्याय।
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास– सप्तम खण्ड–सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
3. आधुनिक संस्कृत नाटक– रामजी उपाध्याय।
4. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
5. काव्यालंकारकारिका– प्रोफेसर रेवाप्रसाद द्विवेदी।
6. साहित्यविमर्श– प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी।
7. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास– प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी।
8. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
9. अभिराजयशोभूषण्म्– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।

10. उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार अतीत से वर्तमान– प्रो0 शालिमा तबस्सुम, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester:VIII Paper-IV**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-GE110	**Course Title: आर्षकाव्य– महाभारत**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. महाभारत का सामान्य परिचय, नैतिक शिक्षा को जान सकेंगे।
2. महाभारत में निहित सामाजिक चेतना की शिक्षा से अवगत हो सकेंगे।
3. विद्यार्थी भारतीय पौराणिक कथाओं में निहित शिक्षा से सुपरिचित होगें।
4. महाभारत की कथा में वर्णित धर्मशास्त्र की सभी सत्य की शिक्षा से विद्यार्थी अवगत होगें।

Credits: 4	**सामान्य ऐच्छिक**	**GE 10 General Electives**
Max. Marks: श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 50–35 अंक बाह्य मूल्यांकन/ 15 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30=40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	महर्षिव्यास एवं महाभारतग्रन्थ का परिचय।	05
Unit II	महाभारत के पर्वों का संक्षिप्त परिचय।	10
Unit III	महाभारत का माहात्म्य एवं प्रमुख पात्रों के चरित्र से प्राप्त शिक्षा।।	10
Unit IV	महाभारत में वर्णित विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का अर्थ एवं महत्त्व।	15
	Class Room Lectures	40
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	20
		Total- 60

Suggested Reading:

1. सम्पूर्णमहाभारत छःभागों में– साहित्याचार्य पण्डित रामनारायण दत्त शास्त्री पाण्डे; ''राम'' गीताप्रेस गोरखपुर सं0 2070।
2. महाभारत– श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्यायमण्डल।
3. महाभारत का अर्थ,डी0डी0 हर्ष, वाग्देवी प्रकाशन वीकानेर 2014।
4. संस्कृत–वाङ्मय का बृहद् इतिहास– आर्षकाव्य, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
5. संस्कृत–साहित्य का इतिहास– पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय।उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
6. महाभारत में श्रीकृष्ण का विलक्षण व्यक्तित्व– डॉ0 भुवन चन्द्र पाठक।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects

अथवा

Group- II

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: Master In *Sanskrit*		**Year: V**	**Semester:IX** **Paper- II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-GE111	**Course Title: धर्मशास्त्र– सामाजिक एवं विधिसम्बद्ध**		
Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि 1–विद्यार्थी भारतीयज्ञान परम्परा के अन्तर्गत धर्मशास्त्र से परिचित होगें। 2– वेद धर्म का मूल है जिसके अन्तर्गत मानवजीवन के सभी मूलभूत तत्त्वों का समावेश हैं। उनके अध्ययन से विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होगा। 3– विद्यार्थी सामाजिक एवं विधिसम्बन्धी व्यवस्था से अवगत होकर अपने कर्तव्यपथ पर अग्रसर होगें।			
Credits: 4	**सामान्य ऐच्छिक**	**GE 11General Electives**	
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**	
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	धर्मशास्त्र का अर्थ, क्षेत्र एवं उपयोगिता।	15
Unit II	मनुस्मृति स्मृति में सामाजिक व्यवस्था एवं महत्त्व।	10
Unit III	मनुस्मृति स्मृति में विधिसम्बन्धी व्यवस्था एवं महत्त्व।	10
Unit IV	याज्ञवल्क्य स्मृति में सामाजिक व्यवस्था एवं महत्त्व।	10
Unit V	पराशरस्मृति में सामाजिक एवं विधिसम्बन्धी व्यवस्था एवं महत्त्व।	10
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	05
		Total- 60

Suggested Reading:

1–धर्मशास्त्र का इतिहास– पी0के0 काणे वोल्यूम–1–3

2–हिन्दू संस्कृति– राधाकुमुद मुखर्जी

3–प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका– रामजी उपाध्याय

4–मनुस्मृति– चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

5–याज्ञवल्क्यस्मृति– मिताक्षरा प्रकाश संस्कृत–हिन्दी व्याख्यासहिता

6–पराशरस्मृति– चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

7–वैदिकवाङ्मय के अनुसन्धेय पक्ष– प्रो0 हरीश्वर दीक्षित,प्रकाशकविश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

8–पौराणिक धर्म एवं समाज– एस0 एन0 रॉय, इलाहाबाद,1968

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

Group- III

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: Master In *Sanskrit*		**Year: V**	**Semester:IX** **Paper- II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-GE111	**Course Title: धर्मशास्त्र– सामाजिक एवं विधिसम्बद्ध**		
Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि 1–विद्यार्थी भारतीयज्ञान परम्परा के अन्तर्गत धर्मशास्त्र से परिचित होगें। 2– वेद धर्म का मूल है जिसके अन्तर्गत मानवजीवन के सभी मूलभूत तत्त्वों का समावेश हैं। उनके अध्ययन से विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होगा। 3– विद्यार्थी सामाजिक एवं विधिसम्बन्धी व्यवस्था से अवगत होकर अपने कर्तव्यपथ पर अग्रसर होगें।			
Credits: 4	**सामान्य ऐच्छिक**	**GE 11General Electives**	
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**	
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	धर्मशास्त्र का अर्थ, क्षेत्र एवं उपयोगिता।	15
Unit II	मनुस्मृति स्मृति में सामाजिक व्यवस्था एवं महत्त्व।	10
Unit III	मनुस्मृति स्मृति में विधिसम्बन्धी व्यवस्था एवं महत्त्व।	10
Unit IV	याज्ञवल्क्य स्मृति में सामाजिक व्यवस्था एवं महत्त्व।	10
Unit V	पराशरस्मृति में सामाजिक एवं विधिसम्बन्धी व्यवस्था एवं महत्त्व।	10
	Class Room Lectures	55
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	05
		Total- 60

Suggested Reading:

1–धर्मशास्त्र का इतिहास– पी0के0 काणे वोल्यूम–1–3

2– हिन्दू संस्कृति– राधाकुमुद मुखर्जी

3– प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका– रामजी उपाध्याय

4–मनुस्मृति– चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

5–याज्ञवल्क्यस्मृति– मिताक्षरा प्रकाश संस्कृत–हिन्दी व्याख्यासहिता

6–पराशरस्मृति– चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

7–वैदिकवाङ्मय के अनुसन्धेय पक्ष– प्रो0 हरीश्वर दीक्षित,प्रकाशकविश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

8–पौराणिक धर्म एवं समाज– एस0 एन0 रॉय, इलाहाबाद,1968

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: Master In *Sanskrit*		**Year: V**	**Semester:IX Paper- II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-GE112	**Course Title: नीतिशास्त्र– राजनीतिसम्बद्ध**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1– विद्यार्थी शुक्रनीति, विदुरनीति एवं चाणक्यनीति के अध्ययन से नीतिविद्या के मूल से अवगत होगें।
2– नीतिकारों में शुक्राचार्य, विदुर एवं चाणक्य की नीतिपरक ग्रन्थों से परिचित हो जायेगें।
3– राजनीति में नीतिशास्त्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका से अवगत होकर राष्ट्र की सुरक्षा में सचेत रहेगें।
4– नीतिग्रन्थों में जीवन को सुखमय और सफल बनाने में उपयोगी सुझाव दिये गये हैं जिससे मानव व्यावहारिक बन सके।

Credits: 4 सामान्य ऐच्छिक	**GE 12General Electives**
Max. Marks:श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन/ 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	नीतिशास्त्र का उपक्रम, शुक्रनीति के रचयिता, रचनाकाल एवं शुक्रनीति के विषय का संक्षिप्त विवरण।	15
Unit II	शुक्रनीति के अनुसार नीतिशास्त्र की प्रशंसा, राजा का नीतिशास्त्र में प्रयोजन एवं धर्म की प्रशंसा, राज्योत्पत्ति ,राजा, राजा के कर्तव्य,राज्याङ्ग एवं मन्त्रीपरिषद्।	10
Unit III	विदुरनीति रचयिता, रचनाकाल एवं विदुरनीति के विषय का संक्षिप्त विवरण।	10
Unit IV	विदुरनीति के अनुसार राजा का नीतिशास्त्र में प्रयोजन एवं धर्म की प्रशंसा, राज्योत्पत्ति, राजा, राजा के कर्तव्य, राज्याङ्ग एवं मन्त्रीपरिषद्।	10
Unit V	चाणक्यनीति के रचयिता,रचनाकाल एवं चाणक्यनीति के विषय का संक्षिप्त विवरण एवं प्रासङ्गिकता	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1– नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त– वेदप्रकाश वर्मा।
2– नीतिविज्ञान के मूल– मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सौजन्य से उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
3– शुक्रनीति– हिन्दी टीका सहित : अरुण कुमार उपाध्याय
4– विदुरनीति– महाभारत उद्योगपर्व।गीताप्रेस गोरखपुर।
5– चाणक्यनीति–

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

Group II

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***Master In Sanskrit***		**Year: V**	**Semester: X** **Paper- II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-GE113	**Course Title: कौटिलीयं–अर्थशास्त्रम् (विनयाधिकरणम्)**		
Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि 1. विद्यार्थी कौटिल्य अर्थशास्त्र का उल्लेख कर सकेंगे। 2. कौटिल्य अर्थशास्त्र में वर्णित नीतियों की व्याख्या कर सकेंगे। 3. कौटिल्य अर्थशास्त्र के सर्वदेशिक हितोपदेश से परिचित हो सकेंगे। 4. अर्थशास्त्र की नीति को जान सकेंगे।			
Credits: 4	सामान्यऐच्छिक	**GE 13 General Electives**	
Max. Marks: श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन/ 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**	
Total No. of Lectures-Tutorials- Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	कौटिल्य अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय।	15
Unit II	कौटिल्य अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण के प्रथम अध्याय से पंचम अध्याय तक।	15
Unit III	कौटिल्य अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण के षष्ठ अध्याय से दशम अध्याय।	15
Unit IV	कौटिल्य अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण के प्रारम्भिक दश अध्यायों में प्रयुक्त नीतियों का अध्ययन।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. कौटिलीय–अर्थशास्त्र–श्री वाचस्पति।
2. कौटिलीयं– अर्थशास्त्र– पाण्डेय रामतेज शास्त्री, पण्डित–पुस्तकालय, वाराणसी।
3. कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम् (प्रथममधिकरणम्)– डॉ0 मिथिलेश पाण्डेय, युवराज पब्लिकेशन, आगरा।
4. कौटिल्य अर्थशास्त्र : एक परिशीलन– प्रो0 पुष्पेन्द्र कुमार, नाग प्रकाशन, दिल्ली।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

Group- III

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***Master In Sanskrit***		**Year: V**	**Semester: X** **Paper- II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-GE113	**Course Title: कौटिलीयं–अर्थशास्त्रम् (विनयाधिकरणम्)**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थीं कौटिल्य अर्थशास्त्र का उल्लेख कर सकेंगे।
2. कौटिल्य अर्थशास्त्र में वर्णित नीतियों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. कौटिल्य अर्थशास्त्र के सर्वदेशिक हितोपदेश से परिचित हो सकेंगे।
4. अर्थशास्त्र की नीति को जान सकेंगे।

Credits: 4	सामान्यऐच्छिक	**GE 13 General Electives**
Max. Marks: श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन/ 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials- Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	कौटिल्य अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय।	15
Unit II	कौटिल्य अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण के प्रथम अध्याय से पंचम अध्याय तक।	15
Unit III	कौटिल्य अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण के षष्ठ अध्याय से दशम अध्याय।	15
Unit IV	कौटिल्य अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण के प्रारम्भिक दश अध्यायों में प्रयुक्त नीतियों का अध्ययन।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. कौटिलीय–अर्थशास्त्र–श्री वाचस्पति।
2. कौटिलीयं– अर्थशास्त्र– पाण्डेय रामतेज शास्त्री, पण्डित–पुस्तकालय, वाराणसी।
3. कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम् (प्रथममधिकरणम्)– डॉ0 मिथिलेश पाण्डेय, युवराज पब्लिकेशन, आगरा।
4. कौटिल्य अर्थशास्त्र : एक परिशीलन– प्रो0 पुष्पेन्द्र कुमार, नाग प्रकाशन, दिल्ली।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***Master In Sanskrit***		**Year: V**	**Semester: X** **Paper- II**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-GE114	**Course Title: पातञ्जलयोगसूत्र**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी प्राचीन ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत योगसूत्र से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थी योग के अध्ययन से शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ होंगे।
3. विद्यार्थी स्वस्थ्य एवं निरोग होकर समाज एवं देश की सेवा में तत्पर रहेंगे।

Credits: 4 सामान्य ऐच्छिक	**GE 14 General Electives**
Max. Marks: श्रेयांक– 4 (पूर्णांकः 100– 75 अंक बाह्य मूल्यांकन / 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials- Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	महर्षि पतंजलि परिचय एवं योगसूत्र का प्रतिपाद्य।	10
Unit II	योगसूत्र– समाधिपाद– चित्तभूमियॉं, चित्तवृत्तियॉं, प्रमाणमीमांसा, वृत्तिनिरोध के उपाय, ईश्वर का स्वरूप, सम्प्रज्ञात समाधि एवं असम्प्रज्ञात समाधि।	15
Unit III	योगसूत्र– साधनपाद– क्रियायोग, पंचक्लेश, अष्टांगयोग।	10
Unit IV	योगसूत्र– विभूतिपाद– धारणा, ध्यान, समाधि।	10
Unit V	योगसूत्र– कैवल्यपाद– पंचविध सिद्धियॉं, जात्यन्तर परिणाम, चतुर्विध कर्म, जीवनमुक्ति, कैवल्य स्वरूप।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	55 05 Total- 60

Suggested Reading:

1. भारतीय दर्शन का इतिहास– डॉ0 के0एस0दास
2. योगदर्शनम्– पतञ्जलिकृत योगदर्शनम् व्यासभाष्य सहित हिन्दी अनुवादक हरिहरानन्द आरण्य, सम्पादक रामशंकर भट्टाचार्य दिल्ली, मोतीलाल बनारसी 2003।
3. पतंजलि योगसूत्र– हिन्दी : बी0 के0 एस0 अय्यंगार
4. योगदर्शन– कैवल्य शास्त्र साधक की कलम से–कौशल कुमार
5. आसन एवं योग विज्ञान– श्रीदेसराज, भारतीय योग संस्थान दिल्ली।
6. योग से रोगनिवारण– स्वामी शिवानन्द सरस्वती, कलकत्ता
7. पतञ्जलि योग प्रदीप– स्वामी ओमानन्द, गीता प्रेस गोरखपुर।
8. पातंजलयोगदर्शनम्– व्याख्याकार–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
9. पातंजलयोगदर्शन– व्याख्याकार– डॉ0 अजीत कुमार, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

(AEC)

Ability Enhancement Course

DEPARTMENT OF SANSKRIT

ABILITY ENHANCEMENT COURSE (AEC)

Department of Sanskrit
Kumaun University, Nainital

ABILITY ENHANCEMENT COURSE (AEC) PREPARED FOR THE POOL OF COURSE

Semster	Paper Title in multi study –Sanskrit	Theory/ Practial/Practice	credits
I	संस्कृतभाषा एवं साहित्य	Theory/Practice	2
II	संस्कृतव्याकरण–संज्ञा	Theory/ Practice	2
III	संस्कृतव्याकरण–सन्धि एवं उपसर्ग परिचय	Theory/ Practice	2
IV	संस्कृतव्याकरण–कारक एवं प्रत्यय	Theory/ Practice	2

Department of Sanskrit

ABILITY ENHANCEMENT COURSE (AEC)

No. of Hours-30

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
AEC- संस्कृतभाषा एवं साहित्य	2	1	0	1	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1. भाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
2. भाषा के माध्यम से साहित्य का अवबोध कराना।
3. भाषा और साहित्य की विशेषताओं से अवगत कराना।
4. साहित्य सृजन के प्रति रुचि उत्पन्न कराना।
5. भाषा अध्ययन से भाषा की सुगम, संक्षिप्त और अर्थपूर्ण शब्दों के निर्माण में कुशलता प्राप्त कराना।

अध्ययन की उपलब्धि

1. भाषा का अध्ययन करने से भाषा की उत्पति एवं उसके विकास के कारणों की व्याख्या कर सकेगें ।
2. भाषा की परिभाषा से परिचित होगें।
3. साहित्य के अध्ययन से उसकी विधाओं से परिचय प्राप्त कर सकेगें।
4. वैदिक और लौकिक साहित्य की विशेषताओं से परिचित हो सकेगें।
5. भाषा और साहित्य के अध्ययन से अर्थपूर्ण शब्दों में निर्माण में कुशल बनेगें।

Unit	Topic
Unit I	संस्कृत भाषा का स्वरुप एवं लिपिज्ञान। संस्कृत वाक्य एवं पद रचना। वर्णोच्चारण प्रक्रिया एवं प्रकार । संख्या परिचय।
Unit II	संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय : भाग–01 : भाग–02

Suggested Reading:

1– रचनानुवादकौमुदी– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2– संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ0 बलदेव उपाध्याय एवं डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
3– संस्कृत साहित्य का सरल इतिहास– डॉ0 पाठक एवं डॉ0 सीरौटिया, युवराज पब्लिकेशन्स, आगरा।
4– आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ0 बलदेव उपाध्याय एवं डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
5– अर्वाचीन संस्कृत साहित्य– डॉ0 श्रीधर भास्कर वर्णेकर, मॉडन बुक, स्टोर्स अकोला नागपुर।
6– संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास (चार भाग में)– डॉ0 राधावल्लभ त्रिपाठी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली।
7– भाषा एवं भाषा विज्ञान : एक दृष्टि– शारदा चतुर्वेदी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली।
8– भाषाविज्ञान– श्री भगवान तिवारी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली।

Note :

Examination: Subject to University' directions

Department of Sanskrit

ABILITY ENHANCEMENT COURSE (AEC)

No. of Hours-30

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
AEC- **संस्कृतव्याकरण–संज्ञा**	2	1	0	1	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1. संस्कृतभाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेंगी।
2. संस्कृतभाषा को स्नातक–कलावर्ग के अतिरिक्त वाणिज्य एवं विज्ञानवर्ग के विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं।
3. संस्कृतभाषा के ज्ञान से नैतिकमूल्यों, आध्यात्मिकमूल्यों से युक्त ग्रन्थों के अध्ययन में सुगमता प्राप्त होगी।
4. मूल्यपरक ग्रन्थों के बोध से अपने जीवन का लक्ष्य पूर्ण करने समर्थ होगें।
5. संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं।
6. संस्कृतसम्भाषण से विद्याार्थियों की वाक्शक्ति का विकास होगा।

अध्ययन की उपलब्धि

1. संस्कृतभाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेंगी।
2. संस्कृतभाषा को स्नातक–कलावर्ग के अतिरिक्त वाणिज्य एवं विज्ञानवर्ग के विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं।
3. संस्कृतभाषा के ज्ञान से नैतिकमूल्यों, आध्यात्मिकमूल्यों से युक्त ग्रन्थों के अध्ययन में सुगमता प्राप्त होगी।
4. मूल्यपरक ग्रन्थों के बोध से अपने जीवन का लक्ष्य पूर्ण करने समर्थ होगें।
5. संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं।
6. संस्कृतसम्भाषण से विद्याार्थियों की वाक्शक्ति का विकास होगा।

Unit	Topic
Unit I	लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार माहेश्वरसूत्र, प्रत्याहार एवं स्वरभेद, उच्चारणस्थान एवं प्रयत्न। सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक कार्य।
Unit II	परिभाषा–इत्, लोप, उदात, अनुदात, स्वरित, अनुनासिक, सवर्ण, पद, संयोग, संहिता, दीर्घ, गुण, यण्, प्रगृह्य, वृद्धि, टि, उपधा, प्रातिपदिक, संप्रसारण, निष्ठा, आदि।

Suggested Reading:

1– प्रारम्भिकरचनानुवादकौमुदी– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी–35वॉ संस्करण 2014।
2– प्रौढ रचनानुवादकौमुदी– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। 7वॉ संस्करण 1991।
3– संस्कृत भाषा– डॉ0 भवानी दत्त काण्डपाल, डॉ0 हेमवती न0 पनेरु तथा डॉ0 हेमन्त जोशी–अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी।
4– लघुसिद्धान्तकौमुदी– धरानन्द शास्त्री(व्या0), मूल एवं हिन्दी व्याख्या, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
5– बृहद् अनुवाद चन्द्रिका– चक्रधर नौटियाल हंस, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6– भाषा प्रवेशः–प्रथमः भागः सम्पादकाः– डॉ0 चाँदकिरण सलूजा, डॉ0 विश्वास, गिरिश चन्द्र तिवारी–संस्कृतभारती नवदेहली।

Note :

Examination: Subject to University' directions

Department of Sanskrit

ABILITY ENHANCEMENT COURSE (AEC)

No. of Hours-30

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
AEC- संस्कृतव्याकरण–सन्धि एवं उपसर्ग परिचय	2	1	0	1	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1. संस्कृतभाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेंगी।
2. संस्कृतभाषा को स्नातक–कलावर्ग के अतिरिक्त वाणिज्य एवं विज्ञानवर्ग के विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं।
3. संस्कृतभाषा के ज्ञान से नैतिकमूल्यों, आध्यात्मिकमूल्यों से युक्त ग्रन्थों के अध्ययन में सुगमता प्राप्त होगी।
4. मूल्यपरक ग्रन्थों के बोध से अपने जीवन का लक्ष्य पूर्ण करने समर्थ होगें।
5. संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं।

अध्ययन की उपलब्धि

1. संस्कृतभाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेंगी।
2. संस्कृतभाषा को स्नातक–कलावर्ग के अतिरिक्त वाणिज्य एवं विज्ञानवर्ग के विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं।
3. संस्कृतभाषा के ज्ञान से नैतिकमूल्यों, आध्यात्मिकमूल्यों से युक्त ग्रन्थों के अध्ययन में सुगमता प्राप्त होगी।
4. मूल्यपरक ग्रन्थों के बोध से अपने जीवन का लक्ष्य पूर्ण करने समर्थ होगें।
5. संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं।

Unit	Topic
Unit I	सन्धि परिचय, सन्धि भेद एवं उपयोगिता, सन्धिप्रकरण–अच् सन्धि–दीर्घ, गुण, यण्, वृद्धि, अयादि, पूर्वरूप एवं पररूप सन्धि।
Unit I	हल् सन्धि–श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व,, चर्त्व, अनुस्वार, लत्व सन्धि, विसर्ग सन्धि एवं उपसर्ग परिचय।

Suggested Reading:

1– रचनानुवादकौमुदी– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2– प्रौढ रचनानुवादकौमुदी– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3– संस्कृत भाषा– अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी।
4– लघुसिद्धान्तकौमुदी– धरानन्द शास्त्री(व्या0), मूल एवं हिन्दी व्याख्या, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

5– बृहद् अनुवाद चन्द्रिका– चक्रधर नौटियाल हंस, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6– भाषा प्रवेशः–प्रथमः भागः सम्पादकाः– डॉ0 चाँदकिरण सलूजा, डॉ0 विश्वास, गिरिश चन्द्र तिवारी–संस्कृतभारती नवदेहली।
7– वाच्य परिवर्तन– डॉ0 मधुर लता द्विवेदी– युवराज पब्लिकेशन्स, आगरा।
8– संस्कृतस्वाध्यायः प्रथमा दीक्षा– सम्भाषणम्–वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नव देहली।
9– संस्कृतस्वाध्यायः प्रथमा दीक्षा– वाक्यव्यवहारः–वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नव देहली।
10– संस्कृतस्वाध्यायःप्रथम दीक्षा–वाक्यविस्तरः–वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान,नव देहली।
11– प्रारम्भिक संस्कृत वाक्य संग्रह– सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्, वाराणसी।

Note :

Examination: Subject to University' directions

Department of Sanskrit

ABILITY ENHANCEMENT COURSE (AEC)

No. of Hours-30

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
AEC- संस्कृतव्याकरण–कारक एवं प्रत्यय	2	1	0	1	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1. संस्कृतभाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेंगी।
2. संस्कृतभाषा को स्नातक–कलावर्ग के अतिरिक्त वाणिज्य एवं विज्ञानवर्ग के विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं।
3. संस्कृतभाषा के ज्ञान से नैतिकमूल्यों, आध्यात्मिकमूल्यों से युक्त ग्रन्थों के अध्ययन में सुगमता प्राप्त होगी।
4. मूल्यपरक ग्रन्थों के बोध से अपने जीवन का लक्ष्य पूर्ण करने समर्थ होगें।
5. संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं।

अध्ययन की उपलब्धि

1. संस्कृतभाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेंगी।
2. संस्कृतभाषा को स्नातक–कलावर्ग के अतिरिक्त वाणिज्य एवं विज्ञानवर्ग के विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं।
3. संस्कृतभाषा के ज्ञान से नैतिकमूल्यों, आध्यात्मिकमूल्यों से युक्त ग्रन्थों के अध्ययन में सुगमता प्राप्त होगी।
4. मूल्यपरक ग्रन्थों के बोध से अपने जीवन का लक्ष्य पूर्ण करने समर्थ होगें।
5. संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं।

Unit	Topic
Unit I	कारक परिचय– कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान एवं अधिकरण परिचय एवं प्रयोग, प्रत्यय प्रकरण– सुबन्त, तिङन्त एवं स्त्रीप्रत्यय परिचय एवं प्रयोग।
Unit II	कृत्प्रत्यय–क्त्वा, तुमुन्, यत्, क्त, क्तवतु, ल्यप्, शतृ, शानच्, तव्यत्, अनीयर्, प्रयोग सहित।

Suggested Reading:

1– रचनानुवादकौमुदी– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2– प्रौढ रचनानुवादकौमुदी– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, भैरवनाथ विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3– संस्कृत भाषा– अंकित प्रकाशन, एवं हल्द्वानी।

4– लघुसिद्धान्तकौमुदी– धरानन्द शास्त्री (व्या0), मूल एवं हिन्दी व्याख्या, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
5– बृहद् अनुवाद चन्द्रिका– चक्रधर नौटियाल हंस, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6– भाषा प्रवेशः–प्रथमः भागः सम्पादकाः– डॉ0 चाँदकिरण सलूजा, डॉ0 विश्वास, गिरिश चन्द्र तिवारी–संस्कृतभारती नवदेहली।
7– वाच्य परिवर्तन– डॉ0 मधुर लता द्विवेदी– युवराज पब्लिकेशन्स, आगरा।
8– संस्कृतस्वाध्यायः प्रथमा दीक्षा– सम्भाषणम्–वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नव देहली।
9– संस्कृतस्वाध्यायः प्रथमा दीक्षा– वाक्यव्यवहारः–वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नव देहली।
10– संस्कृतस्वाध्यायःप्रथम दीक्षा–वाक्यविस्तरः–वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान,नव देहली।
11– प्रारम्भिक संस्कृत वाक्य संग्रह– सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्, वाराणसी।

Note :

Examination: Subject to University' directions

----------**0**----------

(SEC)

Skill Enhancement Course

DEPARTMENT OF SANSKRIT

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

Department of Sanskrit
Kumaun University, Nainital

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC) PREPARED FOR THE POOL OF COURSE

Semster	Paper Title in multi study –Sanskrit	Theory/ Practical/Practice	Credits
I	नित्यनैमित्तिक अनुष्ठान	Theory/ Practical	**2**
II	संस्कृत संगणक	Theory/ Practice	**2**
III	ज्योतिषशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त	Theory	**2**
IV	संस्कृत छन्द एवं संगीत	Theory/ Practice	**2**
V	रंगमंच के सिद्धान्त	Theory/ Practice	**2**
VI	भारतीय वास्तुशास्त्र	Theory/ Practial	**2**

Department of Sanskrit

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

No. of Hours-30

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
SEC- नित्यनैमित्तिक अनुष्ठान	2	1	0	1	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1. विद्यार्थी को भारतीय पारम्परिक कर्मकाण्ड एवं सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराना।
2. नित्य नैमित्तिक अनुष्ठान विधि को जानकर जीवन को नियमबद्ध एवं आचरणशील बनाना।
3. भारतीय कर्मकाण्ड के प्रामाणिक शास्त्रीय रूप से परिचित कराना।
4. सामान्य अनुष्ठान सम्पन्न कराने योग्य कुशल और पौरोहित्य कर्म विशारद् बनाना।
5. आत्मनिर्भर एवं उन्नतभारत की संकल्पना को साकार करने में सक्षम बनाना।

अध्ययन की उपलब्धि

1. विद्यार्थी भारतीय पारम्परिक कर्मकाण्ड एवं सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित होंगे।
2. नित्यनैमित्तिक अनुष्ठान से स्वयं और समाज को सुसंयत बनाने में समर्थ होगें।
3. भारतीय कर्मकाण्ड के प्रामाणिक शास्त्रीयरूप से परिचित होकर उसकी व्यावहारिक उपयोगिता को समझ सकेंगे।
4. पौरोहित्यकर्म विशारद् बनेंगे।
5. उन्नतभारत की संकल्पना को साकार करने में सक्षम एवं आत्मनिर्भर बनेंगे।

Unit	Topic
Unit I	नित्यनैमित्तिक परिचय, पञ्चोपचार पूजन (प्रातरुत्थान, स्नान, संध्या, तर्पण तथा पञ्चयज्ञ), पञ्चोपचार से सम्बन्धित मन्त्रों अथवा श्लोकों का अध्ययन एवं अभ्यास।
Unit II	नवग्रह शान्ति, प्राग्जन्म तथा जातकर्म संस्कार, अन्नप्राशन तथा चौलकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह संस्कार, गृहारम्भ एवं गृहप्रवेश आदि मन्त्रों अथवा श्लोकों का अध्ययन एवं अभ्यास।

Suggested Rading:

1. हिन्दू संस्कार, राजबली पांडे चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1995।
2. धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, अर्जुन चौबे, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ।

3. संस्कार प्रकाश, भवानी शंकर त्रिवेदी, लाल बहादुर शास्त्री केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली।
4. पौरोहित्यकर्म प्रशिक्षक, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
5. नित्यकर्म पूजा प्रकाश, गीता प्रेस गोरखपुर।
6. धर्मशास्त्र का इतिहास, पांडुरंग वामन काणे, (अनु0) अर्जुन चौबे कश्यप, प्रथम भाग, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, 1973।

Note :

Examination: Subject to University' directions

Department of Sanskrit

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

No. of Hours-30

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
SEC- संस्कृत सङ्गणक	2	1	0	1	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1. विद्यार्थी को सङ्गणक का सामान्य ज्ञान प्राप्तकर, अधिगम क्षमता में वृद्धि कराना।
2. E- Content एवं डिजिटल लाइब्रेरी का उपयोग करने में समर्थ बनाना।
3. संस्कृत भाषा और साहित्य के नित्य–नवीन अन्वेषण को खोज पाने तथा उससे स्व–ज्ञान कोष में वृद्धि कराना।
4. सङ्गणक के प्रयोग के माध्यम से संस्कृत ज्ञान के प्रचार प्रसार करने में कुशल बनाना।
5. पारम्परिक एवं वैश्विक ज्ञान में सामञ्जस्य बनाकर ज्ञान की अभिवृद्धि करने एवं जीविकोपार्जन के नए मार्ग खोजने का कौशल विकसित करना।

अध्ययन की उपलब्धि

1. विद्यार्थी सङ्गणक का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर, अधिगम क्षमता में वृद्धि हेतु इसका उपयोग करने में सक्षम होंगे।
2. E- Content एवं डिजिटल लाइब्रेरी का उपयोग करने में समर्थ होंगे।
3. संस्कृत भाषा और साहित्य के नित्य–नवीन अन्वेषण को खोज तथा उससे स्व–ज्ञान कोष में वृद्धि के योग्य होंगे।
4. सङ्गणक के प्रयोग के माध्यम से संस्कृत ज्ञान के प्रचार प्रसार करने में कुशल बनेंगे।
5. पारम्परिक एवं वैश्विक ज्ञान में सामञ्जस्य बनाकर ज्ञान की अभिवृद्धि करने एवं जीविकोपार्जन के नए मार्ग खोजने का कौशल विकसित होगा।

Unit	Topic
Unit I	सङ्गणक का सामान्य परिचय, संस्कृत की दृष्टि से सङ्गणक की उपयोगिता, विभिन्न उपकरण(सॉफ्टवेयर)–माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, माइक्रोसॉफ्ट पावरप्वाइंट, सङ्गणक में संस्कृत–हिन्दी लेखन हेतु उपयोगी उपकरण (टूल्स)–गूगल इनपुट टूल, गूगल असिस्टेंट एवं वॉइस टाइपिंग।
Unit II	अन्तर्जाल (इंटरनेट) का प्रयोग एवं वेब सर्च– ई बुक्स, ई रिसर्च जनरल, ई मैग्जीन। संचार माध्यम से (ऑनलाइन) शिक्षण–प्रशिक्षण का आधार (टीचिंग लर्निंग प्लेटफॉर्म) –जूम, मीट एवं शोध आधार–(रिसर्च प्लेटफार्म)–स्वयं, मूक, ई–पाठशाला, शोधगङ्गा, गूगल स्कॉलर आदि।

Suggested Reading:

1. कम्प्यूटर का परिचय, गौरव अग्रवाल, शिवा प्रकाशन, इंदौर।
2. कम्प्यूटर फंडामेंटल, पी0के0 सिन्हा, बी0पी0बी0 पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, सुमिता अरोरा, धनपत राय पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. कम्प्यूटर : सामान्य परिचय – डॉ0 शोभा भारद्वाज– युवराज पब्लिकेशन्स, आगरा।
5. कम्प्यूटर : मौलिक सिद्धान्त– डॉ0 शोभा भारद्वाज– युवराज पब्लिकेशन्स, आगरा।

Note :

Examination: Subject to University' directions

Department of Sanskrit

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

No. of Hours-30

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Theory		
SEC- ज्योतिशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त	2	1	0	1	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1. भारतीय प्राचीन ज्ञान के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना।
2. भारतीय ज्योतिषशास्त्र का सामान्य ज्ञान प्राप्त कराना
3. ज्योतिष के विभिन्न सिद्धान्तों के माध्यम से विश्लेषण क्षमता जाग्रत करना।
4. पंचागं अवलोकन एवं निर्माण कौशल को विकसित करना।

अध्ययन की उपलब्धि

1. भारतीय प्राचीन ज्ञान के प्रति अभिरूचि उत्पन्न होगी।
2. भारतीय ज्योतिषशास्त्र का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. ज्योतिष के विभिन्न सिद्धान्तों के माध्यम से विश्लेषण क्षमता जाग्रत होगी।
4. पंचागं अवलोकन एवं निर्माण कौशल का विकास होगा।

Unit	Topic
Unit I	ज्योतिषशास्त्र का सामान्य परिचय, उद्भव एवं विकास– वेदांग का परिचय, ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व, ज्योतिषशास्त्र परम्परा एवं विकास। ज्योतिष चन्द्रिका–कृतिकार का परिचय, ज्योतिषचन्द्रिका का महत्त्व।
Unit II	ज्योतिष चंद्रिका– प्रतिपाद्यविषय–कालादि की परिभाषा, दिनों के प्रकार, दिनों के नाम, मासों के प्रकार, नक्षत्र एवं सावन मास, मासों के नाम,अधिकमास (मलमास) का लक्षण, तिथियों के नाम, योगों के नाम, नक्षत्रों के नाम, राशि की परिभाषा एवं नाम आदि।

Suggested Reading:

1. ज्योतिष चंद्रिका, रेवती रमण शर्मा, (संपा) कान्ता भाटिया, भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली।
2. ज्योतिर्विज्ञानसन्दर्भसमालोचनिया, प्रो0 बृजेशकुमार शुक्ल, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
3. बृहत् संहिता, अच्युतानन्द झा (अनु0), चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

4. बृहत् संहिता, राधाकृष्णन भट्ट (अनु0), मोतीलाल बनारसी दास वॉल्यूम 1 और 2, दिल्ली।
5. भारतीय ज्योतिष, शंकर बालकृष्ण दीक्षित शिवनाथ झारखंडी (अनु0), हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश।
6. भारतीय ज्योतिष परिचय, सर्वनारायण झा, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, शास्त्री, नई दिल्ली।
7. ब्रह्माड एवं सौर परिवार, त्रिपाठी देवी प्रसाद, दिल्ली।
8. भुवन कोश, त्रिपाठी देवी प्रसाद, दिल्ली।
9. ज्योतिष के आधारभूतत्त्व एवं ज्योतिषचन्द्रिका–सम्पादक व्याख्या0 गिरीश चन्द्र पन्त, इन्दु प्रकाशन, दिल्ली।
10. ज्योतिषरुद्रप्रदीपः– पण्डितरुद्रदेव जोशी कृत– सम्पादक एवं व्याख्याकार प्रो0 जगन्नाथ जोशी–मुद्रक–कपिल कॉम्पलैक्स, मुखानी, हल्द्वानी।

Note :

Examination: Subject to University' directions

Department of Sanskrit

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

No. of Hours-30

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
SEC- संस्कृत छन्द एवं संगीत	2	1	0	1	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1. छन्द शब्द से परिचय कराना।
2. आचार्य पिगंल के जीवनवृत्त, कर्तृत्व एवं जन्मस्थान से परिचित कराना।
3. छन्दशास्त्र ग्रन्थ की विषयवस्तु से परिचित कराना।
4. छन्दसूत्र की प्रमुख टीकाओं तथा भाष्यों से परिचित कराना।
5. छन्द एवं संगीत का सामन्जस्य बोध कराना।

अध्ययन की उपलब्धि

1. छन्दशास्त्र के ज्ञान की आवयश्कता से परिचित हो सकेगें।
2. वैदिकमन्त्रों के उच्चारण के लिये छन्द की अनिवार्यता से परिचित हो सकेगें।
3. लौकिक छन्दों से परिचित होकर साहित्य में उनकी उपादेयता का बोध करेगें।
4. छन्द में प्रयुक्तशब्दावली से परिचित होगें।
5. छन्द एवं संगीत के सम्बन्ध से परिचित होकर साहित्य को गतिशीलता प्रदान होगी।

Unit	Topic
Unit I	छन्दशास्त्र का परिचय, आचार्य पिगंल का परिचय, छन्द एवं संगीत का परस्पर सम्बन्ध, छन्दों का महत्त्व तथा वर्णादि विचार, लघु–गुरु विचार एवं वैदिक–लौकिक छन्दों की उपयोगिता।
Unit II	प्रमुख वैदिक छन्दों की परिभाषा, उदाहरण एवं गान पद्धति– गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् एवं जगती। प्रमुख लौकिक छन्दों की परिभाषा, उदाहरण एवं गान पद्धति– अनुष्टुप्, आर्या, वंशस्थ, भुजंगप्रयात, सृग्विणी, वंसन्ततिलका, हरिगीतिका, मालिनीय, शिखरिणी एवं मन्दाक्रान्ता।

Suggested Reading:

1. वृत्तरत्नाकरः– केदारभट्ट–संपादक धरानन्द शास्त्री, मोती लाल बनारसी दास दिल्ली।
2. छन्दोमञ्जरी– जगन्नाथ शास्त्री तैलङ्ग, भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी।
3. सुवृत्तलिक– डॉ0 ब्रजमोहन, चौखम्बा संस्कृत सीरिज ऑफिस, वाराणसी।
4. श्रुतबोध– श्री कनकलाल ठक्कुर एवं ब्रह्मशंकर मिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

Note :

Examination: Subject to University' directions

Department of Sanskrit

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

No. of Hours-30

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
SEC- रंगमञ्च के सिद्धान्त	2	1	0	1	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को रंगमंच से परिचित कराना।
2. रंगमंच के सिद्धान्तों से परिचित कराना।
3. रंगमंच के प्रयोग में निपुणता प्राप्त कराना।

अध्ययन की उपलब्धि

1. विद्यार्थियों रंगमंच के सिद्धान्त से परिचित होकर अभिनय कला में निपुणता प्राप्त करेगें।
2. अभिनय की निपुणता से चलचित्र निर्माण में कौशल प्राप्त करेगें।
3. रंगमंच की कुशलता से उन्नत भारत अभियान में सहयोग करेगें।

Unit	Topic
Unit I	नाट्यशास्त्र का परिचय एवं प्रतिपाद्य विषय। रंगमंच के प्रकार एवं निर्माण विधि। अभिनय के प्रकार– आङ्गिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्त्विक।
Unit II	वस्तु (कथावस्तु/इतिवृत्त) नेता (नायक, नायिका आदि)। रस परिचय। एक नाटक का मंचन– मृच्छकटिकम्।

Suggested Reading:

1– संक्षिप्त नाट्यशास्त्र– राधावल्लभ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली–2008।
2– भारतीय नाट्य, स्वरूप एवं परम्परा– राधावल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत परिषद्, सागर मध्य प्रदेश–1988।
3– नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा एवं दशरूपक– हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4– नाटक और रंगमंच– डॉ0 सीताराम झा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
5– नाट्यशास्त्र– भरतमुनि (1–4 भाग) सम्पादक बाबूराम शुक्ल शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
6– भारतीय नाट्यशास्त्र की परम्परा और विश्व रंगमंच– राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
7– संस्कृत नाट्य मीमांसा– केशवराव मुसलगांवकर, परिमल प्रकाशन, दिल्ली।

Note :

Examination: Subject to University' directions

Department of Sanskrit

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

No. of Hours-30

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
SEC- भारतीय वास्तुशास्त्र	2	1	0	1	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1. भारतीय वास्तुकला का सामान्य परिचय प्राप्त करना।
2. भारतीय प्राचीन ज्ञान धरोहर को जानने समझने की जिज्ञासा उत्पन्न करना।
3. वास्तुकला के महत्त्व एवं वर्तमान उपयोगिता से परिचित कराना।
4. वास्तुशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों के ज्ञान द्वारा उनमें अनुप्रयोग का कौशल विकसित करना।

अध्ययन की उपलब्धि

1. भारतीय वास्तुकला का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगें।
2. भारतीय प्राचीन ज्ञान धरोहर को जानने समझने की जिज्ञासा उत्पन्न होगी।
3. वास्तुकला के महत्त्व एवं वर्तमान उपयोगिता से परिचित होंगे।
4. वास्तुशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों के ज्ञान द्वारा उनमें अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा।

Unit	Topic
Unit I	भारतीय वास्तुशास्त्र परिचय, प्रासङ्गिकता तथा टोडरमल्ल का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व, टोडरमल्ल विरचित वास्तुसौख्यम् प्रथम भाग– 1–13 एवं भूमि परीक्षण, दिक्साधन। निवास–द्वितीय भाग– 14–22 हेतु स्थान चयन।
Unit II	वास्तुसौख्यम् भाग 3– शुभाशुभ, वृक्षनिरुपण–31–49, शल्यशोधन 74–82। वास्तुसौख्यम् भाग 4– 83–102 एवं 107–112, षड्वर्गपरिशोधन, वास्तुचक्र, गृहवास्तु। शिलान्यास भाग–6, गृहनिरुपण–171–194। प्रयोगात्मक कार्य–फील्ड वर्क।

Suggested Reading:

1. वास्तुसौख्यम्– टोडरमल्ल– कमलाकान्त शुक्ल शिक्षण शोध प्रकाशन संस्थान वाराणसी 1996।
2. भारतीय वास्तुशास्त्र– सुखदेव चतुर्वेदी –श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली।
3. वास्तुप्रबोधिनि– विनोदशास्त्री, सीताराम शर्मा –मोती लाल बनारसी दास दिल्ली।

4. वृहद्वास्तु माला– राम मनोहर द्विवेदी, ब्रह्मानन्द त्रिपाठी चौखम्बा– सुरभारती प्रकाशन वाराणसी 2012।
5. वास्तुसार– देवी प्रसाद तिपाठी, ईस्टर बुक लिकर्स दिल्ली 2015।
6. भारतीय वास्तुशास्त्र का इतिहास– डॉ0 विद्याधर, ईस्टर्न बुक लिकर्स, नई दिल्ली।
7. वास्तुपूजापद्धतिप्रकाश– संकलन कर्ता श्रीस्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती प्रकाशक– श्री सत्य साधना कुटीरसमिति, ऋषिकेश।

Note :

Examination: Subject to University' directions

----------**0**----------

Internship/Apprenticeship/Project/Community Outreach

(IAPC)

DEPARTMENT OF SANSKRIT

बहुविषयक अध्ययन पाठ्यक्रमों हेतु स्नातक / स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की रूपरेखा एवं प्रारूप(संस्कृत विषयक पाठ्यक्रम)				
Department of Sanskrit D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital Flowchart Depicting the structure of UG&PG Multidisciplinary Program (with three Core Disciplines) **Under Graduate Certificates**				
Year	**Semster**	**Course code**	**Paper Title in multi study –Sanskrit**	**credits**
Bachelor of in Multidisciplinary Study-SANSKRIT				
Third Year	V	IAPC-1	जनपद में संस्कृतभाषा का प्रभाव : सर्वेक्षण	**4**
	VI	IAPC-2	पाण्डुलिपि विज्ञान	**4**

PG in the core subject-Sanskrit **Post Graduate**				
Year	**Semster**	**Course code**	**Paper Title in multi study –Sanskrit**	**Credits**
PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT				
Fourth Year	VII	Dissertaion on Major Or Dissertaion on Minor Or Academic Project/Entrepreneurship	संस्कृतनाट्य एवं चलचित्र **अथवा** लोकसंस्कृति में संस्कृत का प्रभाव **अथवा** संस्कृतसाहित्य में आचार मीमांसा	6
	VIII	Dissertaion on Major Or Dissertaion on Minor Or Academic Project/Entrepreneurship	अथर्ववेद एवं आयुर्वेद चिकित्सा **अथवा** संस्कृतसाहित्य में वर्णित समाज **अथवा** भारतीय शिक्षा व्यवस्था : प्रासंगिकता	6

Year	**Semster**	**Course code**	**Paper Title in multi study–Sanskrit**	**credits**
Master's in Core Subject- SANSKRIT				
Fifth Year	IX	Dissertaion on Major Or Dissertaion on Minor Or Academic Project/Entrepreneurship	वेदों में विज्ञान **अथवा** वेदों में राजनीति **अथवा** वेदों में लोककल्याण	6
	X	Dissertaion on Major Or Dissertaion on Minor Or Academic Project/Entrepreneurship	योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा **अथवा** भारतीय वास्तुशास्त्र की प्रासङ्गिकता **अथवा** भारतीय पुराभिलेख एवं लिपियाँ	6

Bachelor of in Multidisciplinary Study-SANSKRIT			
Programme: Bachelor *Course inSanskrit*		**Year: III**	**Semester:V** **Paper- III**
	Subject: Sanskrit		
Course Code: SAN-IAPC101	**Course Title: जनपद में संस्कृतभाषा का प्रभावः सर्वेक्षण**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी जनपद के संस्कृत साहित्यकारों से सुपरिचित हो सकेगे।
2. विद्यार्थी साहित्यकारों के साहित्य से नये कार्यों को करने के लिए प्रेरित होंगे।
3. विद्यार्थियों की रचनात्मक शैली की वृद्धि होगी।
4. विद्यार्थी संस्कृत साहित्य पठन–पाठन में रूचि लेगें।
5. विद्यार्थी दैनिक जीवन में संस्कृतभाषा के महत्त्व से सुपरिचित होगें।

Credits: 4 अल्पकालिक कार्य अनुभाव/औद्योगिक कार्य/परियोजना/सामुदायिक	**IAPC-1 Internship/Apprenticeship/Project/Community Outreach**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks: 09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	शोधसर्वेक्षण की भूमिका, उद्देश्य, महत्त्व एवं शोधप्रविधि की उपादेयता।	10
Unit II	जनपद के संस्कृत साहित्यकारों का सर्वेक्षण।	05
Unit III	जनपद के साहित्य का अध्ययन एवं रचनात्मक कार्य एवं संस्कृतभाषा की उपादेयता।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	25 05 Total- 30

Suggested Reading:

1–संस्कृतसाहित्य का इतिहास– पद्मविभूषण डॉ0 बलदेव उपाध्याय–शारदा मन्दिर, वाराणसी।
2–संस्कृतशास्त्रों का इतिहास– पद्मविभूषण डॉ0 बलदेव उपाध्याय,शारदा मन्दिर, वाराणसी।
3– भाषाविज्ञान– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4– प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका– रामजी उपाध्याय,वाराणसी।
5–लोकसाहित्य एवं संस्कृति– डॉ0 देवसिंह पोखरिया।
6–वैदिक साहित्य और संस्कृति– वाचस्पति गैरोला,चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान,दिल्ली। प्रथम सं0 1989।
7–प्राचीन भारतीयसंस्कृति के आधार– वीरेन्द्र सिंह, अक्षयवट प्रकाशन। इलाहाबाद। प्र0सं0 1986।
8–उत्तराखण्ड के संस्कृति साहित्यकार– अतीत से वर्तमान तक– प्रो0 शालिमा तबस्सुम,परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अन्य सभी विभाग एवं संकाय

Bachelor of in Multidisciplinary Study –SANSKRIT			
Programme: Bachelor of *in Arts- Sanskrit*		**Year: III**	**Semester:VI** **Paper- III**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-IAPC102	**Course Title: पाण्डुलिपि विज्ञान**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी प्राचीन लिपियों से अवगत होंगे।
2. पाण्डुलिपि विज्ञान के स्वरूप एवं पाण्डुलिपि लेखन के आधार तथा उपकरण से परिचित होंगे।
3. विद्यार्थी पाण्डुलिपि के ज्ञान से पाण्डुलिपियों को सुरक्षित एवं अन्य लिपियों में परिवर्तित करने में सक्षम होंगे।

Credits: 4 अल्पकालिक कार्य अनुभाव/औद्योगिक कार्य/परियोजना/सामुदायिक	**IAPC-2 Internship/Apprenticeship/Project/Community Outreach**
Max. Marks: 25 (Internel)+ 75 (External)=100	**Min. Passing Marks: 09+25= 34**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	पाण्डुलिपि विज्ञान– स्वरूप एवं क्षेत्र, लिपिविज्ञान एवं उसके सहायक शास्त्र, लिपि शब्द का अर्थ एवं उसका क्रमिक विकास लिपियों का स्वरूप, पाण्डुलिपि का अर्थ एवं क्रमिक विकास।	05
Unit II	पाण्डुलिपि–लेखन : आधार एवं उपकरण, पाण्डुलिपि लेखन के आधार, पाण्डुलिपि लेखन के उपकरण एवं प्रकार।	05
Unit III	पाण्डुलिपियों की सुरक्षा एवं लिप्यन्तरण– पाण्डुलिपियों के सुरक्षा के उपाय, प्रमुख पाण्डुलिपियों का परिचय, लिप्यन्तरण, संस्कृत वर्णमाला एवं लेखनचिह्न अन्ताराष्ट्रिय लेखन चिह्न।	10
Unit III	पाठालोचन– पाठालोचन के विविध सिद्धान्त, पाठदोष : प्रकार एवं कारण, वंशवृक्ष निर्माण।	05
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion etc	25 05 Total- 30

Suggested Reading:

1. भारतीय संस्कृति– प्रो0 किरण टण्डन, ईस्टन लिंक बुक, दिल्ली।
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास– पं0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश अकादमीय लखनऊ।
3. शोध प्रविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान :– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, डॉ0 (श्रीमती) राजेश कुमारी मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन इलाहाबाद।
4. पाण्डुलिपि विज्ञान :– डॉ0 रामगोपाल शर्मा दिनेश।
5. पाण्डुलिपि विज्ञान :– डॉ0 सत्येन्द्र।
6. प्राचीन कला एवं संस्कृति– डॉ0 राजकिशोर सिंह, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects: (अन्य सभी विभाग एवं संकाय)

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VII**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DMJ107	**Course Title: संस्कृतनाट्य एवं चलचित्र**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

नाट्य के सामान्य स्वरूप व प्रमुख सिद्धान्तों के अध्ययनोपरान्त नाट्यशास्त्र की शास्त्रीय समीक्षा का बोध होगा। इन सिद्धान्तों का विभिन्न भाषायी सिनेमा में अनुप्रयोग सम्बन्धी अध्ययन के द्वारा शास्त्रीय अभिनय कौशल और दक्षता का विकास होगा। इन मूल्यों के आधार पर आधुनिक फिल्में शंकराचार्य, मदर इण्डिया, गाँधी आदि की समीक्षा करने में सक्षम होंगे।

Credits: 6	**लघुशोध**	**Dissertation on Major**
Max. Marks: श्रेयांक– 6 (पूर्णांकः 100–50 अंक बाह्य परीक्षक द्वारा / 50 अंक आन्तरिक परीक्षक द्वारा)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0		

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	संस्कृत नाट्य–परिचय एवं महत्त्व।	10
Unit II	भारतीय संस्कृति में सिनेमा का परिचय एवं महत्त्व।	10
Unit III	संस्कृत चलचित्रों की समीक्षा एवं अध्ययन।	10
Unit IV	संस्कृत नाट्य एवं चलचित्रों की वर्तमान युग में उपादेयता।	10
Unit V	संस्कृत नाट्य एवं सिनेमा के क्षेत्र में पूर्व में किये गये कार्यों का परिचय एवं लेखन।	10
Unit VI	शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि के अनुसार शोधकार्य।	10
	Class Room Lectures	60
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion, Presentation etc	15
		Total- 75

Suggested Reading:

1. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास–नाट्यशास्त्र आचार्य बलदेव उपाध्याय, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
2. त्रिपाठी, राधावल्लभ, भारतीय नाट्य : स्वरूप एवं परम्परा, सागर, मध्य प्रदेश, संस्कृत परिषद् 1998।
3. द्विवेदी हजारीप्रसाद, नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा एवं दशरूपक, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1963।
4. झा, सीताराम, नाटक और रंगमंच, पटना, बिहार, राष्ट्रभाषा परिषद्, 1982।
5. भरतमुनि, नाट्यशास्त्रम् (1–4 भाग) संपादक बाबूराम शुक्ल शास्त्री, वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, 1984।
6. त्रिपाठी, राधावल्लभ, नाट्यशास्त्र विश्वकोश (1–4 भाग), दिल्ली, प्रतिभा प्रकाशन, 1999।
7. गर्ग, लक्ष्मीनारायण भारत के लोकनाट्य, हाथरस, हाथरस संगीत कार्यालय, 1961।
8. Gupta, C.B. Indian Theatre, Varanasi, 1954
9. Mehta Tarala, Sanskrit Play Production in Ancient India. Delhi, Motilal Banarasi Dass 1999
10. द संस्कृत ड्रामा–ए0बी0 कीथ,लन्दन ऑक्सफोर्ड वि0वि0 प्रेस,इलाई हाउस 1974।
11. संस्कृत नाट्य शिल्प और रंगमंच– रामचन्द्र सरोज, राका प्रकाशन इलाहाबाद।

12. कालिदास ग्रन्थावली–चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी।
13. रंगमंच एवं नाट्यकला आधुनिक प्ररिप्रेक्ष्य–यशस्वी इण्टर प्राइवेज,दिल्ली।
14. नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा और दशरूपक– हजारीप्रसाद द्विवेदी–पृथ्वीनाथ द्विवेदी–राजकमल प्रकाशन दिल्ली।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अन्य सभी विभाग एवं संकाय

अथवा

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VII**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DMJ107	**Course Title: लोकसंस्कृति में संस्कृत का प्रभाव**		
Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि 1. विद्यार्थी लोकसंस्कृति से परिचित होगें। 2. संस्कृतभाषा में निहित कलाओं से परिचित होगें। 3. शोध के क्षेत्र में निपुणता प्राप्त करेगें।			
Credits: 6	**लघुशोध**	**Dissertation on Minor**	
Max. Marks: श्रेयांक– 6 (पूर्णांकः 100–50 अंक बाह्य परीक्षक द्वारा / 50 अंक आन्तरिक परीक्षक द्वारा)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**	
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
Unit I	शोधकार्य की भूमिका, उद्देश्य एवं महत्त्व का अध्ययन।	10
Unit II	शोधसर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि की उपादेयता।	10
Unit III	लोकसंस्कृति का परिचय, क्षेत्र एवं विशेषताऐं।	10
Unit IV	संस्कृतभाषा का परिचय एवं महत्त्व	10
Unit V	लोकसंस्कृति में पूर्व में किये गये शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं संस्कृत के निहित तत्त्व।	10
Unit VI	लोकसंस्कृति में संस्कृतभाषा के प्रभाव का निष्कर्ष।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion, Presentation etc	60 15 Total- 75

Suggested Reading:

1. संस्कृतसाहित्य का इतिहास – पद्मविभूषण डॉ बलदेव उपाध्याय, उत्तरप्रदेश संस्कृतसंस्थान,लखनऊ।
2. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी
3. भारतीय संस्कृति का इतिहास– डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार
4. भारतीय संस्कृति के आधारतत्व– कृष्णकुमार
5. हमारी प्राचीन संस्कृति– डॉ0 सत्यप्रकाश शास्त्री
6. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका– रामजी उपाध्याय,वाराणसी।
7. कुमाऊँ के लोकसाहित्य– डॉ0 देवसिंह पोखरिया, डी0डी0तिवारी।
8. कुमाऊँ के संस्कार गीत (लोकगीत)– शकूनादे– सरोज उपाध्याय।

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects: (अन्य सभी विभाग एवं संकाय)

अथवा

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VII**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-AP/EN107	**Course Title: संस्कृतसाहित्य में आचार मीमांसा**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1–संस्कृतसाहित्य में निहित आचार सामग्री से परिचित होगें।
2–आचार के स्वरूप एवं उसके महत्त्व से सुपरिचित होगें।
3–विद्यार्थी आचारशिक्षा से अवगत होकर अपने व्यवहार में आचार का सम्यक्पालन करते हुए प्रत्येक काय्र को निष्ठापूर्वक करेगें।

Credits: 6 शैक्षणिक परियोजना /उद्यमशीलता	**Academic Project/ Entrepreneurship**
Max. Marks: श्रेयांक– 6 (पूर्णांकः 100–50 अंक बाह्य परीक्षक द्वारा/ 50 अंक आन्तरिक परीक्षक द्वारा)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	संस्कृतसाहित्य का परिचय एवं संस्कृतसाहित्य में आचार मीमांसा।	10
Unit II	भारतीयसंस्कृति की विशेषाताऐं।	10
Unit III	आचार का स्वरूप, व्युत्पत्ति, आचार की सामग्री एवं महत्त्व।।	10
Unit IV	आचार के तत्त्व– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, श्रद्धा, दान का परिचय एवं महत्त्व।	10
Unit V	समाज में सामञ्जस्य की भावना, प्रगतिशीलजीवन एवं पारिवारिक आचरण।	10
Unit VI	सामाजिक आचरण, व्यावहारिक आचरण एवं वर्तमान में आचार की प्रासंगिकता	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion, Presentation etc	60 15 Total- 75

Suggested Reading:

1–ऋग्वेद में आचार सामग्री–सत्यप्रिय शास्त्री,प्रकाशक श्रीधूडमल प्रहलाद कुमार आर्य,धर्मार्थ न्यास हिन्डौन सिटी राज0।
2–मनुस्मृति–कुल्लूक भट्ट टीका सहित,चौखम्बा संस्कृत सीरीज बनारस
3–याज्ञवल्क्यस्मृति–आनन्द आश्रम संस्कृत–ग्रन्थावली,पूना।
4– रामायण का आचारदर्शन–अम्बा प्रसाद श्रीवास्तव ,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
5– आर्षकाव्य रामायण–गीताप्रेस गाोरखपुर।
6– आर्षकाव्य महाभारत–गीताप्रेस गाोरखपुर।
7– वेद वर्णित सदाचार एवं उसकी युग व्यवहारिकता– सुनील कुमार शाह, संस्कृति प्रकाशन वाराणसी।
8– वेदामृतम्– आचार शिक्षा– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारतीय अनुसन्धान परिषद् ज्ञानपुर भदोही।
9– वैदिकवाङ्मय के अनुसन्धेय पक्ष– प्रो0 हरीश्वर दीक्षित,प्रकाशकविश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अन्य सभी विभाग एवं संकाय

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester:VIII**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DMJ102	**Course Title: अथर्ववेद एवं आयुर्वेद चिकित्सा**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. अथर्ववेदीय चिकित्सा से सुपरिचित होंगे।
2. अथर्ववेद में वर्णित औषधियों का ज्ञान प्राप्त होगे।
3. चिकित्सा एवं वनस्पतिशास्त्र के माध्यम से सह–अध्ययन संदृष्टि का विकास होगा।
4. आयुर्वेद साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त होगा।
5. आयुर्वेदीय अष्टांग चिकित्सा से सुपरिचित होंगे।

Credits: 6 लघुशोध बृहद	**Dissertation on Major**
Max. Marks: 25 (Internel) + 75 (External)= 100	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	अथर्ववेद का सामान्य परिचय एवं अथर्ववेद में चिकित्सा।	10
Unit II	अथर्ववेद में औषधिविज्ञान।	10
Unit III	आयुर्वेद का सामान्य परिचय एवं महत्त्व।	10
Unit IV	आयुर्वेद में अष्टांग चिकित्सा परिचय एवं उपयोगिता।	10
Unit V	अथर्ववेद एवं आयुर्वेद में पथ्यापथ्य विमर्श–एक अध्ययन।	10
Unit VI	औषधिविज्ञान एवं आयुर्वेद चिकित्सा में शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि के अनुसार शोधकार्य।	10
	Class Room Lectures	60
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion, Presentation etc	15
		Total- 75

Suggested Reading:

1. अथर्ववेद में चिकित्सा एवम् ओषधि–विज्ञान– डॉ0 शलिनी शुक्ला, अक्षयवट प्रकाशन, प्रयागराज।
2. अथर्ववेद का सुबोधभाष्य– श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल पारडी, गुजरात।
3. आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास– आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखम्बा ओरण्टलिया, वाराणसी।
4. आयुर्वेद का प्रारम्भिक इतिहास– प्रो0 वनवारी लाल गौड़, राम आयुर्वेद संस्कृत बुक प्रतिष्ठान, दिल्ली।
5. द्रव्यगुण विज्ञान– आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखम्बा सुरभारती अकादमी, वाराणसी।
6. वेदामृतम्– सुखी जीवन–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।
7. आयुर्वेद परिभाषा कोश– वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार।
8. वेदों में आयुर्वेद– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।
9. अथर्ववेद– विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान– होशियारपुर।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अन्य सभी विभाग एवं संकाय

अथवा

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VIII**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DMN102	**Course Title:संस्कृतसाहित्य में वर्णित समाज**		
Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि 1. संस्कृत साहित्य से परिचय प्राप्त होगा। 2. संस्कृत साहित्य की अनेक विशेषताओं से अवगत होंगें 3. संस्कृत साहित्य में वर्णित समाज के अध्ययन से विद्यार्थी सामाजिक गतिविधियों से एवं संस्कारों से परिचित होंगे।			
Credits: 6	**लघुशोध**	**Dissertation on Minor**	
Max. Marks: श्रेयांक– 6 (पूर्णांकः 100–50 अंक बाह्य परीक्षक द्वारा / 50 अंक आन्तरिक परीक्षक द्वारा)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**	
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	संस्कृतवाङ्मय का संक्षिप्त परिचय, उद्भव एवं विकास।	10
Unit II	संस्कृत साहित्य में वर्णित भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ।	10
Unit III	सामाजिक तत्त्वों का विश्लेषण एवं महत्त्व।	10
Unit IV	पारिवारिक एवं सामाजिक तत्त्वों का तुलनात्मक विश्लेषण।	10
Unit V	पर्यावरण के क्षेत्र में समाज का योगदान।	10
Unit VI	राष्ट्र के विकास में समाज का योगदान एवं पूर्व में किये गये शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि के अनुसार शोधकार्य।	10
	Class Room Lectures	60
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion, Presentation etc	15
		Total- 75

Suggested Reading:

1. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य संस्थान, इलाहाबाद।
2. भारतीय संस्कृति–प्रो0 किरण टण्डन, ईस्टर्न बुक लिंकर्स ,दिल्ली।
3. वेदामृतम् – सुखी समाज–पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।
4. कालिदास ग्रन्थावली–चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी ।
5. वेदकालीन समाज–डॉ0 शिवदत्त ज्ञानी,चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी।
6. श्रीमद्रामायण– महर्षिवाल्मीकि प्रणीत गीता प्रेस गोरखपुर।
7. श्रीमद्महाभारत–महर्षि वेद व्यास प्रणीत गीता प्रेस गोरखपुर प्रथम संस्करण।
8. वैदिक साहित्य और संस्कृति–पद्मविभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय– काशी शारदा मन्दिर।
9. वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षाशास्त्र–पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।

10. भारतीय समाज व्यवस्था–राम आहूजा रावत,पब्लिकेशन जयपुर, नयी दिल्ली।
11. भारतीय समाज का स्वरूप–डॉ0 सीताराम झा,बिहार हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी,पटना।
12. वैदिकवाङ्मय के अनुसन्धेय पक्ष– प्रो0 हरीश्वर दीक्षित,प्रकाशकविश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अन्य सभी विभाग एवं संकाय

अथवा

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***PG Diploma in the Core Subject- Sanskrit***		**Year: IV**	**Semester: VIII**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-AP/EN108	**Course Title: भारतीय शिक्षा व्यवस्था : प्रासंगिकता**		
Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि वैदिकवाङ्मय से लेकर लौकिकसाहित्य में भारतीयशिक्षा व्यवस्था के अनेक उदाहरण द्रष्टव्य है जिनके अवलोकन एवं अध्ययन से विद्यार्थी प्राचीन शिक्षा व्यवस्था से सुपरिचित होंगे। भारतीय शिक्षा व्यवस्था को वर्तमान की शिक्षा व्यवस्था से सामंजस्य करते हुए समाज का एवं देश का विकास करने में सक्षम होंगे। साथ ही हमारे भारतीय शिक्षा व्यवस्था रूपी धरोहर को अग्रेसित करने में सफल होंगे।			
Credits: 6	**शैक्षणिक परियोजना /उद्यमशीलता**		**Academic Project/ Entrepreneurship**
Max. Marks: श्रेयांक– 6 (पूर्णांकः 100–50 अंक बाह्य परीक्षक द्वारा/ 50 अंक आन्तरिक परीक्षक द्वारा)			**Min. Passing Marks: 10+30= 40**
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	भारतीय शिक्षाव्यवस्था की परम्परा एवं महत्त्व।	10
Unit II	वैदिक कालीन शिक्षाव्यवस्था।	10
Unit III	रामायण कालीन शिक्षाव्यवस्था।	10
Unit IV	महाभारत कालीन मध्यकालीन शिक्षाव्यवस्था।	10
Unit V	आधुनिक शिक्षाव्यवस्था ।	10
Unit VI	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षाव्यवस्था की प्रासंगिकता।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion, Presentation etc	60 15 Total- 75

Suggested Reading:

1. प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास– ए0एल0 बाशम– अद्भूत भारत सहाय स्वरूप– मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
2. हिन्दू संस्कार– राजबली पाण्डे– मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
3. संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास–पद्मविभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी लखनऊ।
4. कालिदास ग्रन्थावली– चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी ।
5. श्रीमद्रामायण– महर्षि वाल्मीकिकृत– गीता प्रेस, गोरखपुर।
6. श्रीमद्महाभारत– महर्षि वेदव्यासकृत– गीता प्रेस, गोरखपुर।
7. वैदिक शिक्षा पद्धति– डॉ0 भास्कर मिश्र, महर्षि सान्दीपनि वेदविद्याा प्रतिष्ठान, उज्जैन।
8. भारतीय संस्कृति– प्रो0 किरण टण्डन, ईस्टर्न बुक लिंकस,दिल्ली।
9. शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता– राजकीय रजा कालेज, रामपुर।

10. वैदिकवाङ्मय के अनुसन्धेय पक्ष– प्रो0 हरीश्वर दीक्षित, प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अन्य सभी विभाग एवं संकाय

MASTER 'S IN CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: Master In *Sanskrit*		**Year: IV**	**Semester:IX**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DMJ109	**Course Title: वेदों में विज्ञान**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. भारतीय ज्ञान परम्परा में वेद का प्रमुख स्थान है जिसके अन्तर्गत विज्ञान का महनीय योगदान है इसके अध्ययन से विद्यार्थी प्राचीन विज्ञान के स्त्रोत से अवगत होंगे।
2. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विज्ञान के समस्त तत्त्वों का अन्वेषण करने हेतु वेद के अध्ययन की आवश्यकता है जिसकी पूर्ति वेदों में विज्ञान से सम्भव है।
3. विद्यार्थी में विज्ञान के अध्ययन से विभिन्न क्षेत्रों में शोधकार्य करने में सक्षम होंगे।

Credits: 6	**लघुशोध**	**Dissertation on Major**
Max. Marks: श्रेयांक– 6 (पूर्णांकः 100–50 अंक बाह्य परीक्षक द्वारा/ 50 अंक आन्तरिक परीक्षक द्वारा)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	शोधप्रविधि का अध्ययन एवं अनुशीलन।	10
Unit II	वैदिक साहित्य का संक्षिप्त परिचय।	10
Unit III	वेदों में वर्णित विज्ञान का अन्वेषण कार्य।	10
Unit IV	वनस्पति विज्ञान, एवं जीव–जन्तु विज्ञान का अन्वेषण।	10
Unit V	कृषि विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, शिल्प विज्ञान का अन्वेषण।	10
Unit VI	शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि के अनुसार शोधकार्य। निष्कर्ष।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion, Presentation etc	60 15 Total- 75

Suggested Reading:

1. संस्कृतवाङ्मय का बृहत इतिहास– पं0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
2. संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास– वेद खण्ड–उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी लखनऊ।
3. संस्कृतसाहित्य का इतिहास– पं0 बलदेव उपाध्याय, सारदा मन्दिर, वाराणसी।
4. वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ0 कर्णसिंह, चौखम्बा सूरभारती, वाराणसी।
5. वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान– प्रो0 ओमप्रकाश पाण्डेय, नाग प्रकाशन, दिल्ली।
6. वेदों में विज्ञान– पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, विश्वभारतीय भदोई, ज्ञानपुर उत्तर प्रदेश।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: Master In *Sanskrit*		**Year: IV**	**Semester: IX**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DMN109	**Course Title: वेदों में राजनीति**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी शोधकार्य के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा से अवगत होंगे।
2. वेदों में वर्णित राजनीति के अध्ययन से राज्य की व्यवस्था राज्य की सुरक्षा एवं राजा के कर्त्तव्यों से अवगत हो कर राष्ट्र की उन्नति में सहयोग करेगें।

Credits: 6 लघुशोध	**Dissertation on Minor**
Max. Marks: 25 (Internel) + 75 (External)= 100	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	शोधकार्य की भूमिका, उद्देश्य एवं महत्त्व का अध्ययन।	10
Unit II	वेदों का संक्षिप्त परिचय।	10
Unit III	वेदों में राजनीतिशास्त्र का उद्भव एवं विकास।	10
Unit IV	वेदों में वर्णित राज्य उत्पत्ति विषयक सिद्धान्त, राज्य का स्वरूप, उद्देश्य और कार्य।	10
Unit V	राज्य के विभिन्न तत्त्व एवं विभिन्न अंग।	10
Unit VI	राजा निर्वाचन, राजा के विभिन्न कर्त्तव्य, अर्थव्यवस्था विविध शस्त्रास्त्र एवं निष्कर्ष।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion, Presentation etc	60 15 Total- 75

Suggested Reading:

1. संस्कृतवाङ्मय का बृहत इतिहास– पं0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
2. संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास– वेद खण्ड–उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी लखनऊ।
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास– पं0 बलदेव उपाध्याय, सारदा मन्दिर, वाराणसी ।
4. वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ0 कर्णसिंह, चौखम्बा सूरभारती, वाराणसी।
5. वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान– प्रो0 ओमप्रकाश पाण्डेय, नाग प्रकाशन, दिल्ली।
6. वेदों में राजनीति– पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, विश्वभारतीय ज्ञानपुरभदोई, उत्तर प्रदेश।

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: Master In *Sanskrit*		**Year: IV**	**Semester:IX**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-AP/EN109	**Course Title: वेदों में लोककल्याण**		
Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि 1. विद्यार्थी ज्ञान की धरोहर वेद से परिचित होंगे। 2. विद्यार्थी वेदों के अध्ययन से वेद में निहित लोककल्याण के तत्त्वों से परिचित होंगे। 3. विद्यार्थी लोककल्याण से अवगत होकर राष्ट्र की उन्नति में सहयोग करेंगे।			
Credits: 6	**शैक्षणिक परियोजना /उद्यमशीलता**	**Academic Project/ Entrepreneurship**	
Max. Marks: श्रेयांक– 6 (पूर्णांकः 100–50 अंक बाह्य परीक्षक द्वारा/ 50 अंक आन्तरिक परीक्षक द्वारा)		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**	
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0			
Unit	**Topic**		**No. of Lectures**
Unit I	शोधकार्य की भूमिका, उद्देश्य एवं महत्त्व का अध्ययन।		10
Unit II	वेदों का प्रतिपाद्य एवं महत्त्व।		10
Unit III	वेद में लोककल्याण के प्रकार–विश्वकल्याण, राष्ट्रकल्याण एवं जनकल्याण		10
Unit IV	प्राचीन भारतीयसंस्कृति, विश्वकल्याण और पुरुषार्थ, विश्वबन्धुत्व, पृथिवी के धारक तत्त्व, पर्यावरण में विश्वकल्याण		10
Unit V	वेदों में राष्ट्रीय प्रार्थना, वेदों में राष्ट्रस्वरूप और कर्तव्य, राजा का निर्वाचन और कर्तव्य, पर्यावरण और राष्ट्रकल्याण		10
Unit VI	वेदों में जनकल्याण और दार्शनिक चिन्तन, जनकल्याण और पुरुषार्थ, दुर्गुणों का परित्याग, मन की पवित्रता, नारी सम्मान से उन्नति, स्वस्थजीवन, जनकल्याण और यज्ञ, जनकल्याण और पर्यावरण तथा निष्कर्ष।		10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion, Presentation etc		60 15 Total- 75

Suggested Reading:

1. संस्कृतवाङ्मय का बृहत इतिहास– पं0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
2. संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास– वेद खण्ड–उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी लखनऊ।
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास– पं0 बलदेव उपाध्याय, सारदा मन्दिर, वाराणसी ।
4. वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ0 कर्णसिंह, चौखम्बा सूरभारती, वाराणसी।
5. वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान– प्रो0 ओमप्रकाश पाण्डेय, नाग प्रकाशन, दिल्ली।
6 वैदिकवाङ्मय के अनुसन्धेय पक्ष– प्रो0 हरीश्वर दीक्षित, प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।
7. वेदों में लोककल्याण– पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, विश्वभारतीय ज्ञानपुर भदोई, उत्तर प्रदेश।

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme: ***Master In Sanskrit***	**Year: V**	**Semester: X Paper-II**
Subject: Sanskrit		
CourseCode: SAN-DMJ110	**Course Title:योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत योग विद्या से अवगत होंगे।
2. विद्यार्थी योग के अध्ययन से अपने जीवन में प्रतिदिन योग का प्रयोग करेगें जिससे स्वास्थ्य लाभ होगा।
3. योग विद्या के माध्यम से प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी होगीजिससे सामान्य रोगों का उपचार कर सकेंगे।
4. योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा से विद्यार्थी पर्यावरण से सुपरिचित हो सकेंगे।

Credits: 6 लघुशोध	**Dissertation on Major**
Max. Marks: श्रेयांक– 6 (पूर्णांकः 100–50 अंक बाह्य परीक्षक द्वारा / 50 अंक आन्तरिक परीक्षक द्वारा)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	योग का अर्थ, परिभाषा, योग का ऐतिहासिक अध्ययन एवं महत्त्व।	10
Unit II	विभिन्न शास्त्रों में योग का स्वरूप–वेद, उपनिषद, श्रीमद्भगवद्गीता, योग–वाशिष्ठ, जैनमत, बौद्धमत, वेदान्त एवं आयुर्वेद।	10
Unit III	विभिन्न योगियों का परिचय– महर्षि पतञ्जलि, गोरक्षनाथ, महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, महर्षि रमण, स्वामी कुवलयानन्द।	10
Unit IV	प्राकृतिक चिकित्सा– अर्थ, परिभाषा एवं अवधारणा, प्राकृतिक चिकित्सा का संक्षिप्त इतिहास, प्राकृतिक चिकित्सा अनुसार स्वास्थ्य एवं व्याधि की अवधारणा।	10
Unit V	प्राकृतिक चिकित्सा के मूलसिद्धान्त एवं वायु चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा, जल चिकित्सा, मिट्टी चिकित्सा का अध्ययन।	10
Unit VI	प्रायोगिक–योग अभ्यास, प्रायोगिक–प्राकृतिक चिकित्सा एवं शोधप्रविधि के अनुसार शोधकार्य।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion, Presentation etc	60 15 Total- 75

Suggested Reading:

1. प्राकृतिक उपचार की विधियाँ– डॉ0 राजीव रस्तोगी।
2. प्राकृतिक आयुर्विज्ञान– डॉ0 राकेश जिन्दल।
3. योग एवं यौगिक चिकित्सा– प्रो0 राम हर्ष सिंह।
4. पतञ्जलि योग प्रदीप– स्वामी ओमानन्द, गीता प्रेस गोरखपुर।

6. वेदों में योग विद्या– स्वामी दिव्यानन्द, गीता प्रेस गोरखपुर।
8. जल चिकित्सा– डॉ0 नागेन्द्र नीरज।
9. आहार और स्वास्थ्य– डॉ0 हीरा लाल।

10.आसन एवं योग विज्ञान– श्रीदेसराज, भारतीय योग संस्थान दिल्ली।
11.योग से रोगनिवारण– स्वामी शिवानन्द सरस्वती, कलकत्ता
12.दीर्घायु के रहस्य– डौ विनय मोहन शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme: ***Master In Sanskrit***		**Year: V**	**Semester:X**
Subject: Sanskrit			
CourseCode: SAN-DMN110	**Course Title: भारतीय वास्तुशास्त्र की प्रासङ्गिकता**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी भारतीयज्ञानपरम्परा की निधि वास्तुशास्त्र से परिचित होगें।
2. वास्तुशास्त्र प्राचीन भारतीयविज्ञान है जिसे वर्तमान में आर्किटेक्चर कहा जाता है, इसके ज्ञान से समयानुकूल गृहनिर्माण आदि कार्य किये जा सकेगें।
3. विद्यार्थियों को रोजगार के क्षेत्र में अवसर प्राप्त होगें।

Credits: 6	लघुशोध	**Dissertation on Minor**
Max. Marks: 25 (Internel) + 75 (External)= 100		**Min. Passing Marks: 10+30= 40**
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0		

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	भारतीय वास्तुशास्त्र का परिचय, वास्तुशास्त्र का उद्भव,विकास एवं महत्त्व।	10
Unit II	वास्तुशास्त्र के प्रमुख आचार्य और ग्रन्थ।	10
Unit III	वास्तुशास्त्र में पंच महाभूतों का स्वरूप।	10
Unit IV	वास्तुशास्त्र में दिक्साधनविचार, भूमि चयन एवं प्रकार।	10
Unit V	वास्तुपुरुष का स्वरूप, गृहनिर्माण का प्रकार एवं महत्त्व।	10
Unit VI	शिलान्यास की विधि, वास्तुपूजन की विधि एवं महत्त्व तथा वास्तुशास्त्र की प्रासंगिकता।	10
	Class Room Lectures	60
	Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion, Presentation etc	15
		Total- 75

Suggested Reading:

1. संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास–प्रथम खण्ड पं0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
2. गृह वास्तु प्रदीप– व्याख्याकर्त्री–श्रीमती शैलजा पाण्डेय,शरण बंसल,बी0जैन पब्लिशर्स।
3. बृहद्वास्तुमाला प्रयोग– हरिशंकर पाठक,भारतीय विद्यासंस्थान वाराण।
4. भारतीय कला और संस्कृति– गोविन्द चन्द्र पाण्डेय,राका प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. भारतीय वास्तुकला– पं0 जगदीश प्रसाद शर्मा,विद्याभवन,चौडा रास्ता,जयपुर।
6. वास्तु विज्ञानम्– आचार्य उमेश शास्त्री,ब्यास बालबक्ष न्यास,शोधसंस्थन,जयपुर।
7. वास्तुराजसौख्यम्–पीयूषधारा एवं पीताम्बरी व्याख्या,मोतीराम बनारसीदास, पटना।
8. वास्तुविद्या–विश्वकर्मा कृत के महादेव शास्त्री कृत व्याख्या अनन्त शयन ग्रन्थावली त्रिवेन्द्रम्।
9. सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र– डॉ0 भोजराज द्विवेदी,चौखम्बा संस्कृत साहित्य संस्थान दिल्ली।

10. गृह वास्तु': एक समीक्षण– डॉ0 सुधीर कुमार, निदेशक,हरियाणा संस्कृत अकादमी,पंचकुला,सभ्या प्रकाशन,दिल्ली।
11. वास्तुपूजापद्धतिप्रकाशः–संकलनकर्ता श्रीस्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती, श्री सत्यं साधना कुटीर समिति, ऋषिकेश।
12 भारतीय वास्तुशास्त्र का इतिहास– डॉ0 विद्याधर, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।

Suggested Online Link:
Suggested equivalent online courses:
This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

अथवा

MASTER 'S INCORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme: ***Master In Sanskrit***	**Year: V**	**Semester: X**
Subject: Sanskrit		
CourseCode: SAN-AP/EN110	**Course Title:भारतीय पुराभिलेख एवं लिपियाँ**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अवबोध होगा।
2. प्राचीन लिपियों का ज्ञान होगा।
3. सांस्कृतिक विरासत की जानकारी प्राप्त हो सकेंगी।
4. प्राचीन ज्ञानपरम्परा का मूल्यांकन करने में सक्षम होगें।

Credits: 6 शैक्षणिक परियोजना /उद्यमशीलता	**Academic Project/ Entrepreneurship**
Max. Marks: श्रेयांक– 6 (पूर्णांकः 100–50 अंक बाह्य परीक्षक द्वारा/ 50 अंक आन्तरिक परीक्षक द्वारा)	**Min. Passing Marks: 10+30= 40**

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	Topic	No. of Lectures
Unit I	पुरालिपि, भारतवर्ष में लेखन कला की प्राचीनता।	10
Unit II	अभिलेख, अशोक का प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ अभिलेख का परिचय।	10
Unit III	अशोक का पंचम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम अभिलेख का परिचय।	10
Unit IV	अशोक के नवम, दशम, एकादश एवं द्वादश अभिलेख का परिचय।	10
Unit V	स्तम्भ लेख, अशोक के सात स्तम्भ लेखों का विवरण।	10
Unit VI	समुद्र गुप्त का प्रयाग स्तम्भ लेख, खारवेल का हाथीगुफा अभिलेख एवं चन्द्रगुप्त द्वितीय के मथुरा शिलालेखों का परिचय एवं लिपियाँ।	10
	Class Room Lectures Tutorial, Assignment, Class Room Seminars, Group Discussion, Presentation etc	60 15 Total- 75

Suggested Reading:

1. प्राचीन भारतीय लिपि एवं अभिलेख– डॉ0 गोपाल यादव।
2. पुराभिलेखों में इतिहास परम्परा एवं संस्कृति– प्रभा प्रकाशन।
3. भारतीय लिपियों की कहानी– गुणाकर मूमे, राजकमल प्रकाशन।
4. भारतीय पुरालिपिशास्त्र– मंगलनाथ सिंह, मोतीलाल बनारसी दास।
5. भारतीय प्राचीन लिपिमाला– रायबहादुर पण्डित गौरी शंकर हीराचन्द्र ओझा।

6 भारतीय स्वर्णयुग के संस्कृत अभिलेख एवं अमरकोश के अभिधान परमानन्द मिश्रा, ईस्टर्न बुक लिंकर्स,दिल्ली।

Suggested Online Link:

Suggested equivalent online courses:

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

Value Addition Course

(VAC)

DEPARTMENT OF SANSKRIT

VALUE ADDITION COURSE (VAC)

Department of Sanskrit
Kumaun University, Nainital

VALUE ADDITION COURSE (VAC) PREPARED FOR THE POOL OF COURSE

Course code	Paper Title in multi study –Sanskrit	Theory/ Practial/Practice	credits
VAC-1	पंचतन्त्र में वर्णित नीतिपरक शिक्षाएँ	Theory	2
VAC-2	संस्कृतवाङ्मय में पर्यावरण चिन्तन	Theory/ Practial	2

Department of Sanskrit

VALUE ADDITION COURSE (VAC) Sanskrit
No. of Hours-30

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
VAC- पंचतन्त्र में वर्णित नीतिपरक शिक्षाएँ	2	2	0	0	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1. विद्यार्थी को पंचतन्त्र के कथाओं से परिचित कराना।
2. विद्यार्थी को पंचतन्त्र की कथाओं से नीतिशिक्षा प्राप्त कराना।
3. विद्यार्थी को पंचतन्त्र में मानवेतर प्राणियों की कथा से उनकी भावनाओ से परिचित कराना।
4. पंचतन्त्र के अध्ययन से मानव जीवन की अनेक समस्यों का समाधान कराना।

अध्ययन की उपलब्धि

1. विद्यार्थी पंचतन्त्र के कथाओं से परिचित होगें।
2. विद्यार्थी पंचतन्त्र की कथाओं से नीतिशिक्षा प्राप्त करेगें।
3. विद्यार्थी पंचतन्त्र में मानवेतर प्राणियों की कथा से उनकी भावनाओं से परिचित होगें।
4. पंचतन्त्र के अध्ययन से मानव जीवन की अनेक समस्यों का समाधान करेगें।

Unit	Topic-
Unit I	कथासाहित्य की परम्परा, आचार्य विष्णु शर्मा का परिचय एवं पंचतन्त्र के पॉच तन्त्रों का परिचय।
Unit II	पंचतन्त्रमृ में वर्णित नीतिपरक शिक्षाएँ– मित्र सम्प्राप्ति से दो कथाएँ– साधु और चूहा एवं ब्राह्मणी और तिल के बीज।

Suggested Reading:

1. पंचतंत्र– आचार्य श्री विष्णु शर्मा, युवराज प्रकाशन, आगरा।
2. पंचतंत्र संस्करण– तन्त्राख्यायिका, नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर दिल्ली।
3. पंचतंत्र संस्करण– सरल पंचतंत्र, युवराज प्रकाशन, आगरा।
4. पंचतंत्र संस्करण– दक्षिणी पंचतंत्र, नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर दिल्ली।
5. पंचतंत्र संस्करण– हितोपदेश, युवराज प्रकाशन, आगरा।
6. गुणाढय की बृहत्कथा पर आश्रित– क्षेमेन्द्र कृत बृहत्कथा मंजरी।
7. वाल्मीकि रामायण में नीतितत्त्व– योगीन्द्र गुप्ता,अनुराधा प्रकाशन, मेरठ।
8. वेदामृतम् नीतिशिक्षा– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।

Note :

Examination: Subject to University' directions.

Department of Sanskrit

VALUE ADDITION COURSE (VAC) Sanskrit
No. of Hours-30

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
VAC- संस्कृतवाङ्मय में पर्यावरण चिन्तन	2	1	0	1	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1. विद्यार्थी स्वयं को प्रकृति का एक हिस्सा बनाना तथा पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार करना।
2. पर्यावरण संरक्षण की प्राचीन भारतीय परम्परा का ज्ञान प्राप्त करना।
3. प्राकृतिक संसाधनों के महत्त्व को समझकर उसके संरक्षण की दिशा में प्रयास करना।

अध्ययन की उपलब्धि

1. विद्यार्थी स्वयं को प्रकृति का एक हिस्सा मानेंगे तथा पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार करने के महत्त्व को समझेंगे।
2. पर्यावरण संरक्षण की प्राचीन भारतीय परम्परा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. प्राकृतिक संसाधनों के महत्त्व को समझकर उसके संरक्षण की दिशा में प्रयास करने की प्रेरणा मिलेगी।

Unit	Topic
Unit I	पर्यावरण विज्ञान : परिभाषा, क्षेत्र एवं वर्तमानकालिक चुनौतियाँ– आधुनिक काल में पर्यावरण हेतु चुनौतियाँ एवं संकट : भूमण्डलीय ऊष्मीकरण, जलवायु परिवर्तन, ओजोन क्षरण, पर्यावरण प्रदूषण में विस्फोटक वृद्धि, भूगर्भीय जलस्तर की न्यूनता, नदियों का प्रदूषण, व्यापक निर्वनीकरण, प्राकृतिक आपदाएँ यथा : बाढ़, सूखा एवं भूकम्प। संस्कृत साहित्य में प्रकृति के संरक्षण, वृक्षारोपण, उनका संरक्षण एवं जल संरक्षण विधियों का संक्षेप में सर्वेक्षण।
Unit II	संस्कृत साहित्य में पर्यावरण संरक्षण विषयक प्रमुख विचार– ऋग्वेद के नदी सूक्त में नदियों के संरक्षण की कामना। यजुर्वेद में पंचतत्त्वों की शान्ति तथा पर्यावरण की अनुकूलता विषयक विचार। अथर्ववेद में पर्यावरण के लिए प्रयुक्त शब्द : वृतावृता, अभिवारा, परिवृता। पर्यावरण से आच्छादित ब्रह्माण्ड के पाँच मूल तत्त्व : पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश। अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त में पृथिवी संबंधी विचार। अथर्ववेद के अरण्यानी सूक्त में वनस्पतियाँ के संरक्षण एवं संवर्धन की कामना। वृक्षायुर्वेद में वर्णित प्रकृति का शास्त्रीय विधि से उपयोग। यज्ञ के द्वारा प्राकृतिक चक्र का संतुलन।

Suggested Reading:

1. वेदों में विज्ञान, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर, भदोही।
2. अथर्ववेद संहिता– सायणभाष्य/विश्वबन्धुशास्त्री, वैदिक शोधसंस्थान होशियारपुर।
3. ऋग्वेद संहिता– सायणभाष्य/विश्वबन्धुशास्त्री, वैदिक शोधसंस्थान होशियारपुर।
4. यजुर्वेद संहिता– स्वामी दयानन्द,वैदिक मन्त्रालय अजमेर।
5. आर्य, कमलनारायण, वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण एवं प्रदूषण, स्वामी दिव्यानन्द प्रकाशन, रायपुर, मध्य प्रदेश, 1998
6. महर्षि वाल्मीकिकृत– श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण– गोरखपुर गीता प्रेस।
7. महर्षि व्यासकृत– महाभारत– सम्पादक मण्डल वी0एस0 सूकथङकर, एडगर्टन, रघुवीर आदि पुणे, भाण्डाकर प्राच्य विद्यामंदिर 1933–1959।
8. कालिदास ग्रन्थावली– आचार्य पं0 सीताराम शास्त्री, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।

Note :

Examination: Subject to University' directions.

----------**0**----------